अध्याय 1

भाग-1

राजा, किसान और नगर—आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ

(लगभग 600 ई.पू. से 600 ईसवी)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वंश की स्थापना की—
   (a) 320 ई.पू. (b) 321 ई.पू. (c) 322 ई.पू. (d) 323 ई. पू.।
2. सिक्कों का अध्ययन कहलाता है—
   (a) मुद्राशास्त्र (b) मुद्रण (c) मुद्राराक्षस (d) मुद्रित तथ्य।
3. मगध जनपद स्थित था—
   (a) आधुनिक उत्तर प्रदेश में (b) आधुनिक आंध्रप्रदेश में
   (c) आधुनिक बिहार में (d) आधुनिक मध्यप्रदेश में।
4. प्रभावती गुप्त पुत्री थी—
   (a) चंद्रगुप्त द्वितीय की (b) चंद्रगुप्त प्रथम की (c) चंद्रगुप्त मौर्य की (d) समुद्रगुप्त की।
5. मौर्य साम्राज्य की राजधानी थी—
   (a) पाटलिपुत्र (b) सुवर्णगिरी (c) तक्षशिला (d) उज्जयिनी।
6. जेम्स प्रिंसेप ने अशोककालीन ब्राह्मी लिपि का अर्थ निकाला—
   (a) 1838 ई. (b) 1848 ई. (c) 1858 ई. (d) 1828 ई.।
7. प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख) के लेखक थे—
   (a) कालीदास (b) हरिषेण (c) मेगस्थनीज (d) कौटिल्य।

उत्तर— 1. (b), 2. (a), 3. (c), 4. (a), 5. (a), 6. (a), 7. (b).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. मौर्यकाल में कर वसूली और संग्रह करने वाले अधिकारी को ..... कहा जाता था।
2. कौटिल्य ने राजनीतिशास्त्र पर आधारित ..... नामक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा।
3. ..... चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत था।
4. भारत की दशा का आँखों देखा-हाल मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक ..... में लिखा।
5. मौर्य काल में ..... कर निर्धारण का सर्वोच्च अधिकारी होता था।
6. अशोक के सिंह शीर्ष को ..... सरकार ने ..... चिन्ह के रूप में अपनाया।

उत्तर—1. सन्निधाता, 2. अर्थशास्त्र, 3. मेगस्थनीज, 4. इंडिका, 5. समहर्ता, 6. भारत, राज्य।

प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़िए—

(अ)	(ब)
1. प्रयाग प्रशस्ति	(a) अशोक 3
2. हर्षचरित	(b) हरिषेण 1
3. पियदस्सी	(c) चंद्रगुप्त मौर्य 4
4. अर्थशास्त्र	(d) कुषाण 6
5. इंडिका	(e) कौटिल्य 7
6. देवपुत्र	(f) मेगस्थनीज 5
7. मौर्य वंश	(g) बाणभट्ट। 2

उत्तर—1. (b), 2. (g), 3. (a), 4. (e), 5. (f), 6. (d), 7. (c).

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए—

1. सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने अशोक के अभिलेखों का अध्ययन किया।
2. छठी शताब्दी में भारत 18 महाजनपदों में बँटा हुआ था।
3. चंद्रगुप्त मौर्य ने 321 ई. पू. में मौर्य वंश की स्थापना की।
4. प्रयाग प्रशस्ति की रचना बाणभट्ट ने की थी।
5. मेगस्थनीज मौर्य शासक अशोक के शासनकाल में भारत आया।
6. अशोक के पश्चिमोत्तर से मिले अभिलेख अरामेइक और यूनानी भाषा में हैं।

उत्तर—1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. असत्य, 5. असत्य, 6. सत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वंश की स्थापना किस सन् में की थी ?
2. सिक्कों का अध्ययन क्या कहलाता है ?
3. मौर्य साम्राज्य की राजधानी कहाँ थी ?
4. प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख) के लेखक कौन थे ?
5. मौर्यकाल में कर वसूली और संग्रह करने वाले अधिकारी को क्या कहा जाता था ?
6. कौन चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत था ?
7. भारत की दशा का आँखों देखा हाल मेगस्थनीज ने अपनी किस पुस्तक में लिखा ?
8. मौर्य वंश का संस्थापक कौन था ?
9. सबसे पहले के अभिलेख किस भाषा में लिखे गए थे ?
10. चंद्रगुप्त मौर्य का गुरु तथा उनका प्रधानमंत्री कौन था ?
11. प्राकृत और पालि भाषा में किस शासक के अभिलेख लिये गये थे ?
12. सर्वाधिक विख्यात कुषाण शासक कौन था ?
13. गुप्त काल में प्रांत को क्या कहा जाता था ?
14. मौर्यकाल में चाँदी के सिक्के को क्या कहा जाता था ?
15. मौर्यकाल में कर निर्धारण का सर्वोच्च अधिकारी कौन होता था ?

उत्तर—1. 321 ई.पू., 2. मुद्राशास्त्र, 3. पाटलिपुत्र, 4. हरिषेण, 5. सन्निधाता, 6. मेगस्थनीज, 7. इंडिका, 8. चंद्रगुप्त मौर्य, 9. प्राकृत, 10. कौटिल्य, 11. अशोक, 12. कनिष्क, 13. भुक्ति, 14. पण, 15. समहर्ता।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मुद्राशास्त्र से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—मुद्राशास्त्र से अभिप्राय सिक्कों के अध्ययन से है। इसमें सिक्कों पर मिलने वाले चित्रों, सिक्कों की धातु तथा लिपि का अध्ययन शामिल है।

प्रश्न 2. 'अभिलेख' से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—अभिलेख उन लेखों को कहा जाता है जो स्तंभों, ताम्रपत्रों, चट्टानों, पत्थरों तथा गुफाओं की चौड़ी पट्टियों पर खुद तत्कालीन शासकों के शासन का सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा आर्थिक चित्र खींचते हैं।

प्रश्न 3. 'मेगस्थनीज' कौन था ?

उत्तर—मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत था। वह पाँच वर्ष (302 ई.पू. से 298 ई.पू.) तक चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहा और भारत की दशा का आँखों देखा हाल अपनी पुस्तक 'इंडिका' में लिखा। यह पुस्तक अब नष्ट हो चुकी है, लेकिन उसके प्राप्य अंशों के आधार पर चंद्रगुप्त के शासनकाल की पर्याप्त जानकारी हमें मिलती है।

प्रश्न 4. जेम्स प्रिंसेप कौन था ? उसने कौन-सी दो प्राचीन लिपियों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की ?

उत्तर—ईस्ट इंडिया के अधिकारी जेम्स प्रिंसेप ने सम्राट अशोक के अभिलेखों पर लिखी ब्राह्मी लिपि का अर्थ निकाला तथा ब्राह्मी लिपि को पढ़ने में सहायता की। इस प्रकार मौर्यकालीन इतिहास की एक नई तस्वीर सामने आई। निःसंदेह अभिलेख-विज्ञान की प्रगति में उनका महत्वपूर्ण योगदान था।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5. चन्द्रगुप्त मौर्य कौन था ? उसका राज्य कहाँ तक फैला था ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त मौर्य, मौर्य वंश का संस्थापक था। उसने 321 ई.पू. में मौर्य वंश की स्थापना की थी। उसका राज्य पश्चिमोत्तर में अफगानिस्तान और बलूचिस्तान तक फैला हुआ था।

प्रश्न 6. महाजनपद क्या थे ? कुछ महत्वपूर्ण महाजनपदों के नाम बताइए।

उत्तर—छठीं शताब्दी ई.पू. में उत्तरी भारत में कुछ बड़े-बड़े राज्य स्थापित हो गए थे। इन्हें महाजनपद कहा जाता था। इनकी संख्या 16 थी। इनमें महत्वपूर्ण महाजनपदों के नाम निम्नलिखित थे—

(1) कुरु, (2) पांचाल, (3) मगध, (4) अवंति, (5) कोशल, (6) वज्जि, (7) गाँधार आदि।

प्रश्न 7. 'मनुस्मृति' क्या है ? इसमें राजा को क्या सलाह दी गई है ?

उत्तर—मनुस्मृति आधुनिक भारत का सबसे प्रमुख विधिग्रंथ है। यह संस्कृत भाषा में है। जिसकी रचना 200 ई. पू. से 200 ई. के बीच हुई थी। इसमें राजा को सलाह दी गई कि भूमि-विवादों से बचने के लिए सीमाओं का गुप्त पहचान बनाकर रखनी चाहिए। इसके लिए सीमाओं पर भूमि में ऐसी वस्तु दबाकर रखनी चाहिए जो समय के साथ नष्ट हो।

प्रश्न 8. प्रभावती गुप्त कौन थी ? उसके संबंध में कौन-सा उदाहरण मिलता है ?

उत्तर—प्रभावती गुप्त आरंभिक भारत के एक प्रसिद्ध शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय (375-415 ई.) की पुत्री थी। उनका विवाह दक्कन पठार के वाकाटक परिवार में हुआ था। उन्होंने भूमि दान में दिया था जो किसी महिला द्वारा दान का विरला उदाहरण है।

प्रश्न 9. मौर्यों के राजनैतिक इतिहास के प्रमुख स्रोत क्या-क्या हैं ?

उत्तर—मौर्यों के राजनैतिक इतिहास के प्रमुख स्रोत—(1) मेगस्थनीज की 'इंडिका', (2) जैन और बौद्ध साहित्य, (3) अशोक के शिलालेख, (4) कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र'।

प्रश्न 10. मौर्योत्तर युग में भारत से कौन-कौन सी वस्तुओं का निर्यात होता था ?

उत्तर—मौर्योत्तर युग में भारत से मसाले रोम भेजे जाते थे। इसके अतिरिक्त रत्न, माणिक्य, मोती, हाथीदाँत व मलमल भी विदेश भेजे जाते थे। लोहे की वस्तुएँ, बर्तन आदि भी रोम साम्राज्य को भेजे जाते थे।

प्रश्न 11. सुदर्शन झील का निर्माण कब और किसने कराया ? इसका जीर्णोद्धार किन-किन शासकों ने कराया ?

उत्तर—एक अभिलेख के अनुसार सुदर्शन झील का निर्माण मौर्यकाल में एक स्थानीय राज्यपाल ने कराया था। इसका जीर्णोद्धार एक शासक रुद्रदमन तथा गुप्त शासक ने कराया था।

प्रश्न 12. चन्द्रगुप्त मौर्य के अधीन सेना कितने भागों में विभक्त थी ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना का प्रबंध एक विशेष सेना विभाग के नियंत्रण में था, जिसमें 30 सदस्य होते थे। प्रशासन की सुविधा के लिए 30 सदस्यों की समिति भी पुनः 6 भागों में बँटी हुई थी—

(1) पैदल सेना, (2) घुड़सवार सेना, (3) सामुद्रिक बेड़ों पर तैनात सेना, (4) रथ सेना, (5) यातायात की व्यवस्था करने वाली सेना, (6) हथियारों का प्रबंध करने वाली सेना।

प्रश्न 13. धर्म प्रवर्तक से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—धर्म प्रवर्तक का अर्थ है—धर्म का प्रचार करने वाला अथवा धर्म फैलाने वाला। कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। इस धर्म के प्रचार के लिए उसने अपना सारा समय एवं तन-मन धन लगा दिया। इस प्रकार वह धर्म प्रवर्तक के रूप में जाना गया।

प्रश्न 14. कलिंग युद्ध के प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—अशोक ने कलिंग के राजा के साथ युद्ध किया था। इस युद्ध के निम्नलिखित प्रभाव सामने आए—

(1) इस युद्ध में अशोक विजयी रहा, लेकिन उसने अपार जनहानि देखी। इससे व्यथित होकर अशोक ने युद्ध लड़ना छोड़ दिया। (2) उसने भेरी घोष के स्थान पर 'धम्म घोष' की नीति अपनाई। (3) कलिंग का मगध राज्य में विलय हो गया।

प्रश्न 15. मौर्य साम्राज्य के चार प्रांतों तथा उनकी राजधानियों के नाम लिखिए।

उत्तर—मौर्य साम्राज्य के चार प्रांत तथा उनकी राजधानियों के नाम इस प्रकार हैं—

(1) उत्तरापथ की राजधानी तक्षशिला, (2) अवंति की राजधानी उज्जयिनी, (3) दक्षिणपथ की राजधानी सुवर्णगिरी, (4) प्राच्य की राजधानी पाटलीपुत्र।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न 16. भारत में बड़े पैमाने पर सोने का सिक्का चलाने वाले प्रथम शासक किस वंश के थे ?

उत्तर—भारत में बड़े पैमाने पर सोने का सिक्का चलाने वाले प्रथम शासक कुषाण वंश के थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. स्तंभ लेख क्या है ?

उत्तर—स्तंभ लेख साधारणतः आंतरिक प्रदेशों में पाए जाते हैं और ये धर्म प्रचार के प्रयोग में लाए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. दो तराई स्तंभ लेख—नेपाल की तराई में स्थित इन स्तंभ लेखों में अशोक के द्वारा बौद्ध के तीर्थ स्थानों की यात्राओं का वर्णन है।

2. सप्त स्तंभ लेख—यह सात स्तंभ लेख छः स्थानों पर पाए जाते हैं जिनमें से दो दिल्ली के निकट स्थित हैं। इनमें धर्म प्रचार के उपायों का वर्णन किया गया है।

3. चार लघु स्तंभ लेख—इनमें से दो साँची तथा सारनाथ की लाटों पर और दो प्रयाग में अंकित हैं। अनुमान यह है कि इन्हें बौद्ध धर्म में व्याप्त मतभेदों को दूर करने हेतु खुदवाया गया था।

प्रश्न 2. मौर्य शासकों ने किस प्रकार व्यापार तथा वाणिज्य को बढ़ावा दिया ?

उत्तर—मौर्य शासकों ने व्यापार एवं वाणिज्य को निम्न प्रकार से बढ़ावा दिया—

1. आंतरिक व्यापार—इस काल में भारत का आंतरिक एवं बाहरी व्यापार उन्नति पर था। आंतरिक व्यापार स्थल मार्ग, नहरों व नदियों द्वारा होता था। व्यापार को प्रोत्साहित करने राज्य द्वारा सड़कें बनवाई गई। सबसे लंबी सड़क 1,500 कोस की थी, जो पाटलिपुत्र से उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत की ओर जाती थी। इसका एक मार्ग हिमालय की ओर, एक और मार्ग पाटलिपुत्र से दक्षिण तथा दूसरा पूर्व की ओर जाता था। पाटलिपुत्र, प्रयाग, राजगृह, काशी, कन्नौज, तक्षशिला, मथुरा और कोशांबी आदि प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र इन प्रमुख राजमार्गों द्वारा मिले हुए थे। इन पर दिशा-सूचक चिन्ह लगे होते थे। बहुत से उपमार्ग छोटे-छोटे व्यापारिक स्थलों व नगरों तक जाते थे। सड़कों तथा व्यापारियों की सुरक्षा का प्रबंध राज्य की ओर से होता था।

2. विदेशी व्यापार—इस काल में विदेशी व्यापार जल और स्थल दोनों मार्गों से होता था। बंदरगाहों में जहाजों के आने-जाने की व्यवस्था थी। राजधानी में विदेशी व्यापारियों की सुरक्षा हेतु एक बोर्ड की स्थापना की गई थी। भारत के व्यापारिक संबंध चीन, श्रीलंका, बर्मा, मिस्र एवं एशिया के साथ थे। विदेशी व्यापारियों का समूह उत्तर-पश्चिम से स्थल मार्ग द्वारा भारत आता था। भारत चीन से रेशमी वस्त्र और ईरान से मोती मँगाता था। मिस्र के साथ भी भारत के घनिष्ठ व्यापारिक संबंध थे। विदेशों से भारत आने वाली प्रमुख वस्तुओं में सोना, चाँदी, शराब तथा विलासिता की वस्तुएँ शामिल थीं।

प्रश्न 3. अशोककालीन मौर्य के शासन प्रबंध पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—अशोक के उत्तराधिकार में विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ। अपने शासन के प्रारंभिक काल में उसने चंद्रगुप्त के सिद्धांतों का अनुकरण किया। उसके शासन-प्रबंध में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया तथा साम्राज्य की नीति का अनुसरण किया। शासन का स्वरूप स्वेच्छाचारी निरंकुश राजतंत्र बना रहा। केन्द्रीय, प्रांतीय व स्थानीय शासन भी पूर्ववत् चल रहे थे। परंतु कलिंग के युद्ध ने अशोक का हृदय परिवर्तन कर दिया और उसने अपने शासन के सिद्धांतों में परिवर्तन किया। उनके द्वारा परिवर्तित आदर्श सिद्धांत निम्नलिखित थे—

1. शासन व्यवस्था में परिवर्तन—अपने नवीन आदर्श को व्यवहार में लाने हेतु अशोक ने शासन-व्यवस्था में भी आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया। उन्होंने नए पदाधिकारियों की नियुक्ति की, जो 'धर्ममहामात्र' कहलाए। इनका कार्य जनहित के कार्यों को देखना था। बहुत से अधिकारी अपने कार्यों को करने के साथ ही साथ धर्म प्रचार भी करते थे।

2. न्याय व्यवस्था में परिवर्तन—अशोक द्वारा कठोर दंड-विधान को तिलांजलि दे दी गई। वह दण्ड भोगने वालों में मानवीयता की भावना भरने का प्रयास करने लगे। उसने राजुकों (न्यायाधीशों) को पुरस्कार व दंड देने की पूरी स्वतंत्रता दे दी थी।

3. जनहित चिंतन—अशोक ने जनता को अपनी संतान माना और संतान के समान ही अपनी प्रजा के सुख तथा स्मृति के लिए हमेशा प्रयत्न करने लगे।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. अशोक के धम्म के मूलभूत सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—अशोक के धम्म के मूलभूत सिद्धांत—अशोक के धम्म के मूलभूत सिद्धांत निम्नलिखित थे—

(1) संयम अथवा इंद्रियों पर नियंत्रण, (2) कृतज्ञता, (3) दया, (4) दान, (5) शौच अथवा पवित्रता, (6) आदर, (7) सत्य, (8) सेवा, (9) भावयुद्धि अथवा विचारों की पवित्रता, (10) दृढ़ इच्छा शक्ति, (11) सम्प्रति पत्ति अथवा सहायता करना।

प्रश्न 5. चोल राज्य पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—प्राचीन तमिल साहित्य से ज्ञात होता है कि ईसा पूर्व पहली शताब्दी से ईसा की पहली शताब्दी के अंत तक चोल राजाओं ने पाण्ड्य व चेर राज्यों पर विजय प्राप्त कर अपना साम्राज्य बढ़ा रहे थे। संगम साहित्य से ज्ञात होता है कि चोल राज्य के प्राचीन राजाओं में करिकाल सबसे प्रसिद्ध राजा थे। उसने चेर तथा पांड्य राज्यों को पराजित कर लंका पर आक्रमण किया, उसकी राजधानी उरैयूर थी। न्यायप्रियता के लिए वह अत्यधिक प्रसिद्ध था। करिकाल ने तंजौर से लगभग 15 मील दूर वेण्णि नामक स्थान पर एक युद्ध में ग्यारह शासकों को हराकर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। इस युद्ध ने करिकाल को महान् विजेता की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया।

करिकाल न केवल एक महान योद्धा था बल्कि कुशल शासक भी था। करिकाल ने अपने राज्य की आर्थिक उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया। उसने कृषि व उद्योगों के विकास की योजनाएँ बनाईं और उन्हें कार्यान्वित किया। उसने जंगलों को खेती योग्य भूमि में परिवर्तित किया व सिंचाई की विशेष योजनाएँ लागू कीं। इस दृष्टि से उसने नहरें बनवाई तथा तालाबों की संख्या बढ़ाई। उसके शासन में उद्योगों की भी बहुत उन्नति हुई। कृषि व औद्योगिक विकास के फलस्वरूप चोल राज्य एक समृद्धशाली राज्य बन गया और करिकाल के शासनकाल में जनता सुखी जीवन व्यतीत करने लगी। टालमी के भूगोल में चोल प्रदेश के नगरों व बंदरगाहों का वर्णन मिलता है।

प्रश्न 6. मौर्य शासकों द्वारा किए गए आर्थिक प्रयासों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—मौर्य शासकों द्वारा किए गए आर्थिक प्रयास निम्नलिखित हैं—

(1) कौटिल्य ने कृषकों, शिल्पियों और व्यापारियों से वसूल किए गए बहुत से करों का उल्लेख किया है। (2) संभवत: कर निर्धारण का कार्य सर्वोच्च अधिकारी द्वारा होता था। सन्निधता राजकीय कोषागार एवं भण्डार का संरक्षक होता था। (3) वास्तव में कर निर्धारण का विशाल संगठन पहली बार, मौर्यकाल में देखने को मिला। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में करों की यह सूची बहुत लंबी है। यदि वास्तव में सभी कर राजा के लिए जाते होंगे, तो प्रजा के पास अपने भरण-पोषण के लिए नाममात्र का ही धन बचता होगा। (4) ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय भंडार घर होते थे। इससे स्पष्ट होता है कि कर अनाज के रूप में वसूल किया जाता था। अकाल, सूखा या अन्य प्राकृतिक विपदा में इन्हीं अन्न-भण्डारों से स्थानीय लोगों को अन्न दिया जाता था। (5) मयूर, पर्वत और अर्द्धचंद्र के छाप वाली रजत मुद्राएँ मौर्य-साम्राज्य की मान्य मुद्राएँ थीं। ये मुद्राएँ कर वसूली एवं कर्मचारियों के वेतन के भुगतान में सुविधाजनक रही होगी। बाजार में लेन-देन भी इन्हीं से होता था।

प्रश्न 7. उत्तर मौर्य काल में शिल्पकला, व्यापार और नगरों के विकास के विषय में व्याख्या कीजिए। इसके विकास के क्या कारण थे ?

उत्तर—1. शिल्पकला—इस काल में खनन, धातु एवं शिल्प के कार्यों में पर्याप्त उन्नति हुई। प्राप्त अभिलेखों के अनुसार इस काल में बुनकरों, रंगरेजों, सुनारों, हाथी दाँत पर नक्काशी करने वाले कारीगरों, मूर्तिकारों, जौहरियों तथा लुहारों द्वारा विभिन्न वस्तुओं को तैयार किया जाता था।

2. व्यापार—इस काल में भारत और रोम के बीच व्यापार जोरों पर था। इसमें मुख्यत: विलासिता की वस्तुएँ, मणि, रत्न, मोती, मलमल, मसाले आदि भारत से रोम भेजे जाते थे।

3. नगर—व्यापार की वृद्धि के साथ व्यापारिक स्थलों पर नगरों का विकास भी शीघ्रता से होने लगा। तत्कालीन उत्तर भारत के प्रमुख नगरों के नाम हैं—वैशाली, पाटलिपुत्र, वाराणसी, कौशम्बी, हस्तिनापुर; मथुरा, इंद्रप्रस्थ, श्रावस्ती आदि। दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों में से थे—धान्य, कटक, टागर, अमरावती, कोंडा, नागार्जुन, भड़ौच, सोपारा आदि।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

विकास के कारण—इस विकास के मुख्य कारण थे विकसित व्यापार उन्नत हस्तशिल्प कलाएँ शांति और सुव्यवस्था। लोग धनाढ्य थे। लोगों का जीवन स्तर ऊँचा था, उन्हें राज्य का संरक्षण प्राप्त था। अत: इस विकास में कोई बाधा नहीं थी।

प्रश्न 8. गुप्त शासकों का इतिहास लिखने में सहायक स्रोतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—गुप्त शासकों का इतिहास साहित्य, अभिलेखों तथा सिक्कों की सहायता से लिखा गया। गुप्तकाल के सिक्के बड़ी मात्रा में पाए गए हैं। इनके अतिरिक्त कवियों ने अपने राजा अथवा स्वामी की प्रशंसा में प्रशस्तियाँ लिखी थीं जिनके आधार पर इतिहासकारों ने ऐतिहासिक तथ्य निकालने का प्रयास किया है। उदाहरण— इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध प्रशस्ति समुद्रगुप्त के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। इसे समुद्रगुप्त के राजकवि हरिषेण ने लिखा था। इससे पता चलता है कि वह संभवत: गुप्त सम्राटों में सबसे शक्तिशाली व गुण-सम्पन्न था।

प्रश्न 9. आधुनिक इतिहासकारों ने मगध को सबसे शक्तिशाली महाजनपद किस प्रकार बताया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—छठी से चौथी शताब्दी ई. पू. में मगध (आधुनिक बिहार) सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया। आधुनिक इतिहासकार इसके कई कारण बताते हैं—

(1) मगध क्षेत्र में खेती की उपज खास तौर पर अच्छी होती थी। (2) यहाँ लोहे की खदानें भी आसानी से उपलब्ध थीं जिससे हथियार तथा उपकरण बनाना सरल था। (3) जंगली क्षेत्रों में हाथी उपलब्ध थे, जो सेना के एक महत्वपूर्ण अंग हुआ करते थे। इसके साथ ही गंगा व इसकी उपनदियों से आवागमन सरल व कम खर्चीला होता था। (4) आरंभिक जैन और बौद्ध लेखकों ने मगध की महत्ता का कारण विभिन्न शासकों की नीतियों को बताया है। इन लेखकों के अनुसार बिम्बिसार, अजातशत्रु और महापदम नंद जैसे प्रसिद्ध राजा अत्यंत महत्वाकांक्षी शासक थे और इनके मंत्री उनकी नीतियाँ लागू करते थे। (5) प्रारंभ में, राजगाह मगध की राजधानी थी। पहाड़ियों के बीच बसा राजगाह एक किलों से बंद शहर था। बाद में चौथी शताब्दी ई. पू. में पाटलिपुत्र को राजधानी बनाया गया। इसकी गंगा के रास्ते आवागमन के मार्ग पर महत्वपूर्ण अवस्थिति थी।

प्रश्न 10. छठी शताब्दी ई. पू. से छठी शताब्दी ई. तक कृषि उत्पादन वृद्धि के लिए प्रयुक्त किन्हीं दो तरीकों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—छठी शताब्दी ई. पू. में भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि उपज बढ़ाने के लिए प्रयुक्त दो तरीके निम्नलिखित हैं—

(1) उपज बढ़ाने का एक तरीका हल का प्रचलन था। जो छठी शताब्दी ई. पू. से ही गंगा और कावेरी की घाटियों के उर्वर कछारी क्षेत्र में फैल गया था। जिन क्षेत्रों में भारी वर्षा होती थी, वहाँ लोहे के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वर भूमि की जुताई आरंभ की गई। इसके अलावा गंगा की घाटी में धान की रोपाई के कारण उपज में अत्यधिक वृद्धि होने लगी। (2) उपज बढ़ाने का दूसरा तरीका तालाबों, नहरों, कुओं के माध्यम से सिंचाई करना था। यहाँ कृषक समुदायों और व्यक्तिगत लोगों ने मिलकर सिंचाई के साधन भी निर्मित किए, यद्यपि खेती की इन नई तकनीकों से उपज तो बढ़ी परंतु इसके लाभ एक समान नहीं थे। प्राय: उपज बढ़ाने में ब्राह्मण लोगों ने योगदान दिया। अच्छे बीज, कृषि उपकरण, पर्याप्त श्रम कराकर या स्वयं करके, सिंचाई स्रोत कुएँ, तालाब आदि का प्रयोग करके उपज बढ़ाने का प्रयास किया गया। नई भूमियाँ-भूमि दान से खेती के अंतर्गत आईं, इससे कुल उपज बढ़ती गई।

प्रश्न 11. "लोहे के फाल के प्रयोग ने संपूर्ण उपमहाद्वीप में कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—लोहे के फाल के प्रयोग ने पूरे उपमहाद्वीप में कृषि के क्षेत्र में निम्नलिखित क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया—

(1) आम लोगों और किसानों ने लौह औजारों व उपकरणों का प्रयोग करके घने जंगलों को काटा और उगे वृक्षों की लकड़ियाँ प्राप्त की तथा जंगलों को काटकर उपजाऊ कृषि योग्य भूमि भी प्राप्त की गई। (2) जिन

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा होती थी, वहाँ लोहे से बने हल में उर्वर भूमि की जुताई की जाने लगी। (3) लोहे के फाल वाले हलों से फसलों की उपज बढ़ने लगी परंतु यह उपमहाद्वीप के कुछ भागों में ही सीमित था। उदाहरण— पंजाब व राजस्थान जैसे अर्द्ध शुष्क भूमि वाले क्षेत्रों में लोहे के फाल वाले हलों का प्रयोग 20 वीं सदी के आरंभ में शुरू हुआ। (4) लोहे के उपकरणों ने कुएँ खोदने, बाँध बनाने, तालाब खोदने व नहरों के निर्माण में योगदान देकर सिंचाई की सुविधाओं का विकास व विस्तार किया जिससे लोहे के फाल वाले हलों का प्रयोग अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। इसके फलस्वरूप कृषि उत्पादन भी बढ़ा। (5) अनेक क्षेत्रों में लोहे के फाल की सहायता से छोटे-छोटे जोतों के स्वामियों ने गहराई से भूमि को जोता या धान के लिए खेत तैयार की। इससे छोटे किसानों ने वन्य क्षत्रों में कृषि कार्य का विस्तार किया।

प्रश्न 12. गुप्तकाल की शासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर—गुप्तकालीन युग कल्याणकारी राज्य का युग था। शासन का प्रमुख आदर्श जनहित का कार्य करना था। दंड व्यवस्था उदार थी, फिर भी अपराध बहुत कम होते थे। जनता सुखी थी और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रही थी। जनता राजा से स्नेह करती थी और राजा जनहित को ही सर्वोपरि मानता था। इस प्रकार कहा जाता है कि गुप्तकाल वर्तमान काल के किसी भी कल्याणकारी राज्य से उत्तम अवस्था में था। यहाँ की तत्कालीन शासन व्यवस्था के विभिन्न पक्षों का वर्णन इस प्रकार है—

1. न्याय व्यवस्था—गुप्तकाल में सम्राट न्याय का अंतिम और सर्वोपरि शक्ति माना जाता था। उसके नीचे अनेक स्तरों पर न्यायालय थे। सम्राट के पास बहुत कम मुकदमे आते थे। यहाँ न्याय तुरंत देने की व्यवस्था थी। दण्ड के लिए नियम कठोर थे अत: प्राणदण्ड भी दिया जाता था।

2. केन्द्रीय शासन—तत्कालीन शासन-व्यवस्था की जानकारी के मुख्य स्रोतों में चीनी यात्री फाह्यान का वृतांत महत्वपूर्ण है। गुप्तकालीन साम्राज्य सम्राट के अधीन था, किन्तु इसका स्वरूप मांडलिक भी था क्योंकि साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के राजा तथा सामंत सम्राट को अपना अधिपति मानते थे। सम्राट के कार्यों में परामर्श देने हेतु एक मंत्रीमंडल का गठन किया जाता था। गुप्तकालीन शिलालेखों से पता चलता है कि मंत्रीमंडल में अमात्य, संधि व युद्धमंत्री, कागज पत्र का मंत्री तथा महादण्ड नामक प्रमुख मंत्री थे। इस प्रकार गुप्तकालीन केन्द्रीय शासन में विभागीय व्यवस्था विद्यमान थी। प्रत्येक विभाग या कुछ संबंधित विभागों को एक मंत्री देखता था।

3. प्रांतीय शासन—सम्राट द्वारा स्वयं शासित साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक प्रांत भुक्ति या देश कहलाता था। प्रांतों के अधिकारियों की नियुक्ति राजा करते थे। ये अधिकारी गोपना, उपरिक तथा कुमारात्य कहलाते थे। प्रांतों को छोटे-छोटे जिलों में विभक्त किया गया था जिसे 'विषय' कहते थे। जिले ग्रामों में बँटे हुए थे जिनके प्रबंध का दायित्व ग्रामीण व भोजक पर होता था। ग्रामों में पंचायतें गठित की गई थीं जो स्वावलंबी होती थीं। पंचों का आदर किया जाता था। ग्राम प्रधान का पद यहाँ अत्यधिक महत्वपूर्ण होता था।

प्रश्न 13. अभिलेखों में भूमिदान के विषय में क्या जानकारी मिलती है ?

उत्तर—ईसवी की आरंभिक शताब्दियों में भूमिदान के प्रमाण मिलते हैं। इनमें से कई भू-दानों का उल्लेख अभिलेखों में मिलता है। कुछ अभिलेख पत्थरों पर खुदे हुए थे। परंतु अधिकांश ताम्रपत्रों पर खुदे होते थे। इन्हें संभवत: भूमिदान पाने वाले लोगों को प्रमाण के रूप में दिया जाता था। भूमिदान के जो प्रमाण मिले हैं, वे दान प्राय: धार्मिक संस्थाओं या ब्राह्मणों को दिए गए थे। अधिकांश अभिलेख संस्कृत में थे। विशेषकर सातवीं शताब्दी के बाद में अभिलेखों के कुछ भाग संस्कृत में हैं और कुछ तमिल व तेलगू जैसी स्थानीय भाषाओं में हैं।

भूमिदान के प्रचलन से राज्य तथा किसानों के मध्य संबंध की झलक भी मिलती है। परंतु कुछ लोग ऐसे भी थे जिन पर अधिकारियों या सामंतों का नियंत्रण नहीं था। इनमें पशुपालक, शिकारी, शिल्पकार, संग्राहक मछुआरे और जगह-जगह घूमकर खेती करने वाले लोग शामिल थे।

प्रश्न 14. खेती की नयी तकनीकों से खेती से जुड़े लोगों की सामाजिक स्थिति का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—खेती की नई तकनीकों ने विकास के अनेक मार्ग खोल दिए। इन तकनीकों से उपज अवश्य बढ़ी। परंतु इससे खेती से जुड़े लोगों में मतभेद बढ़ने लगे। बौद्ध कथाओं में भूमिहीन खेतिहर श्रमिकों, छोटे किसानों तथा बड़े जमींदारों का उल्लेख मिलता है। पाली भाषा में छोटे किसानों और जमींदारों के लिए 'गहपति'

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

शब्द का प्रयोग किया जाता था। बड़े-बड़े जमींदार और ग्राम-प्रधान शक्तिशाली माने जाते थे। वे किसानों पर नियंत्रण रखते थे। ग्राम प्रधान का पद प्राय: वंशानुगत होता था। आरंभिक तमिल संगम साहित्य में भी खेती से जुड़े विभिन्न वर्गों के लोगों का उल्लेख मिलता है, जैसे—वेल्लाल या बड़े जमींदार, हलवाहा या उल्वर और दास अणिमई। यह संभव है कि इस वर्ग विभेद का आधार भूमि का स्वामित्व, श्रम और नई प्रौद्योगिकी का उपयोग रहा हो। ऐसी परिस्थिति में भूमि का स्वामित्व महत्वपूर्ण हो गया था।

प्रश्न 15. गुप्त साम्राज्य के पतन के कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—गुप्त साम्राज्य के पतन के कारणों पर दृष्टि डाले तो पता चलता है कि ये सभी कारण साधारणत: वही है जो मौर्यकाल के पतन के कारण थे—

1. दुर्बल उत्तराधिकारी—स्कंदगुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य के उत्तराधिकारी बहुत कमजोर थे। वे इतने विशाल साम्राज्य की सुरक्षा करने में समर्थ नहीं थे। गुप्त साम्राज्य अन्य साम्राज्यों की तरह सम्राट की व्यक्तिगत शक्ति व श्रेष्ठता पर ही आधारित था। दुर्बल शासकों के सिंहासनारुढ़ होने से केन्द्र का नियंत्रण प्रांतों पर कम हो गया और साम्राज्य भी बिखर गया।

2. सेना की निर्बलता—गुप्तकाल सुख व समृद्धि का युग था। अत: उस काल में सर्वत्र लंबे समय तक शांति रही। परिणामस्वरूप सेना को युद्धों का प्रशिक्षण मिलना बंद हो गया और धीरे-धीरे वह कमजोर हो गया।

3. साम्राज्य का अत्यधिक विस्तार—गुप्त साम्राज्य की विशालता भी उसकी अवनति का एक प्रमुख कारण था क्योंकि इतने बड़े साम्राज्य का नियंत्रण केवल योग्य शासकों के लिए ही संभव था। उत्तरकालीन दुर्बल गुप्त शासकों के लिए इस विशाल साम्राज्य पर शासन कर पाना कठिन हो गया।

4. आर्थिक कठिनाई—कुमारगुप्त व स्कंधगुप्त ने हूणों से युद्ध किया। इसमें बहुत-सा धन खर्च हुआ और गुप्त साम्राज्य आर्थिक संकट में पड़ गया।

5. बौद्ध धर्म का प्रभाव—गुप्त साम्राज्य के अंतिम शासकों-बालादित्य तथा बुद्धगुप्त ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। अत: उन्होंने अहिंसा की नीति के आधार पर सैन्य संगठन पर ध्यान नहीं दिया। अत: यह सेना गुप्त साम्राज्य की रक्षा करने में असमर्थ रही।

6. हूणों का आक्रमण—इस साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण हूणों का आक्रमण था। हूणों के लगातार आक्रमणों का सामना यह दुर्बल साम्राज्य न कर पाया। हूणों के आक्रमण ने केन्द्रीय सत्ता को इतना दुर्बल बना दिया कि प्रांतीय शासक सरलता से स्वतंत्र हो गया।

प्रश्न 16. "ईसा पूर्व छठी शताब्दी में कस्बों के विकास के पर्याप्त परिणाम हैं, कृषि में हुए परिवर्तनों के साक्ष्य हैं और राजनैतिक परिवर्तनों के उपमहाद्वीप में पर्याप्त प्रमाण हैं।" इस तीन प्रमुख परिवर्तनों के परिणाम की चर्चा कीजिए।

उत्तर—ईसा पूर्व छठी शताब्दी में हुए परिवर्तनों के तीन आयामों में बदलाव के पर्याप्त परिणाम निम्नलिखित हैं—

(1) इस काल में कृषि के क्षेत्रों में अत्यधिक परिवर्तन देखने को मिले। करों की बढ़ती माँग को पूरा करने हेतु किसानों ने अन्न की उपज बढ़ाने के लिए नए उपाए ढूँढे। किसानों में नयी श्रेणी के किसान दिखाई दिए। वे किसान जो बड़े भू-स्वामी या सामंत अथवा मध्य श्रेणी के किसान व कुछ भूमिहीन किसान थे। इस काल में लोहे की फाल के हल, सिंचाई के लिए कुँए, तालाब, नहरों तथा जल संग्रहालयों के साथ-साथ धान की रोपाई की उपज बढ़ाने के लिए नए-नए प्रयोग आदि दिखाई दिए। (2) इस काल में नए शहर हड़प्पा सभ्यता के लगभग 1,500 वर्षों के पश्चात् अर्थात् एक लंबे अंतराल के बाद दिखाई दिए। ये नए शहर व्यापार, वाणिज्य के केन्द्र थे। इनमें से अधिकांश जनपदों अथवा महाजनपदों या राज्यों की राजधानियों के रूप में स्थापित थे। (3) इस काल में हमें प्रारंभिक साम्राज्य और महत्वपूर्ण राज्यों के सामने आने के प्रमाण संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में दिखाई दिए। मगध और मौर्य साम्राज्य उभर कर सामने आए। 16 महाजनपदों का अस्तित्व धीरे-धीरे विशाल मौर्य साम्राज्य में विलीन हो गया।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न 17. आरंभिक ऐतिहासिक नगरों में शिल्पकला के उत्पादन के प्रमाणों की चर्चा कीजिए। हड़प्पा के नगरों के प्रमाण से ये प्रमाण कितने भिन्न हैं ? (NCERT)

उत्तर—हड़प्पा संस्कृति के नगरों की व्यापक खुदाइयाँ की गई हैं। इन्हीं खुदाइयों से हड़प्पा संस्कृति की शिल्पकला के उत्पादनों के व्यापक प्रमाण भी मिले हैं। इसके विपरीत आरंभिक ऐतिहासिक नगरों की व्यापक खुदाइयाँ संभव नहीं है इसका प्रमुख कारण यह है कि इन क्षेत्रों में आज भी लोग निवास करते हैं। इन ऐतिहासिक नगरों से विभिन्न प्रकार के पुरावशेष भी प्राप्त हुए हैं। इन नगरों में शिल्प उत्पादन के कुछ अन्य प्रमाण अभिलेखों से भी प्राप्त हुए हैं।

आरंभिक ऐतिहासिक नगरों में शिल्पकला उत्पादन के प्रमाण—(1) इन स्थलों से उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे और थालियाँ मिली हैं जिन पर चमकदार कलई चढ़ी है। इन्हें उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र अर्थात् काले रंग की पॉलिश वाले मिट्टी के बर्तन कहा जाता है। इन पात्रों का प्रयोग संभवत: धनी लोग करते होंगे। (2) यहाँ से सोने, चाँदी, ताँबे, हाथी दाँत, शीशे से बने गहनों, उपकरणों, पकी मिट्टी, सीप तथा हथियारों के प्रमाण भी मिले हैं। (3) दानात्मक अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इन नगरों में धोबी, बुनकर, लिपिक, लोहार, बढ़ई, सुनार तथा कुम्हार आदि शिल्पकार रहते थे। लोहार लोहे का सामान बनाते थे। हड़प्पा के नगरों से लोहे का प्रयोग किए जाने के प्रमाण भी मिले हैं। (4) व्यापारियों व उत्पादकों ने अपने संघ का गठन किया था, जिन्हें श्रेणी कहा जाता था। ये श्रेणियाँ कच्चा माल खरीदकर सामान तैयार करते थे और उसे बाजार में बेच देते थे।

प्रश्न 18. महाजनपदों के विशिष्ट अभिलक्षणों का वर्णन कीजिए। (NCERT)

उत्तर—महाजनपद के नाम से 16 राज्यों का उल्लेख बौद्ध तथा जैन धर्म के आरंभिक ग्रंथों में मिलता है। यद्यपि महाजनपदों के नाम इन ग्रंथों के समान नहीं हैं तब भी मगध, पांचाल, वज्जि, कौशल, गांधार, कुरु तथा अवंति आदि नाम एक समान हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि ये महाजनपद अत्यधिक महत्वपूर्ण रहे होंगे। इन महाजनपदों के विशिष्ट अभिलक्षण निम्नलिखित हैं—

(1) महाजनपद का विकास 600 ई.पू. से 320 ई.पू. के बीच हुआ। (2) महाजनपदों की संख्या 16 थी। इनमें लगभग 12 राजतंत्रीय राज्य और 4 गणतंत्रीय राज्य थे। (3) अधिकांश महाजनपदों पर एक राजा का शासन होता था। परंतु गण और संघ के नाम से प्रसिद्ध राज्यों पर बहुत से लोगों का समूह शासन करता था। इस समूह का प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था। भगवान महावीर और भगवान बुद्ध इन्हीं गणों से संबंधित थे। वज्जि संघ की तरह कुछ राज्यों में भूमि सहित अनेक आर्थिक स्रोतों पर राजाओं का सामूहिक नियंत्रण होता था। (4) महाजनपदों को प्राय: लोहे के बढ़ते प्रयोग तथा सिक्कों के विकास के साथ जोड़ा जाता था। (5) प्रत्येक महाजनपद की अपनी एक राजधानी होती थी जो प्राय: किले से घिरी होती थी। किलेबंद राजधानियों के रख-रखाव, प्रारंभी सेनाओं तथा नौकरशाही के लिए अधिक आर्थिक साधनों की आवश्यकता होती थी। (6) लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व से ब्राह्मणों ने संस्कृत में धर्मशास्त्र नामक ग्रंथों की रचना आरंभ की। इनमें शासन सहित अन्य सामाजिक वर्गों हेतु नियमों का निर्धारण किया गया और यह अपेक्षा की गई कि शासक क्षत्रिय वर्ग से ही होंगे। (7) शासकों का काम व्यापारियों, किसानों, शिल्पकारों से कर तथा उपहार (भेंट) लेना माना जाता था। (8) अपने राज्यों के लिए धन एकत्रित करने हेतु पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण करना भी वैध माना जाता था। (9) धीरे-धीरे कुछ राज्यों ने अपनी स्थायी सेवाएँ तथा नौकरशाही तंत्र तैयार कर लिए। बचे शेष राज्य अब भी सहायक सेना पर निर्भर थे। सैनिक प्राय: कृषक वर्ग से ही भर्ती किए जाते थे।

प्रश्न 19. सामान्य लोगों के जीवन का पुनर्निर्माण इतिहासकार कैसे करते हैं ? (NCERT)

उत्तर—सामान्य लोगों के जीवन की लिखित जानकारी विरले ही छोड़ी गई है। इसलिए उनके जीवन का पुनर्निर्माण करने हेतु विभिन्न प्रकार के स्रोतों का सहारा लेना पड़ता है। इनमें से प्रमुख कुछ स्रोत निम्नलिखित हैं—

(1) खुदाइयों में विभिन्न प्रकार के अनाजों के दाने तथा जानवरों की हड्डियाँ मिली हैं। इनमें लोगों के भोजन संबंधी जानकारी मिलती है। (2) भवनों तथा पात्रों के अवशेषों से उनके घरेलू जीवन का ज्ञान होता है। (3) अभिलेखों में विभिन्न प्रकार के शिल्पियों व शिल्पों का उल्लेख मिलता है। इनसे साधारण लोगों के आर्थिक जीवन की झलकियाँ मिलती हैं। (4) कुछ अभिलेखों व पांडुलिपियों में राजा प्रजा संबंधी, जैसे—विभिन्न प्रकार

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

के करों से अनुमान लगाया जाता है कि सामान्य लोग सुखी थे अथवा दुःखी। (5) बदलते कृषि तंत्र व अन्य उपकरण साधारण लोगों के बदलते जीवन पर प्रकाश डालते हैं। उदाहरण—लोहे के प्रयोग से अनुमान लगाया जा सकता है कि कृषि करना आसान हो गया होगा और उत्पादन बढ़ गया होगा। इससे सामान्य कृषक समृद्ध बने होंगे। (6) भारतीय समाज के साधारण लोगों के विषय में वैदिक साहित्य से पर्याप्त जानकारी मिलती है। इसके साथ ही लोककथाओं से भी जीवन की जानकारी मिलती है। (7) व्यापार संघों से उत्पादकों के हितों की रक्षा का संकेत मिलता है। (8) विभिन्न साहित्य साधनों से उत्तर भारत, दक्षिण भारत व कर्नाटक जैसे अनेक क्षेत्रों में विकसित हुए बस्तियों के विषय में जानकारी मिलती है। इनसे दक्कन तथा दक्षिण भारत में चरवाहा बस्तियों के भी साक्ष्य मिलते हैं। (9) इतिहासकार शवों के अंतिम संस्कार के ढंग से भी साधारण नागरिकों के जीवन का चित्रण करते हैं। साधारण लोगों के शवों के साथ विभिन्न प्रकार के लोहे के बने हथियारों व उपकरणों को भी दफना दिया जाता था। (10) नगरों में रहने वाले सर्वसाधारण लोगों में धोबी, बुनकर, बढ़ई, कुम्हार, लिपिक, स्वर्णकार, लौहकार, छोटे व्यापारी व छोटे धार्मिक व्यक्ति आदि होते थे।

प्रश्न 20. पांड्य सरदार (स्रोत 3) को दी जाने वाली वस्तुओं की तुलना दंगुन गाँव की (स्रोत 8) वस्तुओं से कीजिए। आपको क्या समानताएँ और असमानताएँ दिखाई देती हैं ? (NCERT)

उत्तर—पांड्य सरदार को दी जाने वाली वस्तुओं में हाथी दाँत, हिरणों के बालों से बने चंवर, सुगंधित लकड़ी, मधु चंदन, गेहूँ, हल्दी, सुरमा व इलायची आदि अनेक वस्तुएँ शामिल हैं। इसके अतिरिक्त आम, नारियल, गन्ना, केला, फूल, फल, प्याज, जड़ी-बूटी तथा अनेक प्रकार के पशु-पक्षी भी उपहार में दिए जाते थे।

इसके विपरीत दंगुन गाँव की भेंट स्वरूप दी जाने वाली वस्तुओं में जानवरों की खाल, मदिरा, नमक घास, कोयला, खादिर वृक्ष के उत्पाद दूध, दही, फूल तथा अन्य खनिज पदार्थों को भी शामिल किया गया था। इसके अलावा इन दोनों को मिलने वाली भेटों में कुछ समानताएँ और असमानताएँ भी थीं, जो इस प्रकार हैं—

समानताएँ—जब पांड्य सरदार सेनगुत्तुवन वन यात्रा पर गए थे, तब उन्हें अपनी प्रजा से चंदन गेरु, मधु, सुगंधित लकड़ी, शेर, हाथी, बंदर, भालू, बाघों के बच्चे, लोमड़ी, मोर, जंगली मुर्गे, कस्तूरी मृग तथा बोलने वाले तोते आदि अनेक भेंट मिले थे। फूलों को छोड़कर इन दोनों सूचियों में कोई विशेष समानता नहीं दिखाई देती। यह संभव है कि दंगुन गाँव की तरह पांड्य सरदार भी भेंट में मिलने वाले जानवरों की खाल का उपयोग करते हों। इससे स्थानीय रूप से उपलब्ध वस्तुओं के भेंट में दिए जाने का संकेत मिलता है।

असमानताएँ—पांड्य सरदार को मिलने वाली वस्तुओं की सूची गुप्त अथवा वाकाटक सरदार को मिलने वाली वस्तुओं की सूची को अपेक्षा अधिक विशाल है। इससे भी बड़ी असमानता तो इन वस्तुओं के प्राप्त करने के तरीके में है। पांड्य सरदार को लोग खुशी-खुशी तथा नाच-गाकर वस्तुएँ उपहार में देते थे। इसके विपरीत भूमि के दान से पहले दंगुन गाँव के निवासियों को अपने यहाँ की वस्तुएँ राज्य तथा उसके अधिकारियों को देनी पड़ती थी, क्योंकि यह उनका कर्तव्य था।

प्रश्न 21. अभिलेखशास्त्रियों की कुछ समस्याओं की सूची बनाइए। (NCERT)

उत्तर—अभिलेखशास्त्रियों को अभिलेखों का अध्ययन करने वाला विद्वान कहा जाता था। इनकी प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं—

(1) अभिलेखों में कभी-कभी अक्षरों को बहुत हल्के ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ना कठिन होता है। (2) अभिलेख नष्ट भी हो सकते हैं जिससे अक्षर लुप्त हो जाते हैं जिससे उन्हें पढ़ना कठिन हो जाता है। (3) अभिलेखशास्त्री कुछ अभिलेखों पर लिखी लिपि को पढ़ने में असमर्थ होते हैं क्योंकि उनके समकालीन अभिलेखों पर कहीं भी उस लिपि का उल्लेख नहीं मिलता। दो भाषाओं के समानांतर प्रयोग के अभाव में वे असहाय हो जाते हैं। (4) अभिलेखों के शब्दों के वास्तविक अर्थ के विषय में पूर्ण रूप से ज्ञान होना भी हमेशा आसान नहीं होता क्योंकि कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय से संबंधित होते हैं। (5) इस संबंध में एक और मौलिक समस्या भी है। वह यह है कि जिस वस्तु को हम आज राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानते हैं वह सब कुछ अभिलेखों में अंकित नहीं है। अभिलेख प्रायः बड़े और विशेष अवसरों का ही वर्णन करते हैं। (6) कई अभिलेखों में एक ही राजा के लिए भिन्न-भिन्न नामों, उपाधियों या सम्मानजनक प्रतीकों और

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

बड़े जमी...

छोटे किसानों व जमींदारों के लिए 'गृहपति' शब्द का प्रयोग किया जाता था। बड़े-बड़े जमींदार व ग्राम के प्रधान शक्तिशाली माने जाते थे। वे प्राय: किसानों पर नियंत्रण रखते थे। ग्राम-प्रधान का पद प्राय: वंशानुगत होता था। प्रारंभिक तमिल संगम साहित्य में भी गाँवों में रहने वाले विभिन्न वर्गों के लोगों का उल्लेख मिलता है, जैसे—वेल्लाल या बड़े जमींदार, हलवाहा या उल्वर व दास आणमई। यह भी संभव है कि इन विभिन्नताओं का आधार भूमि का स्वामित्व, नयी पौद्योगिकी तथा श्रम का उपयोग रहा हो। ऐसी परिस्थिति में भूमि का स्वामित्व महत्वपूर्ण हो गया था।

तार्किक एवं समझ पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. एक इतिहासकार के रूप में आप कैसे ज्ञात करेंगे कि अभिलेखों पर क्या लिखा है ?

उत्तर—एक इतिहासकार के रूप में अभिलेखों के अध्ययन हेतु मुझे मुद्राशास्त्र के अंतर्गत प्राचीन सिक्कों का विस्तृत अध्ययन करना होगा, सिक्के पर अंकित लिपि, काल, भाषा का ज्ञान प्राप्त करना होगा। इस क्रम में प्रयुक्त लिपि जैसे ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि, ओमाईक लिपि का अध्ययन करना होगा। ब्राह्मी लिपि के अक्षर का उसके समानार्थी देवनागरी अक्षर से समानता या भिन्नता का मिलान करना होगा।

यूनानी एवं खरोष्ठी लिपि के अध्ययन हेतु यूनानी भाषा पढ़ने तथा कुछ यूरोपियन भाषाओं की जानकारी का होना भी आवश्यक होगा। अभिलेखों से प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्य को कालक्रम एवं संबंधित शासकों से जोड़कर प्रामाणिकता के आधार पर प्रस्तुत करना होगा। कई अभिलेखों में शासक अशोक का नाम नहीं लिखा है, उसमें अशोक द्वारा अपनाई गई उपाधियों का प्रयोग किया गया है, जैसे "देवानांपिय" अर्थात् देवों का प्रिय और "पियदस्सी" जानी देखने में सुंदर, परंतु कुछ अभिलेखों में अशोक का नाम मिलता है। परीक्षण के बाद विषय, भाषा-शैली एवं पुरालिपि में समानता के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि इन अभिलेखों को एक ही शासक ने बनवाया है।

●●

अध्याय 2

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग—आरंभिक समाज

(लगभग 600 ई.पू. से 600 ईसवी)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. प्राचीनकाल में अधिकतर राजवंश किस प्रणाली का अनुसरण करते थे—
   (a) मातृवंशिकता का (b) पितृवंशिकता का
   (c) भ्रातृवंशिकता का (d) आनुवंशिकता का।
2. महाभारत में श्लोकों की संख्या है—
   (a) 20 हजार (b) 50 हजार (c) एक लाख से अधिक (d) एक लाख।
3. जाति-व्यवस्था में पहला दर्जा प्राप्त था—
   (a) वैश्यों को (b) क्षत्रियों को (c) शूद्रों को (d) ब्राह्मणों को।

Scanned with CamScanner

4. बहुपति प्रथा प्रचलित थी—
(a) सातवाहनों में (b) पांडवों में (c) शकों में (d) कौरवों में।

5. मनुस्मृति में माता-पिता की मृत्यु के बाद संपत्ति में विशेष भाग का अधिकारी था—
(a) जमाता (b) ज्येष्ठ पुत्र (c) सबसे बड़ी पुत्री (d) सबसे छोटा पुत्र।

6. पुत्रियों के संदर्भ में पिता का महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य था—
(a) संपत्ति में अधिकार (b) अंतर्विवाह
(c) बहिर्विवाह (d) कन्यादान।

7. महाभारत का सबसे महत्वपूर्ण उपदेशात्मक अंश है—
(a) भगवद्गीता (b) मनुस्मृति (c) सुत्तपिटक (d) इंडिका।

उत्तर— 1. (b), 2. (c), 3. (d), 4. (b), 5. (b), 6. (d), 7. (a).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. लगभग ..... ई.पू. के बाद ब्राह्मणों ने लोगों को गोत्रों में वर्गीकृत किया।
2. ..... उपमहाद्वीप के सबसे समृद्ध ग्रंथों में से एक है।
3. ..... का वर्गीकरण शास्त्रों में प्रयुक्त शब्द ..... के आधार पर भी किया गया था।
4. ..... राजाओं को उनके मातृनाम से चिह्नित किया जाता था।
5. ब्राह्मण लोग शकों को ..... तथा ..... मानते थे।
6. ..... मध्य एशिया से भारत आए थे।
7. धर्मसूत्रों व धर्मशास्त्रों में एक आदर्श व्यवस्था का उल्लेख किया गया था जो ..... पर आधारित था।
8. ..... शौर्य, युद्ध तथा वर्षा के प्रमुख देवता थे।
9. ..... से अभिप्राय गोत्र से बाहर विवाह संबंध स्थापित करने से है।
10. पारिवारिक संबंध प्रायः ..... तथा ..... पर आधारित माने जाते हैं।
11. संस्कृत ग्रंथों में 'कुल' शब्द का प्रयोग ..... के लिए किया जाता है।
12. ..... के अनुसार वर्ण-व्यवस्था के चार वर्णों का उदय आदि मानव पुरुष बलि से हुआ था।
13. महाकाव्य काल में संपत्ति पर अधिकार के मुख्य आधार ..... और ..... थे।

उत्तर—1. 1000, 2. महाभारत, 3. समाज, जाति, 4. सातवाहन, 5. मलेच्छ, बर्बर, 6. शक, 7. वर्ग, 8. इंद्र, 9. बहिर्विवाह, 10. प्राकृतिक, रक्त, 11. परिवार, 12. पुरुषसूक्त, 13. लिंग, वर्ण।

प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़िए—

(अ)	(ब)
1. पाणिनि की अष्टाध्यायी	(a) लगभग 500 ई. पू.-400 ई.
2. आरंभिक बौद्धग्रंथ	(b) लगभग 300 ई.
3. रामायण और महाभारत	(c) लगभग 500 ई. पू.
4. चरक और सुश्रुत संहिता	(d) लगभग 200 ई. से
5. पुराणों का संकलन	(e) लगभग 500-100 ई. पू.
6. भरतमुनि का नाट्यशास्त्र	(f) लगभग 100 ई.
7. कालिदास का साहित्य	(g) लगभग 400-500 ई.।

उत्तर—1. (c), 2. (e), 3. (a), 4. (f), 5. (d), 6. (b), 7. (g).

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए—

1. महाभारत में पाँच लाख से अधिक श्लोकों का संकलन है।
2. धर्मशास्त्रों में दस प्रकार के विवाह का वर्णन किया गया है।
3. गोत्र परंपरा में प्रत्येक गोत्र का नाम एक ऋषि के नाम पर होता था।
4. मनुस्मृति के अनुसार पुत्रियाँ पैतृक संसाधन में हिस्सेदारी की माँग नहीं कर सकती थी।
5. पुरातत्ववेत्ता बी. बी. लाल ने इन्द्रप्रस्थ में उत्खनन कार्य किया।

Scanned with CamScanner

6. एक ही गोत्र के सदस्य आपस में विवाह संबंध रख सकते थे।

उत्तर—1. असत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. सत्य, 5. असत्य, 6. असत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. प्राचीनकाल में अधिकतर राजवंश किस प्रणाली का अनुसरण करते थे ?
2. महाभारत में श्लोकों की संख्या कितनी है ?
3. जाति-व्यवस्था में पहला दर्जा किन्हें प्राप्त था ?
4. बहुपति प्रथा किनमें प्रचलित थीं ?
5. मनुस्मृति में माता-पिता की मृत्यु के बाद संपत्ति में विशेष भाग का अधिकारी कौन होता था ?
6. महाभारत का सबसे महत्वपूर्ण उपदेशात्मक अंश क्या है ?
7. लगभग कितने ई.पू. के बाद ब्राह्मणों ने लोगों को गोत्रों में वर्गीकृत किया ?
8. उपमहाद्वीप के सबसे समृद्ध ग्रंथों में से एक ग्रंथ कौन-सा है ?
9. किन राजाओं को उनके मातृनाम से चिह्नित किया जाता था ?
10. शौर्य, युद्ध तथा वर्षा के प्रमुख देवता थे ?
11. गोत्र से बाहर विवाह संबंध स्थापित करने को क्या कहते हैं ?
12. संस्कृत ग्रंथों में 'कुल' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया जाता है ?
13. महाकाव्य काल में संपत्ति पर अधिकार के मुख्य आधार क्या थे ?
14. महावीर से पहले जैन धर्म के कितने धर्मगुरु हुए थे ?
15. महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएँ किसमें संकलित हैं ?
16. पिटक कितने हैं ?
17. बुद्धचरितम् के रचयिता कौन थे ?
18. बौद्ध धर्म से जुड़े पवित्र टीले क्या हैं ?
19. छठी शताब्दी ई. पू. में कौन-से धर्मों का उदय हुआ ?
20. जैन धर्म के सबसे महत्वपूर्ण विचारक कौन थे ?
21. जीवन मृत्यु तथा परम ब्रह्म से संबंधित गहन विचारों वाले ग्रंथ क्या थे ?

उत्तर—1. पितृवंशिकता का, 2. एक लाख से अधिक, 3. ब्राह्मणों को, 4. पांडवों में, 5. ज्येष्ठ पुत्र, 6. भगवद्-गीता, 7. 1000, 8. महाभारत, 9. सातवाहन, 10. इंद्र, 11. बहिर्विवाह, 12. परिवार, 13. लिंग, वर्ण, 14. 23, 15. जातक कथाओं में, 16. तीन, 17. अश्वघोष, 18. स्तूप, 19. जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म, 20. वर्धमान महावीर, 21. उपनिषद्।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महाभारत की मूल कथा का संबंध किससे है ?

उत्तर—महाभारत की मूल कथा का संबंध दो परिवार के बीच हुए युद्ध से है। ये परिवार थे कौरव तथा पांडव जो आपस में बांधव (चचेरे भाई) थे। महाभारत के कुछ भाग विभिन्न सामाजिक समुदायों के आचार-व्यवहार के मानदंड तय करते हैं। इस ग्रंथ के मुख्य पात्र इन मानदंडों का अनुसरण करते हुए दिखाई देते हैं।

प्रश्न 2. ऋग्वेद से हमें क्या जानकारी मिलती है ? यह किस काल में लिखा गया था ?

उत्तर—ऋग्वेद काल या पूर्व वैदिक का काल है। यह वैदिक काल की प्रारंभिक व्यवस्था थी। ऋग्वेद के काल को 9000 वर्ष ई. पू. से लेकर 1000 वर्ष पू. तक माना गया है। किंतु अधिकांश विद्वान की दृष्टि से यह लगभग 3000 वर्ष ई. पू. रहा होगा।

प्रश्न 3. स्त्रीधन क्या था ?

उत्तर—विवाह के समय मिले उपहारों पर स्त्रियों का स्वामित्व माना जाता था और इसे स्त्रीधन कहा जाता था। इस संपत्ति को उनकी संतान विरासत के रूप में प्राप्त कर सकती थी। इस पर उनके पति का कोई अधिकार नहीं होता था परंतु मनुस्मृति स्त्रियों को पति की अनुमति के बिना पारिवारिक संपत्ति तथा अपने लिए बहुमूल्य वस्तुओं के गुप्त संचय के विरुद्ध भी चेतावनी देती है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. सातवाहन शासकों के अंतर्गत माताएँ किस प्रकार महत्वपूर्ण मानी जाती थीं ? उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर—(1) सातवाहन राजाओं को उनके मातृनाम से चिह्नित किया जाता था। (2) इससे यह प्रतीत होता है कि माताएँ महत्वपूर्ण थीं। उदाहरण—राजा गोतमी-पुत्त-सिरी-सातकनि। यहाँ गोतमी-पुत्त का अर्थ है 'गोतमी का पुत्र'।

प्रश्न 5. 'कुल' एवं 'जाति' में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—संस्कृत ग्रंथों में 'कुल' शब्द का प्रयोग परिवार के लिए तथा 'जाति' का प्रयोग बांधवों (सगे-संबंधियों) के एक बड़े समूह के लिए होता है। किसी कुल के पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक साथ रहने वाले सामूहिक रूप से एक ही वंश के माने जाते हैं।

प्रश्न 6. वंश क्या होता है ?

उत्तर—किसी एक ही परिवार से एक के बाद एक शासन करने वाले व्यक्तियों को वंश कहते हैं।

प्रश्न 7. गोत्र किस प्रकार अस्तित्व में आए ?

उत्तर—लगभग 1000 ई.पू. में ब्राह्मणों ने लोगों को गोत्रों में वर्गीकृत किया। प्रत्येक गोत्र एक वैदिक ऋषि के नाम पर होता था। उस गोत्र के सदस्य उसी ऋषि के वंशज माने जाते थे।

प्रश्न 8. पुराणों की कुल संख्या कितनी है ? कुछ पुराणों के नाम लिखिए।

उत्तर—पुराणों की कुल संख्या 18 है। इनमें से कुछ के नाम जो प्रमुख हैं वे इस प्रकार हैं—

(1) विष्णु पुराण, (2) वायु पुराण, (3) भविष्य पुराण, (4) वामन पुराण, (5) महाकाव्य पुराण, (6) ब्रह्म पुराण, (7) स्कंद पुराण आदि।

प्रश्न 9. अंतर्विवाह और बहिर्विवाह में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अंतर्विवाह में वैवाहिक संबंध समूह के अंदर ही होते हैं। यह समूह एक गोत्र, कुल, एक जाति अथवा एक ही स्थान पर बसने वाले जनों का हो सकता है। बहिर्विवाह से अभिप्राय गोत्र से बाहर विवाह संबंध स्थापित करने से है।

प्रश्न 10. ऋग्वेद में 'पुरुषसूक्त' के अनुसार वर्ण व्यवस्था के चार वर्णों का उदय किस प्रकार हुआ ?

उत्तर—'पुरुषसूक्त' के अनुसार वर्ण-व्यवस्था के चार वर्णों का उदय आदिमानव पुरुष बलि से हुआ था। उसका मुँह ब्राह्मण बना तथा उसकी भुजा से क्षत्रिय बना। वैश्य उसकी जंघा थे और उसके पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई।

प्रश्न 11. मनुस्मृति क्या थी ? इसका संकलन कब हुआ ?

उत्तर—मनुस्मृति धर्मशास्त्रों तथा धर्मसूत्रों में सबसे बड़ा ग्रंथ था। इसका संकलन लगभग 200 ई.पू. से 200 ई. के बीच हुआ।

प्रश्न 12. मनुस्मृति के अनुसार माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् संपत्ति का बँटवारा किस प्रकार होना चाहिए था ?

उत्तर—मनुस्मृति के अनुसार माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् पैतृक संपत्ति का सभी पुत्रों में समान रूप से बँटवारा किया जाना चाहिए परंतु सबसे बड़ा पुत्र एक विशेष भाग का अधिकारी होता था। स्त्रियाँ इस संपत्ति में हिस्सा नहीं माँग सकती थीं।

प्रश्न 13. धर्मशास्त्रों के अनुसार क्षत्रियों के किन्हीं दो आदर्श कार्यों का उल्लेख संक्षेप में कीजिए।

उत्तर—धर्मशास्त्रों के अनुसार क्षत्रियों के आदर्श कार्य इस प्रकार थे—

(1) युद्ध करना, (2) वेद पढ़ना, (3) न्याय करना, (4) यज्ञ करवाना, (5) दान-दक्षिणा देना, (6) लोगों को सुरक्षा प्रदान करना।

प्रश्न 14. आचार-संहिताएँ क्यों तैयार की गईं ?

उत्तर—(1) नगरीकरण के साथ दूर-दूर के लोगों के बीच विचारों का आदान-प्रदान होने लगा। फलस्वरूप विश्वासों और व्यवहारों में अंतर आने लगा। (2) इस चुनौती के जवाब में ब्राह्मणों ने समाज के लिए विस्तृत आचार संहिताएँ तैयार कीं।

प्रश्न 15. 600 ई.पू. से 60
महत्व था ?
उत्तर—600 ई.पू. से 60
जो आज भी है। इस प्रकार के
प्रश्न 16. ब्राह्मण क्या
उत्तर—वैदिक संहिताअ
वैदिक अनुष्ठानों की विधियाँ स
प्रश्न 17. शक कौन थे
उत्तर—शक मध्य एशि
एवं धीरे-धीरे यहीं स्थायी रूप
वाले आक्रमणकारी समझे गए।
स्थानीय लोगों के साथ वैवाहि
क्षेत्रों पर इन्होंने शासन भी कि
प्रश्न 18. भगवद्गीत
उत्तर—भगवद्गीता
श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया
प्रश्न 19. श्रेणी कि
उत्तर—शिल्पियों औ
प्रश्न 20. 'विश' पद
उत्तर—'विश' की
देते थे। वहीं लोग व्यापारिक
प्रश्न 21. महाभारत
उत्तर—महाभारत
प्रथा का उदाहरण है। इतिहा
प्रश्न 22. 'यज्ञ' श
उत्तर—अग्नि के
निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति
प्रश्न 23. महाभार
उत्तर—महाभारत
(1) जातिप्रथा, (2)
प्रथा आदि।
प्रश्न 24. 'गोत्र'
उत्तर—'गोत्र' श
संतान या उत्तराधिकारियों
के नाम पर है और उस
प्रश्न 25. पितृवं
उत्तर—पितृवंशि
मातृवंशिकता शब्द का उ

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महाभार
उत्तर—महाभार

Scanned with CamScanner

प्रश्न 15. 600 ई.पू. से 600 ई. के बीच भारत में अंतर्विवाह पद्धति कहाँ प्रचलित थी ? इसका क्या महत्व था ?

उत्तर—600 ई.पू. से 600 ई. के बीच अंतर्विवाह पद्धति दक्षिण भारत के अनेक समुदायों में प्रचलित थी जो आज भी है। इस प्रकार के विवाह संबंधों से संगठित समुदायों का उदय होता था।

प्रश्न 16. ब्राह्मण क्या है ?

उत्तर—वैदिक संहिताओं के बाद विशेष प्रकार के कई ग्रंथ लिखे गए जिन्हें ब्राह्मण कहा जाता है। इनमें वैदिक अनुष्ठानों की विधियाँ संग्रहित हैं और उन अनुष्ठानों की सामाजिक एवं धार्मिक व्याख्या भी की गई है।

प्रश्न 17. शक कौन थे ?

उत्तर—शक मध्य एशिया के मूल निवासी थे जो उपमहाद्वीप में सर्वप्रथम उत्तरी पश्चिमी हिस्सों से आए एवं धीरे-धीरे यहीं स्थायी रूप से बस गए। ये लोग प्रारंभ में ब्राह्मणों द्वारा मलेच्छ/असभ्य या विदेशों से आने वाले आक्रमणकारी समझे गए। धीरे-धीरे इन्होंने भारतीय धर्मों, जैसे—बौद्ध धर्म या वैष्णव मत को अपना लिया। स्थानीय लोगों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए तथा उत्तरी-पश्चिमी के साथ-साथ पश्चिमी भारत के कुछ क्षेत्रों पर इन्होंने शासन भी किया।

प्रश्न 18. भगवद्गीता क्या है ?

उत्तर—भगवद्गीता महाभारत का सबसे महत्वपूर्ण उपदेशात्मक अंश है। यह कुरुक्षेत्र के युद्ध क्षेत्र में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश है।

प्रश्न 19. श्रेणी किसे कहा जाता है ?

उत्तर—शिल्पियों और वणिकों के अपने अलग-अलग संगठन थे, जिन्हें श्रेणियाँ कहा जाता था।

प्रश्न 20. 'विश' पद का क्या अर्थ है ?

उत्तर—'विश' की संज्ञा वैश्यों को दी जाती थी। उत्तर वैदिक काल में वैश्य लोग राजा को राजस्व या कर देते थे। वहीं लोग व्यापारिक गतिविधियों में भाग लेते थे। देश का समस्त व्यापार उन्हीं के हाथों में था।

प्रश्न 21. महाभारत की सबसे चुनौतीपूर्ण उपकथा का उल्लेख संक्षेप में कीजिए।

उत्तर—महाभारत की सबसे चुनौतीपूर्ण उपकथा द्रौपदी से पांडवों का विवाह है। यह विवाह बहुपति प्रथा का उदाहरण है। इतिहासकारों के अनुसार यह प्रथा संभवत: किसी समय शासकों के विशिष्ट वर्ग में मौजूद थी।

प्रश्न 22. 'यज्ञ' शब्द का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अग्नि के हवन कुंड के सामने तल्लीनता एवं तन्मयता से बैठकर मंत्रोच्चारण करना तथा किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अग्नि में आहुतियाँ डालना ही 'यज्ञ' कहलाता है।

प्रश्न 23. महाभारतकालीन भारतीय समाज की प्रमुख समस्याएँ क्या-क्या थीं ?

उत्तर—महाभारतकालीन भारतीय समाज की प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित थीं—

(1) जातिप्रथा, (2) नारी जाति की हीन दशा, (3) नैतिक गिरावट, (4) वर्ग संघर्ष, (5) बहुविवाह, (6) सती प्रथा आदि।

प्रश्न 24. 'गोत्र' शब्द से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—'गोत्र' शब्द का अर्थ है—कुल, वंश, परिवार और खानदान। दूसरे शब्दों में, एक ही पूर्वज की संतान या उत्तराधिकारियों को एक गोत्र के अंतर्गत रखा जाता है। प्रत्येक गोत्र का नामकरण किसी एक वैदिक संत के नाम पर है और उस गोत्र के प्रत्येक व्यक्ति को उनका वंशज माना जाता है।

प्रश्न 25. पितृवंशिकता एवं मातृवंशिकता से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—पितृवंशिकता का अर्थ है वह वंश परंपरा जो पिता के पुत्र फिर पौत्र, प्रपौत्र आदि से चलती है। मातृवंशिकता शब्द का उपयोग तब करते हैं जब वंश परंपरा माँ से जुड़ी होती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महाभारत के संबंध में बंधुता के रिश्तों में किस प्रकार परिवर्तन आया ? वर्णन कीजिए।

उत्तर—महाभारत वास्तव में बदलते रिश्तों की एक कहानी है। यह चचेरे भाईयों के दो दलों-कौरवों और

Scanned with CamScanner

पांडवों के मध्य भूमि और सत्ता को लेकर हुए संघर्ष का वर्णन करती है। ये दोनों परिवार या दल कुरु वंश से संबंधित थे जिनका कुरु जनपद पर शासन था। उनके संघर्ष ने अंततः एक युद्ध का रूप ले लिया जिसमें पांडव विजयी हुए। इसके पश्चात् पितृवंशिक उत्तराधिकार की घोषणा की गई। भले ही पितृवंशिकता की प्रथा महाकाव्य की रचना से पहले ही प्रचलित थी, परंतु महाभारत की मुख्य कथावस्तु ने इस आदर्श को और मजबूत किया। पितृवंशिकता के अनुसार पिता की मृत्यु के बाद उसके पुत्र उसके संसाधनों पर अधिकार जमा सकते थे। राजाओं के संदर्भ में राजसिंहासन भी शामिल था।

प्रश्न 2. जाति पर आधारित सामाजिक वर्गीकरण क्या था ? श्रेणियाँ क्या थीं ?

उत्तर—समाज का वर्गीकरण शास्त्रों में प्रयुक्त अथवा उपयोग किए जाने वाले शब्द जाति के आधार पर भी किया गया था। ब्राह्मणीय सिद्धांत में वर्ण की भाँति जाति भी जन्म पर आधारित थी परंतु वर्णों की संख्या जहाँ सिर्फ चार थी, वहीं जातियों की कोई निश्चित संख्या नहीं थी। ऐसे समस्त नए समुदायों को जिन्हें चार वर्णों वाली ब्राह्मणीय व्यवस्था में शामिल करना संभव नहीं था, उनका जाति में वर्गीकरण कर दिया गया। एक ही जीविका अथवा व्यवसाय से जुड़ी जातियों को कभी-कभी श्रेणियों (गिल्ड्स) में भी संगठित किया जाता था। **श्रेणी**—श्रेणी की सदस्यता शिल्प में विशेषज्ञता पर निर्भर करती थी। कुछ सदस्य दूसरे व्यवसाय भी अपना लेते थे। मध्यप्रदेश के मंदसौर अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि श्रेणी के सदस्य एक व्यवसाय के अलावा अन्य कई चीजों में सहभागी होते थे। उदाहरण—रेशम के बुनकरों की एक श्रेणी ने अपने काम से सामूहिक रूप से अर्जित धन को सूर्य देवता के सम्मान में मंदिर बनवाने पर खर्च कर दिया।

प्रश्न 3. महाभारत की भाषा और विषय-वस्तु की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—**महाभारत की भाषा**—महाभारत नामक महाकाव्य अनेक भाषाओं में मिलता है, परंतु इसकी मूल भाषा संस्कृत है। इस ग्रंथ में प्रयुक्त संस्कृत वेदों अथवा प्रशस्तियों की संस्कृत से कहीं अधिक आसान (सरल) है। अतः यह कहा जा सकता है कि इस ग्रंथ को व्यापक स्तर पर समझा जाता होगा।

महाभारत की विषय-वस्तु—इतिहासकार महाभारत की विषय-वस्तु को दो मुख्य शीर्षकों के अधीन रखते हैं—आख्यान तथा उपदेशात्मक। आख्यान में कहानियों का संग्रह किया जाता है जबकि उपदेशात्मक भाग में सामाजिक आचार-विचार के मानदंडों का उल्लेख किया गया है। परंतु यह विभाजन अपने आप में पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। क्योंकि उपदेशात्मक अंशों में भी कहानियाँ होती हैं। इस प्रकार आख्यानों में समाज के लिए एक संदेश निहित होता है। जो भी हो, अधिकतर इतिहासकार इस बात पर एकमत हैं कि मूल रूप से महाभारत नाटकीय कथानक था जिसमें उपदेशात्मक अंश बाद में जोड़े गए।

आरंभिक संस्कृत परंपरा में महाभारत को इतिहास की श्रेणी में रखा गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'ऐसा ही था'। महाभारत के युद्ध के विषय में भी इतिहासकारों का मत एक नहीं है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि सगे-संबंधियों के बीच हुए युद्ध की स्मृति ही महाभारत का मुख्य कथानक है, परंतु कई अन्य इतिहासकारों का कहना है कि युद्ध की पुष्टि किसी अन्य साक्ष्य से नहीं होती।

प्रश्न 4. वर्ण और संपत्ति के अधिकार में क्या संबंध था ?

उत्तर—ब्राह्मणीय ग्रंथों के अनुसार, लैंगिक आधार के अतिरिक्त सम्पत्ति पर अधिकार का एक अन्य आधार वर्ण था। शूद्रों के लिए एकमात्र जीविका अन्य तीन वर्णों की सेवा थी परंतु पहले तीन वर्णों के पुरुषों के लिए विभिन्न जीविकाओं की संभावना रहती थी। यदि इन सभी विधानों को वास्तव में कार्यान्वित किया जाता तो ब्राह्मण और क्षत्रिय सबसे अधिक धनी व्यक्ति होते। यह तथ्य कुछ हद तक सामाजिक वास्तविकता से भी मिलता था। उदाहरण—साहित्यिक परंपरा में जिन पुरोहितों और राजाओं का वर्णन मिलता है उनमें राजाओं को बहुत अधिक धनवान दिखाया व बताया गया है। यहाँ पुरोहित या ब्राह्मण भी कम धनवान नहीं थे परंतु कहीं-कहीं निर्धन ब्राह्मणों का भी उल्लेख यहाँ मिलता है।

प्रश्न 5. "साहित्यिक परंपराएँ परिवर्तन प्रक्रियाओं को समझने के लिए प्रमुख स्रोतों में से एक है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—बंधुत्व जाति प्रथा तथा वर्ग या वर्ण व्यवस्था आदि आरंभिक सामाजिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए इतिहासकार साहित्यिक परंपराओं का उपयोग करते हैं। कुछ ग्रंथ सामाजिक व्यवहार के मानदंड तय करते थे। अन्य ग्रंथ समाज का चित्रण करते थे और कभी-कभी समाज में उपस्थित विभिन्न रिवाजों पर अपनी टिप्पणी भी प्रस्तुत करते थे। अभिलेखों से हमें समाज के कुछ ऐतिहासिक अभिनायकों की झलक मिलती है। प्रत्येक ग्रंथ

Scanned with CamScanner

एक समुदाय विशेष के दृष्टिकोण से लिखा जाता था। अत: यह याद रखना आवश्यक हो जाता है कि ये ग्रंथ किसने लिखा, क्या लिखा और किनके लिए इसकी रचना की गई। इस बात पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि इन ग्रंथों की रचना में किस भाषा का प्रयोग किया गया है तथा इनका प्रचार-प्रसार किस प्रकार हुआ है। यदि हम इन ग्रंथों का प्रयोग सावधानीपूर्वक न करें तो समाज में प्रचलित आचार-व्यवहार और रिवाजों का इतिहास लिखा जा सकता है।

प्रश्न 6. वर्ण व्यवस्था की आलोचनाओं के क्या आधार थे ?

उत्तर—जिस समय समाज के ब्राह्मणीय दृष्टिकोण को धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों में संहिताबद्ध किया जा रहा था। उस समय कुछ दूसरी परंपराओं ने वर्ण व्यवस्था की आलोचना भी प्रस्तुती की। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण आलोचनाएँ प्रारंभिक बौद्ध धर्म में (लगभग छठी शताब्दी) विकसित हुई। बौद्धों ने इस बात को तो माना कि समाज में विषमता व्याप्त थी परंतु उनके अनुसार ये भेद प्राकृतिक नहीं थे। उन्होंने जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को भी अस्वीकार कर दिया।

प्रश्न 7. "महाभारत प्राचीनकाल के सामाजिक मूल्यों के अध्ययन का एक अच्छा साधन है।" उचित तर्क देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—(1) स्वजनों के बीच लड़ाई पर आधारित होने के कारण यह समाज के विभिन्न पक्षों के आस-पास घूमती है। (2) ऐसा भी कहा जाता है उस समय राजवंश पितृवंशिकता प्रणाली का अनुसरण करते थे। पैतृक संपत्ति पर पुत्रों का अधिकार होता था और पुत्रों की उत्पत्ति को महत्व दिया जाता था, क्योंकि उन्हें ही वंश चलाने वाला माना जाता था। (3) पुत्रियों को अलग तरह से देखा जाता था। अपने गोत्र से बाहर उनका विवाह कर देना ही माता-पिता का आदर्श था। उसे बहिर्विवाह पद्धति कहा जाता था। कन्यादान पिता का महत्वपूर्ण कर्तव्य माना जाता था। (4) उच्च परिवारों में बहुपति प्रथा प्रचलित थी। उदाहरण—द्रौपदी के पाँच पति थे। (5) महाभारत वर्णों तथा उनसे जुड़े व्यवसायों की जानकारी देता है। (6) परिवार पर वृद्ध पुरुष का आधिपत्य था। उदाहरण—युधिष्ठिर ने द्यूतक्रीड़ा में अपनी पत्नी द्रौपदी को भी दाँव पर लगा दिया था। (7) यह ग्रंथ विभिन्न सामाजिक समूहों के आपसी संबंधों पर प्रकाश डालता है। उदाहरण—हिडिंबा का भीम से विवाह। (8) इस ग्रंथ से माँ तथा पुत्रों के बीच आपसी संबंधों का पता चलता है। उदाहरण—पांडवों ने अपनी माँ कुंती को पूरा सम्मान दिया। परंतु पांडवों ने अपनी माँ की राय नहीं मानी।

प्रश्न 8. "महाभारत की मुख्य कथा पारिवारिक संबंधों का विश्लेषण करती है।" प्रमाणों सहित इस कथन को न्यायसंगत सिद्ध कीजिए।

उत्तर—यह कथन उचित है कि महाभारत प्राचीनकाल के सामाजिक मानदण्डों के अध्ययन का एक अच्छा स्रोत है। महाभारत दो परिवारों के मध्य युद्ध का चित्रण है। इसके प्रमुख पात्र सामाजिक मानदंडों का अनुसरण करते हैं तथा कभी-कभी इनकी अवहेलना भी की जाती है जो निम्नलिखित वर्णनों से स्पष्ट होता है—

1. **पितृवंशिक उत्तराधिकार का सुदृढ़ होना**—यद्यपि पितृवंशिक उत्तराधिकार पहले से लागू था परंतु पांडवों की विजय के बाद यह आदर्श अत्यधिक सुदृढ़ हो गया।

2. **विवाह के नियम**—कन्याओं का विवाह उचित समय तथा उचित व्यक्ति से किया जाता था। उस समय बहुपति विवाह युद्ध व संकट की स्थिति में ही होते थे। उस समय अंतर्विवाह, बहिर्विवाह व बहुपत्नी प्रथा भी प्रचलित थी। द्रौपदी का विवाह बहुपति विवाह का उदाहरण है।

3. **बंधुता के रिश्ते में परिवर्तन**—महाभारत के समय बंधुता के रिश्ते में बदलाव आया। इसमें बांधवों के दो दलों—कौरवों और पांडवों के बीच भूमि और सत्ता के प्रश्न पर संघर्ष हुआ जिसमें पांडव विजयी हुए। यह संबंधियों में आपसी संघर्ष का उदाहरण है।

4. **स्त्री का स्थान**—स्त्रियों का स्थान इस काल में महत्वपूर्ण था। द्रौपदी का अपमान महाभारत का कारण बना। कुंती का चरित्र व सम्मानजनक स्थिति स्त्रियों की अच्छी दशा का उदाहरण है।

5. **द्यूत क्रीड़ा**—राजाओं में द्यूत क्रीड़ा का प्रचलन यह दर्शाता है कि उनमें बुराइयाँ आ गई थीं। कौरवों द्वारा छल-कपट का प्रयोग उनके नैतिक पतन को प्रदर्शित करता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 9. प्राचीन भारतीय समाज की जाति व्यवस्था को संक्षेप में समझाइए।

उत्तर—संभवत: हम 'जाति' शब्द से परिचित हैं जो एक सोपानात्मक सामाजिक वर्गीकरण को दर्शाता है। धर्मसूत्र और धर्मशास्त्र में एक आदर्श व्यवस्था का उल्लेख किया गया था। ब्राह्मणों का यह मानना था कि ये व्यवस्था, जिसमें स्वयं उन्हें पहला दर्जा प्राप्त है, एक दैवीय व्यवस्था है। शूद्रों और 'अपूतयों' को सबसे निचले स्तर पर रखा जाता था इस व्यवस्था में मुख्य दर्जा संभवत: जन्म के अनुसार निर्धारित माना जाता था।

अपनी मान्यता को प्रमाणित करने हेतु ब्राह्मण बहुधा ऋग्वेद के पुरुषसूक्त मंत्र को उद्धृत करते हैं जो आदि मानव पुरुष की बलि का चित्रण करता है। जगत् के सभी तत्व जिनमें चार वर्ण शामिल हैं, इसी पुरुष के शरीर से उपजे थे। इसमें ब्राह्मण उनका मुख था, उनकी भुजाओं से क्षत्रिय बने, वैश्य उनकी जंघा से और उनके पैर से शूद्र की उत्पत्ति हुई।

प्रश्न 10. प्राचीन काल में संपत्ति के स्वामित्व के संदर्भ में महिलाओं की स्थिति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मनुस्मृति के अनुसार, माता-पिता की मृत्यु के बाद पैतृक संपत्ति का सभी पुत्रों में समान रूप से बँटवारा किया जाना चाहिए परंतु ज्येष्ठ पुत्र विशेष भाग का अधिकारी था। स्त्रियाँ इस पैतृक संसाधन में हिस्सेदारी की माँग नहीं कर सकती थी परंतु विवाह में मिले उपहारों पर स्त्रियों का स्वामित्व होता था। इसे स्त्रीधन कहा जाता था। इससे संपत्ति को स्त्री की संतान विरासत के रूप में उनसे प्राप्त कर सकती थी। इस पर उनके पति का अधिकार नहीं होता था। परंतु मनुस्मृति स्त्रियों को पति की अनुमति के बिना पारिवारिक संपत्ति अथवा स्वयं अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को गुप्त रूप से इकट्ठा करने से भी रोकती थी।

इसके अलावा कुछ साक्ष्य इस ओर संकेत करते हैं कि उच्च वर्ग की महिलाएँ संसाधनों पर अपनी पहुँच रखती थी, तो भी भूमि, पशु और धन पर पुरुषों का ही नियंत्रण था। दूसरे शब्दों में, स्त्री और पुरुष के मध्य सामाजिक स्थिति की भिन्नता संसाधनों पर उनके नियंत्रण की भिन्नता के कारण ही व्यापक हुई थी।

प्रश्न 11. स्पष्ट कीजिए कि विशिष्ट परिवारों में पितृवंशिकता क्यों महत्वपूर्ण रही होगी ? (NCERT)

उत्तर—पितृवंशिकता से अभिप्राय ऐसी वंश परंपरा से है जो पिता के पुत्र, फिर पौत्र, प्रपौत्र आदि से चलती है। विशिष्ट परिवारों में शासक परिवार व धनी लोगों के परिवार शामिल हैं। इतिहासकार परिवार और बंधुता संबंधी विचारों का विश्लेषण करते हैं। इसका अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे उनकी सोच का पता चलता है। संभवत: इन विचारों ने लोगों के क्रियाकलापों को भी प्रभावित किया होगा तथा इस प्रकार के व्यवहार से विचारों में बदलाव आया होगा, इस बात का स्पष्ट संकेत ऋग्वेद जैसे कर्मकांडीय ग्रंथ में भी मिलता है। विशिष्ट परिवारों में पितृवंशिकता निम्नलिखित दो कारणों से अनिवार्य रही होगी—

1. वंश परंपरा चलाने के लिए—धर्म सूत्रों के अनुसार वंश को पुत्र ही आगे बढ़ाते हैं न कि पुत्रियाँ। अत: प्राय: सभी परिवारों में उत्तम पुत्रों की प्राप्ति की कामना की जाती थी। यह बात ऋग्वेद के एक मंत्र से और अधिक स्पष्ट हो जाती है। इसमें पुत्री के विवाह के समय पिता कामना करता है कि इंद्र के अनुग्रह से उसकी पुत्री को उत्तम पुत्रों की प्राप्ति हो।

2. उत्तराधिकार संबंधी झगड़ों से बचने के लिए—माता-पिता यह नहीं चाहते थे कि उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके परिवार में संपत्ति के उत्तराधिकार के लिए झगड़े हों। राजपरिवारों के संदर्भ में उत्तराधिकार में राजगद्दी भी शामिल थी। राजा की मृत्यु के पश्चात् उसका बड़ा पुत्र राजगद्दी का उत्तराधिकारी बन जाता था। इस तरह माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् उनकी सम्पूर्ण संपत्ति को उनके पुत्रों में बाँट दिया जाता था। अत: अधिकतर राजवंश लगभग छठी शताब्दी ई.पू. से ही पितृवंशिकता प्रणाली का अनुसरण करते आ रहे थे हालाँकि इस प्रथा में अनेक विभिन्नताएँ भी थीं जैसे—

(i) पुत्र के न होने पर एक भाई दूसरे का उत्तराधिकारी बन जाता था। (ii) कभी-कभी सगे-संबंधी सिंहासन पर अपना अधिकार जमा लेते थे। (iii) कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में स्त्रियाँ सत्ता का उपभोग करती थीं। प्रभावती गुप्त इसका प्रमुख उदाहरण है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 12. क्या आरंभिक राज्यों में शासक निश्चित रूप से क्षत्रिय होते थे ? चर्चा कीजिए।
(NCERT)

उत्तर—शास्त्रों के अनुसार सिर्फ क्षत्रिय ही राजा हो सकते थे परंतु कई महत्वपूर्ण राजवंशों की उत्पत्ति अन्य वर्णों से भी हुई थी। उदाहरण—मौर्य वंश। बाद में लिखे बौद्ध ग्रंथों में यह व्यक्त किया गया है कि मौर्य शासक क्षत्रिय थे, परंतु ब्राह्मणीय शास्त्र उन्हें निम्न कुल का ही मानते हैं। इसी तरह शुंग तथा कण्व, जो मौर्यों के उत्तराधिकारी थे, ब्राह्मण थे। सही अर्थों में समर्थन और संसाधन एकत्रित करने वाला हर व्यक्ति राजनीतिक सत्ता का उपभोग कर सकता था।

ब्राह्मण लोग शकों को, जो मध्य एशिया से भारत आए थे, मलेच्छ तथा बर्बर मानते थे परंतु संस्कृत के एक आरंभिक अभिलेख में प्रसिद्ध शक शासक रुद्रदमन द्वारा सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण (मरम्मत) का वर्णन मिलता है। इससे यह ज्ञात होता है कि ताकतवर मलेच्छ संस्कृतीय परंपरा से परिचित थे।

एक अन्य महत्वपूर्ण व रोचक तथ्य सातवाहनों के संबंध में है। सबसे प्रसिद्ध सातवाहन शासक गौतम पुत्र सिरी सातकनि ने स्वयं को अनूठा ब्राह्मण बनाने के साथ-साथ अपने आपको क्षत्रियों के अभिमान का हनन करने वाला भी बताया था। उसने यह दावा भी किया था कि उसने चार वर्णों के मध्य आपसी विवाह संबंधों पर रोक लगाई है परंतु फिर भी उसने स्वयं रुद्रदमन के परिवार से विवाह संबंध स्थापित किए। इन समस्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि आरंभिक राज्यों में शासक के लिए जन्म से ही क्षत्रिय होना अनिवार्य नहीं था।

प्रश्न 13. द्रोण, हिडिम्बा और मातंग की कथाओं में धर्म के मानदंडों की तुलना कीजिए तथा उनके अंतर को भी स्पष्ट कीजिए।
(NCERT)

उत्तर—द्रोण—द्रोण एक ब्राह्मण थे जो कुरु वंश के राजकुमारों को धनुर्विद्या की शिक्षा देते थे। धर्मसूत्रों के अनुसार शिक्षा देना एक ब्राह्मण का प्रमुख कर्म था। अत: द्रोण अपने धर्म का पालन कर रहे थे। उस काल में निषाद जाति के लोग शिक्षा नहीं पा सकते थे। इसलिए उन्होंने, एकलव्य को अपना शिष्य नहीं बनाया परंतु उससे गुरुदक्षिणा में दाएँ हाथ का अँगूठा ले लेना धर्म के विपरीत था। इसका अर्थ यह हुआ कि उन्होंने उसे अपना शिष्य स्वीकार कर लिया। वास्तव में देखा जाए तो यह उनका स्वार्थ था। उन्होंने अर्जुन को दिए गए अपने वचन को निभाने हेतु ऐसा तुच्छ काम किया। वे ऐसा नहीं चाहते थे कि इस संसार में अर्जुन से बढ़कर कोई और धनुर्धारी हो।

हिडिंबा—हिडिंबा एक राक्षसी थी। राक्षसों को नरभक्षी कहा गया है। हिडिंबा के भाई ने उसे पांडवों को पकड़कर लाने का आदेश दिया था, ताकि वह उन्हें अपना आहार बना सके परंतु उसने अपने धर्म का पालन नहीं किया। उसने पांडवों को पकड़कर लाने के बजाए भीम से विवाह कर लिया और विवाह पश्चात् एक पुत्र को जन्म दिया। इस प्रकार अपने राक्षसी दायित्वों को न निभा कर उसने राक्षस कुल की मर्यादा को भंग कर दिया।

मातंग—मातंग बोधिसत्व थे जिन्होंने एक चांडाल के घर जन्म लिया था। उनका विवाह एक व्यापारी की पुत्री दिथ्थ से हुआ था। उनके घर इनका एक पुत्र हुआ जिसका नाम उन्होंने मांडव्यकुमार रखा। मांडव्य बड़ा होकर विद्वान तथा तीन वेदों का ज्ञाता बना। वह प्रतिदिन 16,000 ब्राह्मणों को भोजन कराता था परंतु एक दिन जब उसका पिता (मातंग) फटे-पुराने कपड़ों में उसके दरवाजे पर आया और उससे भोजन माँगा, तो मांडव्य ने उसे भोजन देने से मना कर दिया तथा उसने मातंग को पतित कहकर अपमानित भी किया। अत: मातंग आकाश में अदृश्य हो गए। इस घटना का पता जब मातंग की पत्नी दिथ्थ को चला तो वह मातंग से क्षमा माँगने उनके पीछे गई। इस प्रकार दिथ्थ ने तो अपना पत्नी धर्म निभाया, किंतु ऐसा करने पर मांडव्य के व्यवहार से घमंड झलकने लगा। दानी व्यक्ति उदार होता है, परंतु मांडव्य ने उदारता की मर्यादा या धर्म का पालन नहीं किया।

प्रश्न 14. किन मायनों में सामाजिक अनुबंध की बौद्ध अवधारणा समाज के उस ब्राह्मणीय दृष्टिकोण से भिन्न थी जो 'पुरुषसूक्त' पर आधारित था ?
(NCERT)

उत्तर—ऋग्वेद के पुरुषसूक्त के अनुसार समाज में चार वर्णों की उत्पत्ति आदि मानव पुरुष की बलि से हुई थी। ये वर्ण थे—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र। इन वर्णों के अलग-अलग कार्य थे। ब्राह्मणों को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। वे धर्मशास्त्रों के अध्ययन तथा शिक्षण का कार्य करते थे। क्षत्रिय वीर योद्धा होते थे, वे

Scanned with CamScanner

शासन चलाते थे तथा रक्षा का दायित्व भी निभाते थे। वैश्य व्यापार करते थे। शूद्रों का कार्य इन तीन वर्णों की सेवा करना था। इस प्रकार समाज में भीषण विषमता व्याप्त थी। इस व्यवस्था में सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार जन्म को माना गया था।

वहीं बौद्ध अवधारणा इस सामाजिक अनुबंध के विपरीत थी। उन्होंने इस बात को तो स्वीकार किया कि समाज में विषमता विद्यमान थी परंतु उनके अनुसार यह विषमता न तो प्राकृतिक थी और न ही स्थायी। उन्होंने तो जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को भी अस्वीकार कर दिया।

प्रश्न 15. निम्नलिखित अवतरण महाभारत से है जिसमें ज्येष्ठ पांडव युधिष्ठिर दूत संजय को संबोधित कर रहे हैं—

संजय धृतराष्ट्र गृह के सभी ब्राह्मणों और मुख्य पुरोहित को मेरा विनीत अभिवादन दीजिएगा। मैं गुरु द्रोण के सामने नतमस्तक होता हूँ... मैं कृपाचार्य के चरण स्पर्श करता हूँ... (और) कुरु वंश के प्रधान भीष्म के। मैं वृद्ध राजा (धृतराष्ट्र) को नमन करता हूँ। मैं उनके पुत्र दुर्योधन और उनके अनुजों के स्वास्थ्य के बारे में पूछता हूँ तथा उनको शुभकामनाएँ देता हूँ... मैं उन सब युवा कुरु योद्धाओं का अभिनंदन करता हूँ जो हमारे भाई, पुत्र और पौत्र हैं... सर्वोपरि मैं उन महामति विदुर को (जिनका जन्म दासी से हुआ है) नमस्कार करता हूँ जो हमारे पिता और माता के सदृश हैं... मैं उन सभी वृद्धा स्त्रियों को प्रणाम करता हूँ जो हमारी माताओं के रूप में जानी जाती हैं। जो हमारी पत्नियाँ हैं उनसे यह कहिएगा कि, "मैं आशा करता हूँ कि वे सुरक्षित हैं"... मेरी ओर से उन कुलवधुओं का जो उत्तम परिवारों में जन्मी हैं और बच्चों की माताएँ हैं, अभिनंदन कीजिएगा तथा हमारी पुत्रियों का आलिंगन कीजिएगा... सुंदर, सुगंधित, सुवेशित गणिकाओं को शुभकामनाएँ दीजिएगा। दासियों और उनकी संतानों तथा वृद्ध, विकलांग और असहाय जनों को भी मेरी ओर से नमस्कार कीजिएगा। (NCERT)

इस सूची को बनाने के आधारों की पहचान कीजिए—उम्र, लिंग, भेद व बंधुत्व के संदर्भ में। क्या कोई अन्य आधार भी है? प्रत्येक श्रेणी के लिए स्पष्ट कीजिए कि सूची में उन्हें एक विशेष स्थान पर क्यों रखा गया है ?

उत्तर—उम्र, लिंग, भेद तथा बंधुत्व के अतिरिक्त इस सूची को बनाने के कई अन्य आधार भी हैं, जैसे—गुरुओं के प्रति सम्मान, वीर योद्धाओं, दासियों यहाँ तक कि दासी-पुत्रों के प्रति सम्मान आदि। इन सभी को सूची में उनके सामाजिक स्तर को ध्यान में रखते हुए उन्हें एक विशेष क्रम में रखा गया है। जो इस प्रकार हैं—

(1) सर्वप्रथम समाज में सबसे अधिक प्रतिष्ठित ब्राह्मणों, पुरोहित तथा गुरुजनों के प्रति सम्मान दर्शाया गया है। (2) दूसरे स्थान पर माता-पिता समान वृद्ध बंधु-बांधवों के प्रति आदर व्यक्त किया गया है। (3) इसके बाद अपने से छोटे अथवा एकसमान आयु के बंधु-बांधवों को स्थान दिया गया है। (4) इसी क्रम में युवा कुरु योद्धाओं का अभिनंदन व सम्मान किया गया। (5) तत्पश्चात् नारी वर्ग को स्थान दिया गया है। इस क्रम में माताएँ, पुत्रियाँ, पत्नियाँ, कुल वधुएँ आदि आती हैं। नारी वर्ग में अंतिम स्थान पर सुंदर-सुगंधित गणिकाओं, दासियों, सेविकाओं तथा उनकी संतानों को रखा गया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महाभारत की सदृश्यता की खोज में बी.बी. लाल के प्रयासों की चर्चा कीजिए।

उत्तर—दूसरे प्रमुख महाकाव्यों की तरह महाभारत में भी युद्धों, राजमहलों, बस्तियों व वनों का अत्यंत जीवंत चित्रण मिलता है। 1951-52 में पुरातत्ववेत्ता बी.बी. लाल ने मेरठ जिले (उ.प्र.) के हस्तिनापुर नामक एक गाँव में खुदाई की। ऐसा कोई नहीं कह सकता था कि यह गाँव महाकाव्य में वर्णित हस्तिनापुर ही था या नहीं। फिर भी नामों की समानता सिर्फ एक संयोग हो सकता है। परंतु गंगा के ऊपरी दोआब वाले क्षेत्र में इस पुरास्थल का होना, जहाँ कुरु राज्य भी स्थित था, इस ओर संकेत करता है कि संभवतः यही पुरास्थल कुरुओं की राजधानी हस्तिनापुर हो जिसका उल्लेख महाभारत में आता है।

आबादी के साक्ष्य—बी.बी. लाल को यहाँ आबादी के पाँच स्तरों के साक्ष्य मिले थे। इनमें से दूसरा और तीसरा स्तर हमारे विश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण है।

Scanned with CamScanner

तार्किक एवं समझ पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों का उचित सम्मान था, इस संबंध में अपने साक्ष्य प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—हम पूरे प्रमाणिकता के साथ कह सकते हैं कि प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों को सम्माननीय स्थान प्राप्त था। प्राचीन धर्मग्रंथ ऋग्वेद में स्त्रियों के सम्मान में कई ऋचाओं का निर्माण किया गया है, ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं का निर्माण महिलाओं के द्वारा किया गया है, उस काल की प्रमुख विदुषी नारियों में लोपामुद्रा, विश्ववारा, अपाला, गार्गी का नाम आता है जिन्होंने अपनी विद्वता से ऋषियों को भी प्रभावित किया था। प्राचीन धर्मग्रंथ, रामायण, महाभारत पुराणों में भी स्त्रियों के सम्मान में अनेक उदाहरण मिलते हैं। रामायण में सीता का त्याग, महाभारत में द्रौपदी का वार्तालाप, कुन्ती का पुत्रों द्वारा सम्मान, गाँधारी का शासन कार्यों में हस्तक्षेप बताता है कि प्राचीन भारत में स्त्रियों का उचित स्थान एवं सम्मान था। धार्मिक कार्यों में पुरुषों के साथ समान रूप से भाग लेने एवं संपत्ति में भी स्त्रियों को उचित अधिकार दिया गया था। इस प्रकार अनेक प्रमाण हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि प्राचीनकाल में स्त्रियों का उचित सम्मान था। ●●

अध्याय 3

विचारक, विश्वास और इमारतें—सांस्कृतिक विकास

(लगभग 600 ईसा पूर्व से ईसा संवत् 600 तक)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. सबसे विशाल तथा शानदार बौद्ध स्तूप था—
   (a) भूमरा का (b) अमरावती का
   (c) साँची का (d) शाहजी की ढेरी का।
2. स्तूप का संस्कृत अर्थ है—
   (a) टीला (b) प्रांगण (c) शिखर (d) मेहराब।
3. साँची का स्तूप महत्वपूर्ण केन्द्र था—
   (a) बौद्ध धर्म का (b) हिन्दू धर्म का
   (c) इस्लाम धर्म का (d) जैन धर्म का।
4. साँची के स्तूप के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान रहा—
   (a) नूरजहाँ का (b) जहाँआरा बेगम का
   (c) शाहजहाँ बेगम का (d) सुल्तानजहाँ बेगम का।
5. भगवान बुद्ध के बचपन का नाम था—
   (a) सिद्धार्थ (b) राहुल (c) वर्धमान (d) शाक्य।
6. जहाँ बुद्ध ने निब्बान (निर्वाण) प्राप्त किया था—
   (a) लुंबिनी (b) सारनाथ (c) बोधगया (d) कुशीनगर।
7. स्तूप से संबंधित संरचना नहीं है—
   (a) गर्भगृह (b) हर्मिक (c) यष्टि (d) अंड।

उत्तर—1. (b) 2. (a), 3. (a), 4. (c), 5. (a), 6. (d), 7. (a).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. बौद्धों के धार्मिक संगठन को ..... के नाम से जाना जाता है।
2. गौतम बुद्ध का जन्म ..... ई.पू. में ..... ग्राम में हुआ था।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

3. बुद्धकालीन भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के कुछ क्षेत्रों में ..... व्यवस्था थी।
4. बौद्ध संघ की संचालन पद्धति ..... तथा ..... की परंपरा पर आधारित थी।

उत्तर—1. संघ, 2. 566, लुम्बिनी, 3. गणतंत्रीय, 4. गणों, संघों।

प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़िए—

(अ)	(ब)
1. बुद्ध का जन्म	(a) कुशीनगर
2. बुद्ध की शिक्षाओं का संग्रहण	(b) सारनाथ
3. बुद्ध की ज्ञानप्राप्ति	(c) बोधगया
4. बुद्ध के प्रथम उपदेश का स्थान	(d) त्रिपिटक
5. बुद्ध का महापरिनिर्वाण	(e) लुंबिनी।

उत्तर—1. (e), 2. (d), 3. (c), 4. (b), 5. (a).

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए—

1. साँची बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है।
2. ऋग्वेद अग्नि, इंद्र, सोम आदि कई देवताओं की स्तुति सूक्तों का संग्रह है।
3. महायान और हीनयान जैन धर्म से संबंधित परंपराएँ हैं।
4. अमरावती के स्तूपों की खोज सन् 1818 में हुई।
5. हिन्दू धर्म में शैव तथा वैष्णव दो परंपराएँ सम्मिलित थीं।
6. भगवान बुद्ध का जन्म कुशीनगर में हुआ था।

उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. असत्य, 5. सत्य, 6. असत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. सबसे विशाल तथा शानदार बौद्ध स्तूप कहाँ का था ?
2. स्तूप का संस्कृत अर्थ क्या है ?
3. साँची का स्तूप किसका महत्वपूर्ण केन्द्र था ?
4. साँची के स्तूप के संरक्षण में किसका महत्वपूर्ण योगदान रहा।
5. भगवान बुद्ध के बचपन का नाम क्या था ?
6. बुद्ध ने निब्बान (निर्वाण) कहाँ प्राप्त किया था ?
7. बौद्धों के धार्मिक संगठन को किसके नाम से जाना जाता है ?
8. गौतम बुद्ध का जन्म किस सन् में एवं कहाँ हुआ था ?
9. बुद्धकालीन भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के कुछ क्षेत्रों में कौन-सी व्यवस्था थी ?
10. बौद्ध संघ की संचालन पद्धति किस परंपरा पर आधारित थी ?
11. महाकाव्य काल का दूसरा नाम क्या है ?
12. रामायण के रचयिता कौन थे ?
13. वेद व्यास ने किस महाकाव्य की रचना की थी ?
14. साहित्यिक दृष्टि से महाभारत का प्रथम संस्करण क्या कहलाता है ?
15. पुराणों की संख्या कितनी है ?
16. श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध हेतु उत्साहित करते हुए जो उपदेश दिए हैं वे किसमें संकलित हैं ?
17. महाभारत में कुल कितने खंड हैं ?
18. वैदिक मंत्रों व सूक्तों के संग्रह को क्या कहते हैं ?
19. सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार किसने करवाया था ?
20. उपनिषदों की कुल संख्या कितनी है ?

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

21. दक्कन और मध्य भारत में मौर्यों के उत्तराधिकारी कौन थे ?
22. शौर्य, युद्ध तथा वर्षा के प्रमुख देवता कौन थे ?

उत्तर—1. अमरावती का, 2. टीला, 3. बौद्ध धर्म का, 4. शाहजहाँ बेगम का, 5. सिद्धार्थ, 6. कुशीनगर, 7. संघ, 8. 566ई. पू., लुम्बिनी, 9. गणतंत्रीय, 10. गणों, संघों, 11. वीरकाल, 12. महर्षि वाल्मीकि, 13. महाभारत को, 14. आदि पुराण, 15. 18, 16. श्रीमद्भगवद्गीता में, 17. 18, 18. संहिता, 19. राजा रुद्रदामन ने, 20. 108, 21. सातवाहन, 22. इन्द्र।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. स्तूप शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर—स्तूप बौद्ध धर्म से जुड़े पवित्र टीले हैं। महात्मा बुद्ध की अस्थियों पर अर्द्ध-गोलाकार रूप में बने भवनों को स्तूप के नाम से जाना जाता है। इनमें बुद्ध के शरीर के कुछ अवशेष अथवा उनके द्वारा प्रयोग की गई वस्तु को गाड़ दिया गया था। साँची और अमरावती के स्तूप विश्व में प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न 2. 19 वीं शताब्दी में यूरोपवासियों को स्तूप में क्यों दिलचस्पी थी ? कोई दो कारण संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—यूरोपवासियों को स्तूपों की सुन्दर तथा आकर्षक मूर्तियों के कारण स्तूपों में दिलचस्पी थी। वे इन्हें अपने साथ यूरोप ले जाना चाहते थे।

प्रश्न 3. पूर्व वैदिक काल में वर्णित प्रमुख तीन देवताओं के नाम लिखिए।

उत्तर—पूर्व वैदिक काल में वर्णित प्रमुख तीन देवताओं के नाम हैं—(1) अग्नि, (2) इंद्र, (3) सोम।

प्रश्न 4. बुद्ध के जीवन से जुड़े चार ऐसे स्थानों के नाम लिखिए जहाँ चैत्य बने।

उत्तर—1. लुंबिनी—जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था।
2. बोधगया—जहाँ बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था।
3. सारनाथ—जहाँ बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया था।
4. कुशीनगर—जहाँ बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था।

प्रश्न 5. बुद्धचरितम् की रचना किसने की थी ? यह महत्वपूर्ण क्यों था ?

उत्तर—बुद्धचरितम् पुस्तक को महाकवि अश्वघोष ने रचा। यह ग्रंथ गौतम बुद्ध के जीवन चरित्र के विषय में बहुत सारी जानकारियाँ उपलब्ध कराती हैं।

प्रश्न 6. साँची से प्राप्त कमलदल तथा हाथियों के बीच एक महिला की मूर्ति के विषय में इतिहासकारों में क्या मतभेद हैं ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कुछ इतिहासकार इस महिला को बुद्ध की माँ माया बताते हैं तो कुछ अन्य इतिहासकारों के अनुसार यह एक लोकप्रिय देवी गजलक्ष्मी है। गजलक्ष्मी सौभाग्य लाने वाली एक देवी मानी जाती थी जिन्हें प्राय: हाथियों के साथ जोड़ा जाता था।

प्रश्न 7. 'निर्वाण' शब्द का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—बौद्ध धर्म में निर्वाण शब्द का अर्थ है—मुक्ति पाना अथवा मोक्ष या जीवन-मरण के बंधनों से छुटकारा पाना। बौद्ध धर्म में मोक्ष या निर्वाण प्राप्त करना जीवन का मुख्य उद्देश्य माना जाता है।

प्रश्न 8. 'धम्म' या 'धर्म' से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—'धम्म' या 'धर्म' एक ही शब्द के पर्यायवाची हैं। धर्म आर्यों के लिए जो अर्थ रखता था, वही धम्म का अर्थ बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए है अर्थात् पूजा पाठ करना, मूर्तियों पर जल चढ़ाना, हवन-स्तुति करना, किसी जीव को कष्ट न पहुँचाना, सबकी भलाई करना।

प्रश्न 9. तीर्थंकर का क्या अर्थ है ?

उत्तर—महावीर से पूर्व जैन धर्म के जो 23 धर्म गुरु हुए थे, उन्हें तीर्थंकर के नाम से जाना जाता है। महावीर जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर थे।

प्रश्न 10. 'चैत्य' क्या है ? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—शवदाह के पश्चात् बौद्धों के शरीर के कुछ अवशेष टीलों पर सुरक्षित रख दिए जाते थे। अंतिम संस्कार से जुड़े इन टीलों को चैत्य कहा जाता था।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न 11. 'विहार' से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—बौद्ध मठों को विहार कहा जाता था। विहारों में बौद्ध भिक्षु वर्षा ऋतु में रहते थे। नासिक (महाराष्ट्र राज्य) में ऐसे तीन विहार मिले हैं।

प्रश्न 12. उन देशों एवं क्षेत्रों के नाम लिखिए जहाँ बुद्ध के संदेश का प्रसार हुआ।

उत्तर—बुद्ध का संदेश भारत से भूटान, वर्तमान पाकिस्तान, अफगानिस्तान, कोरिया, जापान, श्रीलंका, म्यांमार, थाइलैंड, चीन और इण्डोनेशिया आदि में फैला।

प्रश्न 13. साँची के स्तूप की खोज कब हुई ? उस समय इसके तोरणद्वार किस हालत में थे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—साँची के स्तूप की खोज 1818 ई. में हुई। इसके चार तोरणद्वार थे। इनमें से तीन तोरणद्वार ठीक हालत में खड़े थे जबकि चौथा तोरणद्वार वहीं पर गिरा हुआ था।

प्रश्न 14. 'भक्ति' किसे कहते हैं ?

उत्तर—भक्ति एक प्रकार की आराधना है। इसमें उपासना तथा ईश्वर के बीच के रिश्ते को प्रेम तथा समर्पण का रिश्ता माना जाता है।

प्रश्न 15. दो जटिल यज्ञों के नाम लिखिए। इन्हें कौन करते थे और क्यों ?

उत्तर—राजसूय तथा अश्वमेघ जटिल यज्ञ थे। इनके अनुष्ठान हेतु बहुत से ब्राह्मण व पुरोहितों पर निर्भर रहना पड़ता था। इसलिए इन्हें केवल राजा तथा बड़े-बड़े सरदार ही कराते थे।

प्रश्न 16. बुद्ध के अष्ट मार्ग अथवा मध्य मार्ग में कौन-सी आठ बातें शामिल थीं ?

उत्तर—बुद्ध के अष्ट (मध्य) मार्ग में शामिल आठ बातें निम्नलिखित थीं—

(1) शुद्ध दृष्टि, (2) शुद्ध संकल्प, (3) शुद्ध वचन, (4) शुद्ध कर्म, (5) शुद्ध कमाई, (6) शुद्ध प्रयत्न, (7) शुद्ध स्मृति, (8) शुद्ध समाधि।

ये सभी सिद्धांत एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

प्रश्न 17. महावीर कौन थे ?

उत्तर—महावीर अपने युग के महान् चिंतक थे। वे जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर थे।

प्रश्न 18. जैन साधु तथा साध्वियाँ कौन-से पाँच व्रत करते थे ?

उत्तर—जैन साधु तथा साध्वियाँ निम्न पाँच व्रत करते थे—

(1) हत्या न करना, (2) चोरी न करना, (3) झूठ न बोलना, (4) धन इकट्ठा न करना, (5) ब्रह्मचर्य का पालन करना।

प्रश्न 19. जातकों की विषय-वस्तु का उल्लेख कीजिए। वे क्या दर्शाते हैं ?

उत्तर—जातकों में जानवरों की अनेक कहानियाँ दी गई हैं। इन्हें मनुष्यों के गुणों के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। जातक वास्तव में महात्मा बुद्ध के पूर्व-जन्म (बोधिसत्वों) की कहानियाँ हैं।

प्रश्न 20. 'संघ' नामक पद का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—बौद्धों के धार्मिक संगठन को 'संघ' के नाम से जाना जाता है। बौद्ध संघों में भिक्षु और भिक्षुणियाँ दोनों रहते थे, परंतु उन्हें आचरण में शुद्धता लानी पड़ती थी। उन्हें विलासमय जीवन से दूर रहना पड़ता था और आजीवन विवाह नहीं करना होता था।

प्रश्न 21. 'जिन' शब्द से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—जैन पौराणिक गाथाओं में 'जिन' शब्द का अर्थ है—महान् विजयी। महावीर स्वामी को 'जिन' का नाम दिया गया है, क्योंकि उन्होंने सुख और दुःख पर विजय प्राप्त कर लिया था।

प्रश्न 22. किसने बुद्ध को संघ में महिलाओं के प्रवेश हेतु राजी किया तथा पहली बनी भिक्षुणी का नाम लिखिए।

उत्तर—बौद्ध ग्रंथों के अनुसार बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद ने बुद्ध को समझाकर महिलाओं के संघ में आने की अनुमति प्राप्त की।

बुद्ध की उपमाता, महाप्रजापति, गौतमी संघ में आने वाली पहली भिक्षुणी बनीं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न 23. मिलिन्दपन्हो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—यह बौद्ध ग्रंथ में बैक्ट्रियन और भारत के उत्तर पश्चिमी भाग पर शासन करने वाले हिन्दू यूनानी सम्राट मैनेण्डर एवं प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु नागसेन के संवाद का वर्णन दिया गया है। इसमें ईसा की पहली दो शताब्दियों के उत्तर-पश्चिम भारतीय जीवन की झलक देखने को मिलती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. साँची क्यों बच गया जबकि अमरावती नष्ट हो गया ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अमरावती की खोज शायद साँची से थोड़े पहले हो गई थी। तब तक विद्वान इस बात के महत्व को नहीं समझ पाए थे कि किसी पुरातात्विक अवशेष को उठाकर ले जाने की बजाय खोज की जगह पर ही संरक्षित करना अधिक महत्वपूर्ण था। 1818 में जब साँची की खोज हुई, इसके तीन तोरणद्वार तब भी खड़े थे। और चौथा वहीं पर गिरा हुआ था व टीला भी अच्छी हालत में था। तब भी यह सुझाव आया कि तोरणद्वारों को पेरिस या लंदन भेज दिया जाये। अंतत: कई कारणों से साँची का स्तूप वहीं बना रहा। इसलिए यह आज भी बना हुआ है जबकि अमरावती का महाचैत्य अब सिर्फ एक छोटा-सा टीला है जिसका सारा गौरव नष्ट हो चुका है।

प्रश्न 2. बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म की शिक्षाओं में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म की शिक्षाओं में निम्नलिखित अंतर देखने को मिलता है, जो इस प्रकार है—

बौद्ध धर्म	जैन धर्म
1. बौद्ध धर्म ईश्वर के अस्तित्व के विषय में मौन है।	1. जैन धर्म ईश्वर के अस्तित्व को बिल्कुल नहीं मानता।
2. पूजा-पाठ, भजन कीर्तन, कर्म के समक्ष व्यर्थ है।	2. प्रार्थना कुछ भी नहीं है, तप और व्रत ही मोक्ष प्राप्ति के साधन हैं।
3. मोक्ष प्राप्ति हेतु अच्छे कर्म और पवित्र जीवन पर बल देता है।	3. मोक्ष प्राप्ति के लिए त्रिरत्न पर बल देता है— (i) सम्यक् ज्ञान, (ii) सम्यक् कर्म तथा (iii)अहिंसा।
4. बौद्ध धर्म का विस्तार देश-विदेश दोनों स्थानों पर हुआ। एशिया के कई देश इसकी छाया में आ गये थे।	4. जैन धर्म केवल भारत में ही पनपा, विदेशों में नहीं।
5. अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। यज्ञ आदि में इनका विश्वास नहीं है।	5. ये अहिंसा पर अत्यधिक बल देते हैं तथा जड़ पदार्थों में जीवन का आभास करते हैं।
6 संघ को धर्म का प्रचार माध्यम बनाता है, मठों में अध्ययन-अध्यापन का कार्य होता है।	6. इनके संघ नहीं होते, परंतु धर्म के प्रचार के लिए प्रचारक होते हैं।

प्रश्न 3. साँची और भरहुत के प्रारंभिक स्तूपों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—साँची और भरहुत के प्रारंभिक स्तूप बिना अलंकरण के हैं। इनमें केवल पत्थर की वेदिकाएँ और तोरणद्वार ही बने हैं। पत्थर की ये वेदिकाएँ किसी बाँस या काठ के घेरे के समान थीं परंतु चारों दिशाओं में खड़े तोरणद्वार पर खूब नक्काशी की गई थी। उपासक पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करके टीले को दाईं ओर रखते हुए दक्षिणावर्त परिक्रमा करते थे। ऐसा लगता था जैसे वे आकाश में सूर्य के पथ का अनुकरण कर रहे हों। बाद में स्तूप के टीले पर भी अलंकरण और नक्काशी की जाने लगी।

प्रश्न 4. महात्मा बुद्ध अथवा बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर—महात्मा बुद्ध अथवा बौद्ध धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) बौद्ध दर्शन के अनुसार विश्व अनित्य है। यह लगातार बदल रहा है। यह आत्मविहीन (आत्मा) है क्योंकि यहाँ कुछ भी स्थायी अथवा शाश्वत् नहीं है। (2) इस क्षणभंगुर संसार में दु:ख मनुष्य के जीवन को जकड़े हुए है। घोर तपस्या व विषयाशक्ति के बीच मध्यम मार्ग अपनाकर मनुष्य संसार के दु:खों से मुक्ति पा सकता है। (3) बौद्ध धर्म की प्रारंभिक परंपराओं में भगवान का होना या न होना अप्रासंगिक था। (4) बुद्ध का मानना था कि समाज का निर्माण मनुष्यों ने किया था न कि ईश्वर ने। इसलिए उन्होंने राजाओं और गृहपतियों को दयावान और आचारवान बनने की सलाह दी। (5) बुद्ध के अनुसार व्यक्तिगत प्रयास से सामाजिक परिवेश को बदला जा

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

हुआ है। (6) बुद्ध ने जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति, आत्म-ज्ञान और निर्वाण के लिए सम्यक् कर्म पर बल दिया। (7) बौद्ध परंपरा के अनुसार अपने शिष्यों के लिए बुद्ध का अंतिम निर्देश यह था, "तुम सब अपने लिए स्वयं ही ज्योति बनो क्योंकि तुम्हें स्वयं ही अपनी मुक्ति का मार्ग ढूँढना है।"

प्रश्न 5. सुत्तपिटक ने बौद्ध धर्म (दर्शन) की पुनर्रचना किस प्रकार की है ?

उत्तर—सुत्तपिटक बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। भगवान बुद्ध की शिक्षाओं अथवा बौद्ध दर्शन को सुत्तपिटक में दी गई कहानियों के आधार पर पुनर्निर्मित किया गया है। हालाँकि कुछ कहानियों में उनकी अलौकिक शक्तियों का उल्लेख है, जो भी दूसरी कथाएँ दिखाती हैं कि अलौकिक शक्तियों के स्थान पर बुद्ध ने लोगों को विवेक एवं तर्क के आधार पर समझाने का प्रयास किया। उदाहरण—जब एक मृत बालक की शोक संतप्त माँ बुद्ध के पास आई तो उन्होंने बालक को जीवित करने की अपेक्षा उस महिला को मृत्यु के अवश्यंभावी होने की बात समझाई।

प्रश्न 6. बौद्ध त्रिपिटक के विषय में संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर—महात्मा बुद्ध लोगों को बातचीत और चर्चा करते हुए मौखिक रूप में शिक्षा देते थे। लोग इन प्रवचनों को सुनकर उन पर चर्चा अथवा बातचीत करते थे। बुद्ध के जीवनकाल में उनके किसी भी संभाषण को लिखा नहीं गया। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके शिष्यों ने सबसे वरिष्ठ श्रमणों की एक सभा वेसली अथवा वैशाली में बुलाई। यहाँ पर उनकी शिक्षाओं का संकलन किया गया। इन संग्रहों को 'त्रिपिटक' ग्रंथों को रखने के लिए 'तीन टोकरियाँ' कहा जाता था। इन टोकरियों अथवा त्रिपिटकों के नाम हैं—विनय पिटक, सुत्तपिटक तथा अभिधम्म पिटक। इन्हें पहले मौखिक रूप से ही प्रचारित किया गया था, परंतु बाद में लिखकर विषय और लंबाई के अनुसार वर्गीकरण कर दिया गया।

विनय-पिटक संघ या बौद्ध मठों में रहने वाले लोगों के लिए नियमों का संग्रह है। सुत्त-पिटक में बुद्ध की शिक्षाएँ रखी गईं। उनके दर्शन से जुड़े विषय अभिधम्म पिटक में शामिल हैं। हर पिटक के अंदर कई ग्रंथ होते थे। आगे चलकर बौद्ध विद्वानों ने इन ग्रंथों पर टीकाएँ लिखीं।

प्रश्न 7. गौतम बुद्ध पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—गौतम बुद्ध का जन्म 566 ई. पू. में कपिलवस्तु में हुआ। उनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। उनके पिता का नाम शुद्धोधन तथा माता का नाम महामाया था। गौतम बुद्ध के जन्म के कुछ ही दिनों पश्चात् उनकी माता का देहांत हो गया। उनके पिता ने गौतम के लिए एक सुन्दर महल बनवाया, परंतु महल की चारदीवारी में गौतम का दिल बहल न सका। अत: उनके पिता ने उनका विवाह राजकुमारी यशोधरा के साथ कर दिया। उनका एक पुत्र हुआ, परंतु फिर भी वे दु:खी रहने लगे। कुछ समय पश्चात् गौतम ने रोग, बुढ़ापा, मृत्यु आदि के दृश्य देखे। उन्होंने इन दुखों का कारण जानने हेतु अपना घर-बार त्याग दिया। उन्होंने छ: वर्ष तक घोर तपस्या भी की। अंत में वे 'गया' के समीप एक वट वृक्ष के नीचे समाधि लगाकर बैठ गए। चालीस दिन के बाद उन्हें सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ और वे 'बुद्ध' कहलाए। बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश बनारस के समीप सारनाथ में दिया। यहाँ पाँच अन्य व्यक्ति उनके शिष्य बने। बाद में इनके शिष्यों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली गयीं। 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर (देवरिया जिला) नामक स्थान पर उन्होंने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

प्रश्न 8. "बुद्ध के जीवनकाल में तथा उनकी मृत्यु के पश्चात् भी बौद्ध धर्म तेजी से फैला।" इस कथन का औचित्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—बुद्ध के बौद्ध धर्म के तेजी से फैलने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(1) लोग समकालीन धार्मिक प्रथाओं से असंतुष्ट थे। वे उस युग में तेजी से हो रहे सामाजिक बदलावों के कारण उलझन में थे। (2) बौद्ध धर्म में जन्म के आधार पर श्रेष्ठता की अपेक्षा अच्छे आचरण व मूल्यों को महत्व दिया जाता था। इस बात से लोग बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुए। (3) बौद्ध धर्म के छोटे व कमजोर लोगों के प्रति मित्रता एवं करुणा के भाव ने भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। (4) बुद्ध संघ में महिलाओं के प्रवेश से बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई। (5) बुद्ध अपने युग के सबसे प्रभावशाली शिक्षकों में से एक थे। सैकड़ों वर्षों के दौरान उनके संदेशों को पूरे उपमहाद्वीप में और उसके बाद मध्य एशिया होते हुए चीन, कोरिया, जापान, श्रीलंका, म्यांमार, थाइलैंड तथा इंडोनेशिया तक फैल गए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न 9. क्या उपनिषदों के दार्शनिकों के विचार नियतिवादियों और भौतिकवादियों से भिन्न थे ? अपने जवाब के पक्ष में तर्क दीजिए। (NCERT)

उत्तर—हाँ, उपनिषदों के दार्शनिकों के विचार नियतिवादियों तथा भौतिकवादियों से भिन्न थे। इनकी भिन्नता का प्रमुख आधार निम्नलिखित है—

नियतिवादियों तथा भौतिकवादियों के विचार—नियतिवादी मानते थे कि मनुष्य के सुख-दुःख निर्धारित मात्रा में दिए गए हैं। इन्हें संसार में बदला नहीं जा सकता है। बुद्धिमान सोचते हैं कि ये सद्गुणों व तपस्या द्वारा अपने कर्मों से मुक्ति प्राप्त कर लेगा। परंतु यह संभव नहीं है कि मनुष्य को अपने सुख-दुःख भोगने ही पड़ते हैं।

इसी प्रकार भौतिकवादी मानते हैं कि संसार में दान, यज्ञ या चढ़ावा जैसी कोई वस्तु नहीं है। दान देने का सिद्धांत झूठा और खोखला है। मृत्यु के बाद तो कुछ बचता ही नहीं है। मूर्ख हो या विद्वान दोनों ही कटकर नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य जिन चार तत्वों से बना है वे संसार के उन्हीं तत्वों में मिल जाता है।

उपनिषदों के दार्शनिक विचार—यहाँ दिए गए विचारों में 'आत्मा' तथा 'परमात्मा' का कोई स्थान नहीं है। इसके विपरीत उपनिषदों के अनुसार मानव-जीवन का लक्ष्य 'आत्मा' को 'परमात्मा' (परम ब्रह्म) में विलीन कर स्वयं परम ब्रह्म हो जाना है।

प्रश्न 10. जैन धर्म की महत्वपूर्ण शिक्षाओं को संक्षेप में लिखिए। (NCERT)

उत्तर—जैन धर्म की महत्वपूर्ण शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) जैन धर्म की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा यह है कि सारा संसार सजीव है तथा यह माना जाता है कि पत्थर, चट्टान व जल में भी जीवन होता है। (2) जैन साधु और साध्वी पाँच व्रत करते थे—(i) हत्या न करना, (ii) चोरी न करना, (iii) झूठ न बोलना, (iv) ब्रह्मचर्य का पालन करना, तथा (v) धन संग्रह न करना। (3) जीवों के प्रति अहिंसा विशेषकर मनुष्यों, जानवरों, पेड़-पौधों और कीड़े-मकोड़ों को न मारना जैन दर्शन का केन्द्र बिंदु है। जैन मत के अहिंसा के इस सिद्धांत ने संपूर्ण भारतीय चिंतन को प्रभावित किया है। (4) जैन धर्म अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के द्वारा निर्धारित होता है। इस चक्र से मुक्ति पाने के लिए त्याग और तपस्या की आवश्यकता होती है। यह संसार के त्याग से ही संभव हो पाता है। इसलिए मुक्ति के लिए मनुष्य को संसार का त्याग करके विहारों में निवास करना चाहिए।

प्रश्न 11. साँची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की भूमिका की चर्चा कीजिए। (NCERT)

उत्तर—साँची के स्तूप के अवशेषों के संरक्षण में भोपाल की बेगमों का निम्नलिखित योगदान रहा—

(1) पहले फ्रांसीसियों ने और बाद में अंग्रेजों ने साँची के पूर्वी तोरणद्वार को अपने-अपने देश में ले जाने की कोशिश की। परंतु भोपाल की बेगमों ने उन्हें स्तूप की प्लास्टर प्रतिकृतियों से संतुष्ट कर दिया। (2) शाहजहाँ बेगम और उनकी उत्तराधिकारी सुल्तान जहाँ बेगम ने इस प्राचीन स्थल के रख-रखाव के लिए धन का अनुदान दिया। (3) साँची का स्तूप बौद्ध धर्म का सबसे अधिक महत्वपूर्ण केन्द्र है। इसने आरंभिक बौद्ध धर्म को समझने में बहुत सहायता की है। (4) सुल्तान जहाँ बेगम ने वहाँ एक संग्रहालय तथा अतिथिशाला बनाने के लिए अनुदान दिया। (5) बेगमों द्वारा समय पर लिए गए विवेकपूर्ण निर्णय ने साँची के स्तूप को उजड़ने से बचा लिया। यदि ऐसा न होता तो इसकी दशा भी अमरावती के स्तूप जैसी होती। (6) जॉन मार्शल ने साँची पर लिखे अपने महत्वपूर्ण ग्रंथ सुल्तानजहाँ को समर्पित किए। इनके प्रकाशन पर बेगमों ने धन लगाया।

प्रश्न 12. निम्नलिखित संक्षिप्त अभिलेख को पढ़िए और जवाब दीजिए—

महाराज हुविष्क (एक कुषाण शासक) के तैंतीसवें साल में गर्म मौसम के पहले महीने के आठवें दिन त्रिपिटक जानने वाले भिक्षु बल की शिष्या, त्रिपिटक जानने वाली बुद्धमिता के बहन की बेटी भिक्षुणी धनवती ने अपने माता-पिता के साथ मधुवनक में बोधिसत्त की मूर्ति स्थापित की।

(1) धनवती ने अपने अभिलेख की तारीख कैसे निश्चित की ? (2) आपके अनुसार उन्होंने बोधिसत्त की मूर्ति क्यों स्थापित की ? (3) वे अपने किन रिश्तेदारों का नाम लेती हैं ? (4) वे कौन से बौद्ध ग्रंथों को जानती थीं ? (5) उन्होंने ये पाठ किससे सीखे थे ? (NCERT)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

यह परंपरा अलग-अलग चरणों में विकसित होती रही। इसका सबसे विकसित रूप हमें आठवीं शताब्दी के कैलाशनाथ मंदिर में दिखता है। जहाँ पूरी पहाड़ी को काटकर उसे मंदिर का रूप दिया गया था। एक ताम्रपत्र अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस मंदिर का मुख्य वास्तुकार (मूर्तिकार) भी मंदिर को बनाकर आश्चर्यचकित रह गया था। वह वास्तुकार अपने आश्चर्य को इन शब्दों में व्यक्त करता है, "हे भगवान, यह मैंने कैसे बनाया।"

इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि वैष्णववाद और शैववाद के उदय ने मूर्तिकला तथा वास्तुकला के विकास को अत्यधिक प्रोत्साहित किया।

तार्किक एवं समझ पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. स्तूप क्यों और कैसे बनाए जाते थे ?

उत्तर—स्तूप बौद्ध धर्म से जुड़ा एक स्मारक है, स्तूप को बौद्ध धर्मावलंबी एक पवित्र स्थान मानते हैं। जिन स्थानों पर बोधिसत्वों एवं बुद्ध से जुड़े कुछ अवशेष जैसे उनकी अस्थियाँ या उनके द्वारा प्रयुक्त सामान गाड़ दिये गये थे। इन टीलों को स्तूप कहते थे। स्तूप बनाने की परंपरा बुद्ध से पहले की रही होगी लेकिन वह बौद्ध धर्म से जुड़ गई। स्तूपों को बनाने के लिए कई राजाओं के द्वारा दान दिया गया जैसे सातवाहन वंश के राजा, इसके अलावा अशोक ने भी अपने राज्य में अनेक स्तूपों का निर्माण करवाया। स्तूप निर्माण के लिए दान शिल्पकारों और व्यापारियों की श्रेणियों द्वारा दिए गए। स्तूप का संस्कृत अर्थ टीला होता है जो एक गोलार्द्ध के रूप में होता है शुरू में यह मिट्टी के टीले के रूप में विकसित हुआ परंतु धीरे-धीरे इसकी संरचना जटिल होती गई और यह चौकोर, गोल और अर्द्धअण्डाकार रूप लेने लगा।

●●

भाग-2

अध्याय 4

भक्ति-सूफ़ी परंपराएँ—धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ

(लगभग आठवीं से अठारहवीं सदी तक)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. वैदिक देवकुल के अंतर्गत किन देवताओं की पूजा की जाती थी—
   (a) इंद्र (b) अग्नि (c) सोम (d) उपरोक्त सभी।
2. नयनार संत उपासना करते थे—
   (a) विष्णु की (b) शिव की (c) इंद्र की (d) कृष्ण की।
3. विष्णु भक्त संत क्या कहलाते थे—
   (a) अलवार (b) नयनार (c) वीरशैव (d) जिम्मी।
4. वीरशैव परंपरा के अनुयायी क्या कहलाए—
   (a) नयनार (b) अलवार (c) योगी (d) लिंगायत।
5. दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई—
   (a) बारहवीं शताब्दी में (b) तेरहवीं शताब्दी में
   (c) चौदहवीं शताब्दी में (d) दसवीं शताब्दी में।
6. इस्लामी शासकों के अधीन संरक्षित श्रेणी को कौन-सा कर देना पड़ता था—
   (a) जज़िया (b) ज़कात (c) शुक्राना (d) हज।
7. तजाकिस्तान से भारत आए लोगों को क्या नाम दिया गया—
   (a) तुरूष्क (b) ताजिक (c) यहूदी (d) पारसीक।

Scanned with CamScanner

8. भारत में आने वाला सबसे प्रभावशाली सूफ़ी सिलसिला था—
(a) चिश्ती (b) सुहरावर्दी (c) कादिरी (d) फिरदौसी।

9. वैष्णवी परंपरा की जीवनियों के अनुसार कबीरदास के गुरु थे—
(a) रामदास (b) रैदास (c) रामानंद (d) बाबा फ़रीद।

10. पहले सिख गुरु थे—
(a) गुरुनानक देव (b) गुरु अंगद देव (c) गुरु तेगबहादुर (d) गुरु गोबिंद सिंह।

उत्तर—1. (d), 2. (b), 3. (a), 4. (d), 5. (b), 6. (a), 7. (b), 8. (a),9. (c), 10. (a).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. महान और लघु परंपरा जैसे शब्द ..... ने प्रयुक्त किए।
2. ..... काव्य संकलन को तमिल वेद के रूप में जाना जाता है।
3. शेख मुइनुद्दीन की दरगाह में इमारत ..... ने बनवायी थी।
4. अमीर खुसरो ..... के शिष्य थे।
5. कबीर भक्ति परंपरा की ..... के कवि थे।
6. मीराबाई राजस्थान के ..... राज्य की राजकुमारी थी।

उत्तर—1. समाजशास्त्री राबर्ट रेडफील्ड, 2. नलयिरादिव्यप्रबंधम, 3. गियासुद्दीन खिलजी, 4. शेख निज़ामुद्दीन औलिया, 5. निर्गुण भक्ति शाखा, 6. मेड़ता।

प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़िए—

(अ)	(ब)
1. अलवार	(a) अमूर्त, निराकार ईश्वर
2. नयनार	(b) दिल्ली
3. निर्गुण भक्ति परंपरा	(c) विष्णु भक्त
4. वीरशैव या लिंगायत	(d) बासवन्ना
5. शेख मुइनुद्दीन चिश्ती	(e) शिव भक्त
6. शेख निजामुद्दीन औलिया	(f) अजमेर।

उत्तर—1. (c), 2. (e), 3. (a), 4. (d), 5. (f), 6. (b).

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए—

1. भक्ति परंपरा को दो प्रमुख वर्गों—सगुण और निर्गुण में बाँटा गया है।
2. आरंभिक भक्ति आंदोलन बासवन्ना के नेतृत्व में हुए।
3. अलवार व नयनार ने ब्राह्मणों की सम्प्रभुता का समर्थन किया।
4. इस्लाम धर्म के ज्ञाता व संरक्षक उलमा कहलाते थे।
5. सूफ़ी परंपरा का विकास ग्यारहवीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ।
6. शेख निजामुद्दीन औलिया का खानकाह दिल्ली के गियासपुर नामक स्थान में था।
7. बारहवीं शताब्दी के आसपास सूफ़ी सिलसिलों का गठन प्रारंभ हो गया।
8. अकबर ने शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह की सोलह बार यात्रा की।
9. मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित प्रेमाख्यान का नाम पद्मावत है।
10. अमीर खुसरो शेख मुइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे।

उत्तर— 1. सत्य, 2. असत्य, 3. असत्य, 4. सत्य, 5. असत्य, 6. सत्य, 7. सत्य, 8. असत्य, 9. सत्य, 10. असत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. वैदिक देवकुल के अंतर्गत किन देवताओं की पूजा की जाती थी ?
2. नयनार संत किसकी उपासना करते थे ?
3. विष्णु भक्त संत क्या कहलाते थे ?

Scanned with CamScanner

4. वीरशैव परंपरा के अनुयायी क्या कहलाए ?
5. दिल्ली सल्तनत की स्थापना कब हुई ?
6. इस्लामी शासकों के अधीन संरक्षित श्रेणी को कौन-सा कर देना पड़ता था ?
7. ताजिकिस्तान से भारत आए लोगों को क्या नाम दिया गया ?
8. भारत में आने वाला सबसे प्रभावशाली सूफी सिलसिला कौन था ?
9. वैष्णवी परंपरा की जीवनियों के अनुसार कबीरदास के गुरु कौन थे ?
10. पहले सिख गुरु कौन थे ?
11. बारहवीं शताब्दी में उड़ीसा के मुख्य देवता जगन्नाथ को किसका स्वरूप माना गया ?
12. "महान" और "लघु" परंपरा जैसे शब्द किस इतिहासकार ने प्रयुक्त किए ?
13. भक्ति परंपरा को किन दो वर्गों में बाँटा गया है ?
14. किस शिवभक्त स्त्री ने उद्देश्य प्राप्ति हेतु घोर तपस्या की ?
15. किस चोल सम्राट ने संत कवि अप्पार संबंदर व सुंदरार की प्रतिमाएँ शिव मंदिर में स्थापित करवायी ?
16. वीरशैव आंदोलन किसके नेतृत्व में हुआ ?
17. मुसलमानों के धर्मगुरुओं को क्या कहा जाता था ?
18. सूफियों की संस्था को किस नाम से जाना जाता था ?
19. बाबा गुरुनानक ने किसे अपने बाद गुरुपद पर बिठाया ?

उत्तर—1. इंद्र, अग्नि, सोम, 2. शिव की, 3. अलवार, 4. लिंगायत, 5. तेरहवीं शताब्दी में, 6. जज़िया, 7. ताजिक, 8. चिश्ती, 9. रामानंद, 10. गुरुनानक देव, 11. विष्णु, 12. राबर्ट रेडफील्ड, 13. सगुण (विशेषण युक्त) व निर्गुण (विशेषणहीन), 14. करइक्काल अम्मइयार, 15. परांतक प्रथम, 16. बासवन्ना, 17. उलमा, 18. ख़ानकाह, 19. अंगद।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. आठवीं से अठारहवीं शताब्दी तक प्राप्त साहित्यिक स्रोतों की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—विशेषताएँ—(1) आठवीं से अठारहवीं शताब्दी तक प्राप्त साहित्यिक स्रोतों में संत कवियों की रचनाएँ हैं, जिन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं में अपनी रचनाओं को व्यक्त किया था। (2) अधिकांश साहित्यिक स्रोत संगीतबद्ध हैं, जो संतों की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयायियों द्वारा संकलित किए गए थे।

प्रश्न 2. तांत्रिक पूजा पद्धति क्या थी? इसकी दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—अधिकांशत: देवी की आराधना पद्धति को तांत्रिक पद्धति के नाम से जाना जाता है। यह पूजा पद्धति देश के कई भागों में प्रचलित थी। इसकी दो विशेषताएँ हैं—(1) इस पूजा-पद्धति में स्त्री और पुरुष दोनों शामिल हो सकते थे। (2) इस पद्धति के कर्मकांडीय संदर्भ में वर्ग और वर्ण भेद की अवहेलना की जाती थी।

प्रश्न 3. भक्ति परंपरा के दो मुख्य वर्ग कौन-से थे ?

उत्तर—भक्ति परंपरा के दो मुख्य वर्ग थे—

1. सगुण (विशेषण सहित) भक्ति परंपरा—इस परंपरा में शिव, विष्णु तथा उनके अवतार व देवियों की आराधना की जाती थी।

2. निर्गुण (विशेषण हीन) भक्ति परंपरा—इस परंपरा में निर्गुण, निराकार ईश्वर की उपासना की जाती थी।

प्रश्न 4. अलवार संतों की किस रचना को तमिल वेद जितना महत्वपूर्ण बताया गया है ?

उत्तर—अलवार संतों के एक मुख्य काव्य संकलन ' नलयिरादिव्यप्रबंधम् ' का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता है। इस ग्रंथ का महत्व संस्कृत के चारों वेदों जितना बताया गया था, जो ब्राह्मणों द्वारा पोषित थे।

प्रश्न 5. अलवार व नयनार संतों द्वारा चलाए गए भक्ति आंदोलन की कोई दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—भक्ति आंदोलन की दो प्रमुख विशेषताएँ थीं—(1) भक्ति आंदोलन द्वारा अलवार व नयनार संतों ने जाति प्रथा तथा ब्राह्मणों के प्रभुत्व के विरोध में आवाज उठाई। (2) इस परंपरा की सबसे प्रमुख विशिष्टता इसमें स्त्रियों की उपस्थिति थी।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 6. अलवार व नयनार संतों के भक्ति साहित्यों का किस प्रकार संकलन किया गया?

उत्तर—दसवीं शताब्दी तक बारह अलवार संतों की रचनाओं का संकलन कर लिया गया, जो नलयिरादिव्यप्रबंधम् (चार हजार पावन रचनाएँ) के नाम से जाना जाता है। दसवीं शताब्दी में ही अप्पार संबंदर और सुंदरार नामक नयनार संतों की कविताओं का संकलन "तवरम्" में किया गया, जिसमें कविताओं का संगीत के आधार पर वर्गीकरण हुआ।

प्रश्न 7. चौदहवीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में कोई संत रचनाएँ क्यों नहीं लिखी गईं?

उत्तर—चौदहवीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में वह समय था, जब अनेक राजपूत राज्यों का उद्भव हुआ। इन सभी राज्यों में ब्राह्मणों का महत्वपूर्ण स्थान था, जो ऐहिक तथा आनुष्ठानिक दोनों ही कार्य करते थे। उनकी इस प्रभुसत्ता को चुनौती देने का प्रयास शायद ही किसी ने किया, इसलिए चौदहवीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में कोई संत रचनाएँ नहीं लिखी गईं।

प्रश्न 8. उल्मा किसे कहते थे?

उत्तर—उल्मा (आलिम का बहुवचन) इस्लाम धर्म के ज्ञाता थे। इस्लाम धर्म के संरक्षक होने के नाते वे धार्मिक, कानूनी और अध्यापन संबंधी जिम्मेदारी निभाते थे।

प्रश्न 9. 'जिम्मी' किन्हें कहा जाता था ?

उत्तर—'जिम्मी' शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द जिम्मा से हुई है, जिसका अर्थ संरक्षित क्षेत्र होता है। जिम्मी मुसलमान शासन क्षेत्र में रहने वाले संरक्षित समुदाय थे। जिम्मी वे लोग थे जो उद्घटित धर्मग्रंथ को मानने वाले थे, जैसे इस्लामी शासकों के क्षेत्र में रहने वाले यहूदी और ईसाई। ये लोग मुस्लिम शासकों को उनके द्वारा दिए गए संरक्षण के बदले में जजिया नामक कर चुकाते थे।

प्रश्न 10. जीनन क्या है?

उत्तर—जीनन (व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द ज्ञान से) वे भक्ति गीत थे, जो राग में निबद्ध थे तथा पंजाबी, मुल्तानी, सिंधी, कच्छी, हिंदी और गुजराती भाषाओं में दैनिक प्रार्थना के दौरान गाए जाते थे।

प्रश्न 11. तमिलनाडु में भक्ति आंदोलन की दो प्रमुख स्त्री संतों के नाम लिखिए।

उत्तर— तमिलनाडु में भक्ति आंदोलन के दो प्रमुख स्त्री संत थे—

(1) अंडाल, जो स्वयं को विष्णु की प्रेयसी मानकर अपनी प्रेमभावना छंदों में व्यक्त करती थीं। (2) कर-इक्काल अम्मइयार, जो शिवभक्त थीं। इन्होंने अपनी उद्देश्य प्राप्ति के लिए घोर तपस्या का मार्ग अपनाया।

प्रश्न 12. जोगी कौन थे?

उत्तर—जोगी गोरखनाथ तथा अघोरनाथ के शिष्य थे। ये उत्तरी भारत में बहुत ही लोकप्रिय थे। सूफी संतों पर भी इनका बहुत प्रभाव था।

प्रश्न 13. भारतीय परंपरा में भक्ति का क्या स्थान था ?

उत्तर—भारतीय परंपरा में भक्ति को साधना का एक अंग माना गया। इसके द्वारा मनुष्य ईश्वर को पा सकता है। भगवद्गीता में स्वयं भगवान कृष्ण ने इस तथ्य की पुष्टि की है।

प्रश्न 14. सूफीवाद के अतिरिक्त कौन-से नवीन आंदोलन हुए, जिन्होंने इसके सिद्धांतों का विरोध किया ?

उत्तर—सूफीवाद के अतिरिक्त कुछ रहस्यवादियों ने सूफी सिद्धांतों व खानकाह का तिरस्कार करके रहस्यवादी फकीर की जिंदगी का अनुसरण किया। इन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता था, जैसे—कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी आदि।

प्रश्न 15. भारत में चिश्ती समुदाय की लोकप्रियता का क्या कारण था ?

उत्तर—बारहवीं शताब्दी के अंत तक भारत आने वाले सूफी समुदायों में चिश्ती समुदाय सबसे अधिक लोकप्रिय रहा। इसका कारण यह था कि उन्होंने न केवल अपने आपको स्थानीय परिवेश में अच्छी तरह ढाला बल्कि भारतीय भक्ति परंपरा की कई विशिष्टताओं को भी अपनाया।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 16. प्रमुख सूफ़ी सिलसिलों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारत आने वाले प्रमुख सूफ़ी सिलसिले थे—चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरी, फिरदौसी, हबीबी, जुनैदी, शत्तारी, इत्यादी आदि।

प्रश्न 17. किन्हीं पाँच प्रमुख चिश्ती संतों के नाम लिखिए।

उत्तर—पाँच प्रमुख चिश्ती संतों के नाम हैं—(1) शेख मुइनुद्दीन चिश्ती, (2) ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी, (3) शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर, (4) शेख निज़ामुद्दीन औलिया, (5) शेख नसीरूद्दीन चिराग-ए-देहली।

प्रश्न 18. ख़्वाजा मुइनुद्दीन की दरगाह क्यों प्रसिद्ध थी?

उत्तर—ख़्वाजा मुइनुद्दीन की दरगाह निम्नलिखित कारणों से प्रसिद्ध थी—

(1) यह दरगाह शेख मुइनुद्दीन की सदाचारिता और धर्मनिष्ठा तथा उनके आध्यात्मिक वारिसों की महानता और राजसी मेहमानों द्वारा दिए गए प्रश्रय के कारण लोकप्रिय थी। (2) यह दरगाह दिल्ली और गुजरात को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग पर थी, अत: अनेक यात्री यहाँ आते थे।

प्रश्न 19. मसनवी क्या थी?

उत्तर—मसनवी सूफ़ी संतों द्वारा लिखी गई लंबी कविताएँ थीं, जहाँ ईश्वर के प्रति प्रेम को मानवीय प्रेम के रूपक के द्वारा अभिव्यक्त किया गया।

प्रश्न 20. अकबर ने ख़्वाजा मुइनुद्दीन की दरगाह की कितने बार यात्रा की और क्यों ?

उत्तर—अकबर ने ख़्वाजा मुइनुद्दीन की दरगाह की चौदह बार यात्राएँ कीं, जिनके उद्देश्य अलग-अलग थे। अकबर ने यहाँ कभी नयी जीत के लिए आशीर्वाद लेने तथा संकल्प की पूर्ति पर या फिर पुत्रों के जन्म पर यात्राएँ की।

प्रश्न 21. कबीर की उलटबाँसी रचनाओं का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—कबीर की कुछ रचनाएँ उलटबाँसी कविताएँ कहलाती हैं। ये इस प्रकार से लिखी गई हैं कि इनमें रोजमर्रा के अर्थ को उलट दिया गया है। ये रचनाएँ परमसत्य के स्वरूप को समझने में मुश्किल को दर्शाता है।

प्रश्न 22. सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव को उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर—सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव के कुछ उदाहरण उपलब्ध हैं। अपनी सत्ता का दावा करने के लिए दोनों ही कुछ आचारों पर बल देते थे, जैसे—झुककर प्रणाम करना और कदम चूमना। कभी-कभी शेखों के अनुयायी उन्हें आडंबरपूर्ण पदवियों से संबोधित करते थे।

प्रश्न 23. खालसा पंथ की नींव किसने रखी ? इसके पाँच प्रतीक क्या थे ?

उत्तर—खालसा पंथ की नींव सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिन्द सिंह जी ने डाली थी। उन्होंने इसके पाँच प्रतीक बताए थे—बिना कटे केश, कृपाण, कच्छ, कंघा और लोहे का कड़ा।

प्रश्न 24. बासवन्ना कौन थे ?

उत्तर—बासवन्ना (1106-68) कलचुरि राजा के दरबार में पदस्थ एक ब्राम्हण मंत्री थे, जिन्होंने कर्नाटक में वीरशैव अथवा लिंगायत परंपरा को प्रारंभ किया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महान और लघु परंपरा से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—"महान" और "लघु" जैसे शब्द बीसवीं शताब्दी के समाजशास्त्री **राबर्ट रेडफील्ड** द्वारा एक कृषक समाज के सांस्कृतिक आचरणों का वर्णन करने के लिए मुद्रित किए गए। इस समाजशास्त्री ने निम्न प्रकार से महान व लघु परंपरा को परिभाषित किया—

महान परंपरा—रेडफील्ड ने देखा कि किसान उन कर्मकांडों और पद्धतियों का अनुसरण करते थे जिनका समाज के प्रभुत्वशाली वर्ग जैसे पुरोहित और राजा द्वारा पालन किया जाता था। इन्हीं कर्मकांडों को महान परंपरा की संज्ञा दी गई।

Scanned with CamScanner

लघु परंपरा—कृषक समुदाय द्वारा कुछ अन्य लोकाचारों का पालन करते थे, जो महान परिपाटी से संबंधा भिन्न थे। इन्हें "लघु परंपरा" की संज्ञा दी गई।

रेडफील्ड ने देखा कि महान और लघु दोनों परंपराओं में समय के साथ हुए पारस्परिक आदान-प्रदान के कारण परिवर्तन हुए। यद्यपि विद्वान इन प्रक्रियाओं और वर्गीकरण के महत्व से इनकार नहीं करते, किंतु इन शब्दों में उभरे पद सोपानात्मक स्वर का विरोध करते हैं।

प्रश्न 2. प्रारंभिक भक्ति परंपराओं की मुख्य विशेषता क्या थी ?

उत्तर—प्रारंभिक भक्ति परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं—

(1) इस काल में आराधना के तरीकों के क्रमिक विकास के दौरान बहुत बार संत कवि ऐसे नेता के रूप में उभरे जिनके आस-पास भक्तजनों के एक पूरे समुदाय का गठन हो गया। (2) यद्यपि इस समय भी ब्राह्मण ही देवताओं और भक्तजनों के बीच मध्यस्थ का कार्य करते रहें, किंतु इन परंपराओं ने स्त्रियों और निम्न वर्णों को भी स्वीकृति व स्थान दिया। (3) भक्ति परंपरा की एक और विशेषता इसकी विविधता है। धर्म के इतिहासकार भक्ति परंपरा को दो मुख्य वर्गों में बाँटते हैं—सगुण(विशेषण सहित) और निर्गुण (विशेषण हीन)। सगुण परंपरा में विष्णु, शिव या देवियों के मूर्त रूप की उपासना होती थी, जबकि निर्गुण परम्परा में ईश्वर के निराकार रूप की उपासना की जाती थी। (4) भक्ति परंपरा के भक्ति प्रदर्शन में, मंदिरों में इष्टदेव की आराधना को लेकर उपासकों का प्रेमभाव में तल्लीन हो जाना दिखाई पड़ता है। भक्ति रचनाओं का उच्चारण अथवा गाया जाना इस उपासना पद्धति के मुख्य अंश थे।

प्रश्न 3. उत्तरी भारत में नवीन धार्मिक परंपराओं के उदय पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—उत्तरी भारत में विष्णु और शिव जैसे देवताओं की उपासना मंदिरों में की जाती थी, जिनका निर्माण शासकों की सहायता से किया जाता था। किंतु फिर भी इस क्षेत्र में ब्राह्मणों की प्रभुसत्ता को चुनौती देने का प्रयास किसी ने नहीं किया। इसका कारण यह था कि इस काल में उत्तर भारत में राजपूतों का शासन था, जिनके राज्य में ब्राह्मणों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

इसी समय कुछ धार्मिक नेता, जो रूढ़िवादी ब्राह्मणीय परंपराओं के विरोधी थे, उनके प्रभाव में विस्तार हो रहा था। ऐसे नेताओं में नाथ जोगी और सिद्ध शामिल थे। उनमें से बहुत् से लोग शिल्पी समुदाय के, जिनमें जुलाहे शामिल थे। संयोजित दस्तकारी के उत्पादन के साथ इनका महत्व बढ़ रहा था। अनेक नवीन धार्मिक नेताओं ने वैदिक सत्ता को चुनौती दी और अपने विचार आम लोगों की भाषा में रखे। समय के साथ यह भाषाएँ भी उसी प्रकार विकसित हुईं, जिस प्रकार आज प्रयोग में लाई जाती हैं। किंतु अपनी लोकप्रियता के बाद भी ये नवीन धार्मिक नेता राजकीय प्रक्षय प्राप्त नहीं कर पाए।

प्रश्न 4. अमीर खुसरो कौन था? उन्होंने किस विधा का प्रचलन प्रारंभ किया ?

उत्तर—अमीर खुसरो (1253 – 1323) चौदहवीं सदी के लगभग दिल्ली के निकट रहने वाले एक प्रसिद्ध कवि, गायक और संगीतज्ञ थे। अमीर खुसरो पहले ऐसे मुस्लिम कवि थे, जिन्होंने हिंदी, हिंदवी और फारसी में एक साथ कविताएँ लिखी। अमीर खुसरो शेख निजामुद्दीन औलिया के अनुयायी थे। उन्होंने कौल (अरबी शब्द जिसका अर्थ है कहावत) का प्रचलन करके चिश्ती समा को एक विशिष्ट आकार दिया। कौल को कव्वाली के शुरू और आखिर में गाया जाता था। इसके बाद सूफ़ी कविता का पाठ होता था, जो फारसी, हिंदवी तथा उर्दू में होती थी। और कभी-कभी इन तीनों ही भाषाओं के शब्द इसमें मौजूद होते थे। शेख निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह पर गाने वाले कव्वाल गायन की शुरुआत कौल से करते हैं।

प्रश्न 5. सूफ़ी और भक्ति संप्रदाय के विचारों में क्या समानताएँ थीं ?

उत्तर—सूफ़ी और भक्ति संप्रदाय के विचारों में समानताएँ—भक्ति आंदोलन का प्रारंभ छठवीं शताब्दी में अलवारों (विष्णु भक्त) और नयनारों (शिवभक्त)के नेतृत्व में हुआ, जबकि सूफ़ीवाद का विकास ग्यारहवीं शताब्दी के दौरान हुआ। इन दोनों ही परंपराओं में निम्नलिखित समानताएँ थीं—

(1) सूफ़ी और भक्ति संप्रदाय दोनों ही धार्मिक सरलता और शुद्धता पर बल देते हैं। (2) दोनों ही संप्रदायों ने जातिप्रथा का खंडन कर मनुष्य की समानता पर बल देते हैं। (3) दोनों ही संप्रदायों ने धार्मिक आडंबरों, रूढ़ियों,

Scanned with CamScanner

(2) मध्यकालीन पूर्वी भारत में सभी शादियाँ मंडल की उपस्थिति में होती थी। इस प्रकार जाति अवहेलना रोकने के लिए लोगों के आचरण पर नजर रखना गाँव के मुखिया की जिम्मेदारी थी।

(3) पंचायत और मुखिया समाज के नियमन तथा जातिगत रिवाजों की अवहेलना रोकने के लिए जुर्माना लगाने या समुदाय से निष्कासित करने जैसे कठोर दंड दे सकते थे। समुदाय से बाहर निकालना एक कड़ा कदम था, जो एक सीमित समय के लागू किए जाते थे। इसमें दंडित व्यक्ति को गाँव छोड़ना पड़ता था। इस दौरान वह अपनी जाति और पेशे से हाथ धो बैठता था।

(4) ग्राम पंचायत के अलावा गाँव में हर जाति की अपनी पंचायत होती थी। समाज में ये पंचायतें काफी ताकतवर होती थीं। राजस्थान की जाति पंचायतें अलग-अलग जातियों के बीच दीवानी के झगड़े निपटाती थीं, वे यह तय करते थे कि शादियाँ जातिगत मानदंडों के अनुसार हो रही हैं या नहीं, और यह भी कि गाँव के आयोजनों में कर्मकांडीय वर्चस्व किस क्रम में होगा।

(5) जाति पंचायतें अपने सदस्यों के हितों की रक्षा करती थीं और उनके साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती थी।

इस प्रकार ग्रामीण समाज के नियमन से संबंधित अधिकांश कार्य पंचायत और मुखिया द्वारा ही किए जाते थे। फौजदारी न्याय को यदि छोड़ दें तो ज्यादातर मामलों में राज्य पंचायतों के फैसलों को मानता था।

अध्याय 6

भाग-3

उपनिवेशवाद और देहात—सरकारी अभिलेखों का अध्ययन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के स्वरूप पर ब्रिटिश संसद में गंभीर वाद-विवाद का आधार बनी—
   (a) दूसरी रिपोर्ट (b) तीसरी रिपोर्ट (c) पाँचवीं रिपोर्ट (d) आठवीं रिपोर्ट।
2. 'पाँचवीं रिपोर्ट' ब्रिटिश संसद में पेश की गई—
   (a) सन् 1813 में (b) सन् 1858 में (c) सन् 1795 में (d) सन् 1770 में।
3. राजमहल के पहाड़िया लोगों का जीवन पूरी तरह निर्भर था—
   (a) व्यापार पर (b) जंगलों पर (c) नदियों पर (d) स्थायी खेती पर।
4. राजस्व एकत्रित करते समय जमींदार का जो अधिकारी होता था उसे कहते थे—
   (a) गुमाश्ता (b) अमला (c) चौकीदार (d) मुंशी।
5. पहाड़िया लोगों द्वारा की जाने वाली खेती कहलाती थी—
   (a) स्थायी खेती (b) मिश्रित खेती (c) झूम खेती (d) बागानी खेती।
6. 1820 के दशक में इंग्लैण्ड के एक जाने-माने अर्थशास्त्री थे—
   (a) एडम हार्वे (b) डेविड रिकार्डो (c) डेविड आर्थर (d) जॉन मिल्ज़।
7. 'दक्कन दंगा रिपोर्ट' ब्रिटिश पार्लियामेंट में पेश की गई—
   (a) सन् 1858 में (b) सन् 1862 में (c) सन् 1878 में (d) सन् 1778 में।
8. ब्रिटेन में कपास आपूर्ति संघ की स्थापना हुई—
   (a) सन् 1857 में (b) सन् 1859 में (c) सन् 1787 में (d) सन् 1757 में।

उत्तर— 1. (c), 2. (a), 3. (b), 4. (b), 5. (c), 6. (b), 7. (c), 8. (a).

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. ..... को सूपा विपणन केन्द्र (मंडी) का विद्रोह हुआ था।
2. जोतदार की जमीन पर खेती करने वाले किसान ..... कहलाते थे।
3. फ्रांसीस बुकानन एक ..... था जो भारत आया और ..... में कार्य किया।
4. औपनिवेशिक शासन सर्वप्रथम ..... में स्थापित हुआ था।
5. ..... में अंग्रेजों ने एक परिसीमन कानून पारित किया।
6. बम्बई दक्कन में ..... राजस्व प्रणाली लागू की गई।

उत्तर—1. 12 मई, सन् 1875, 2. बटाईदार, 3. चिकित्सक, बंगाल चिकित्सा सेवा, 4. बंगाल, 5. सन् 1859, 6. रैयतवाड़ी।

प्रश्न 3. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. भारत ब्रिटेन में कब तक कपास आपूर्ति का सबसे बड़ा स्रोत था ?
2. जोतदार की जमीन पर खेती करने वाले किसान क्या कहलाते थे ?
3. पाँचवीं रिपोर्ट किसके द्वारा तैयार की गई थी ?
4. सूपा विपणन केन्द्र का विद्रोह कब हुआ ?
5. पहाड़िया लोग किस प्रकार की खेती करते थे ?
6. 1878 ई. में ब्रिटिश पार्लियामेंट में कौन-सी रिपोर्ट पेश की गई ?
7. भारत में पहली कपड़ा मिल कहाँ स्थापित की गई ?
8. भारत में पहली जूट मिल कब स्थापित की गई ?
9. ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के दुष्परिणामों को सबसे अधिक किसे झेलना पड़ा ?
10. रैयतवाड़ी बंदोबस्त सर्वप्रथम किसके द्वारा प्रचलित किया गया था ?

उत्तर— 1. 1862 तक, 2. बटाईदार, 3. प्रवर समिति द्वारा, 4. 12 मई, 1875 को, 5. झूम खेती, 6. 'दक्कन दंगा रिपोर्ट', 7. बम्बई में, 8. सन् 1855 में, 9. कृषकों, कारीगरों और दस्तकारों को, 10. थॉमस मुनरो, कैप्टन रीड।

प्रश्न 4. उचित संबंध जोड़िए—

(अ)	(ब)
1. इस्तमरारी बंदोबस्त व्यवस्था	(a) 1855-56 ई.
2. संथाल विद्रोह	(b) 1820 ई.
3. अमेरिका में गृहयुद्ध	(c) 1793 ई.
4. दक्कन विद्रोह	(d) 1861 ई.
5. रैयतवाड़ी व्यवस्था	(e) 1878 ई.
6. दक्कन दंगा आयोग की रिपोर्ट	(f) 1875 ई.।

उत्तर—1. (c), 2. (a), 3. (d), 4. (f), 5. (b), 6. (e).

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए—

1. इस्तमरारी बंदोबस्त व्यवस्था बंगाल में लागू किया गया।
2. ब्रिटिश संसद में प्रस्तावित पाँचवीं रिपोर्ट भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन से संबंधित थी।
3. ब्रिटेन में 1857 ई. में मैनचेस्टर कॉटन कंपनी स्थापित हुई।
4. 1859 ई. में अंग्रेजों द्वारा परिसीमन कानून बनाया गया।
5. ब्रिटेन के कपास क्षेत्रों में गिरावट का कारण अमेरिकी गृहयुद्ध था।

उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. सत्य, 5. सत्य।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. इस्तमरारी बंदोबस्त क्या था ? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—इस्तमरारी बंदोबस्त बंगाल के राजाओं तथा ताल्लुकदारों के साथ किया गया जिन्हें जमींदार कहा जाने लगा। उन्हें कुछ भू-संपदाएँ स्थायी रूप से दे दी गईं जहाँ से वे कर वसूल कर सकते थे। बदले में उन्हें कंपनी को हमेशा के लिए एक निर्धारित राजस्व चुकाना था।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. औपनिवेशिक बंगाल में बड़े जमींदारों की जमींदारियाँ नीलाम क्यों कर दी जाती थीं ?

उत्तर—बड़े जमींदार प्राय: पूरा राजस्व अदा नहीं कर पाते थे। उनके ऊपर राजस्व की बकाया रकम प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही थी। इसलिए सरकार की ओर से उनकी जमींदारियाँ नीलाम कर दी जाती थीं।

प्रश्न 3. पाँचवीं रिपोर्ट ब्रिटिश संसद में कब पेश की गई थी ? इसके उद्देश्य क्या थे ?

उत्तर—ब्रिटिश संसद में पाँचवीं रिपोर्ट सन् 1813 में पेश की गई थी। इसका उद्देश्य भारत में कंपनी की आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित करना था ताकि उनका लाभ ब्रिटिश राष्ट्र तथा ब्रिटिश उद्योगपतियों को भी मिल सके।

प्रश्न 4. जोतदार जमींदारों का विरोध किस प्रकार करते थे ? कोई दो कारण लिखिए। वे ऐसा क्यों करते थे ?

उत्तर—जोतदार जमींदारों का विरोध निम्न कारणों से करते थे—

(1) जोतदार जमींदारों द्वारा गाँव की जमा लगान को बढ़ाने के प्रयत्नों का विरोध करते थे। (2) वे जमींदार के अधिकारियों को अपने कर्तव्यों का पालन करने से रोकते थे और उन पर निर्भर किसानों को अपने पक्ष में एकजुट रखते थे।

जोतदार गाँव में अपना प्रभाव तथा नियंत्रण बढ़ाने के लिए जमींदारों का विरोध करते थे।

प्रश्न 5. राजस्व संबंधी सूर्यास्त कानून क्या था ?

उत्तर—इस्तमरारी बंदोबस्त के अनुसार जमींदारों के लिए ठीक समय पर राजस्व का भुगतान करना आवश्यक था। सूर्यास्त (विधि) कानून के अनुसार यदि निश्चित तिथि को सूर्य अस्त होने तक भुगतान नहीं आता था तो जमींदार की जमींदारी को नीलाम किया जा सकता था।

प्रश्न 6. पहाड़ी मुखिया के आक्रमणों के प्रति मैदानी जमींदारों तथा व्यापारियों की क्या प्रतिक्रिया थी ?

उत्तर—पहाड़ी मुखिया के आक्रमणों के प्रति मैदानी जमींदारों व व्यापारियों की प्रतिक्रिया निम्नलिखित थी—

(1) पहाड़ी मुखिया के आक्रमणों से अपनी रक्षा के लिए जमींदार उन्हें नियमित रूप से खिराज देते थे। (2) जो व्यापारी पहाड़ियों द्वारा नियंत्रित रास्तों का प्रयोग करते थे, वे भी उन्हें कर (मार्ग कर) देते थे। बदले में पहाड़ी लोग व्यापारियों की रक्षा करते थे और उन्हें आश्वासन देते थे कि उनके माल को कोई नहीं लूटेगा।

प्रश्न 7. गाँवों में जोतदारों की शक्ति जमींदारों की शक्ति से अधिक क्यों थी ? दो कारण लिखिए।

उत्तर—गाँवों में जोतदारों की शक्ति जमींदारों की शक्ति से अधिक थी इसके दो कारण निम्नलिखित हैं—

(1) जमींदार शहरों में रहते थे। इसके विपरीत जोरदार गरीब गाँववासियों के साथ गाँवों में रहते थे। इस प्रकार गाँववासियों के एक बड़े भाग पर उनका सीधा नियंत्रण था। (2) जमींदारों की नीलाम होने वाली जमींदारियाँ प्राय: जोतदार ही खरीदते थे।

प्रश्न 8. 'दामिन-ए-कोह' क्या थी ?

उत्तर—सन् 1832 में अंग्रेजों ने राजमहल के पहाड़ी क्षेत्रों में जमीन के एक बहुत बड़े क्षेत्र को सीमित कर दिया और इसे संथालों की भूमि घोषित कर दिया। यहाँ उन्हें स्थायी कृषि करनी थी। इस भूमि को 'दामिन-ए-कोह' का नाम दिया गया।

प्रश्न 9. दामिन-ए-कोह में संथालों के जीवन में आए किन्हीं दो परिवर्तनों का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

उत्तर—दामिन-ए-कोह में संथालों के जीवन में आए दो परिवर्तनों का वर्णन निम्न हैं—

(1) दामिन-ए-कोह में संथाल अपनी खानाबदोश जिंदगी को छोड़ स्थायी रूप से बस गए थे। (2) वे कई प्रकार की वाणिज्यिक (नकदी) फसलों की खेती करने लगे थे और साहूकारों तथा व्यापारियों से लेन-देन करने लगे थे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 10. बुकानन (19 वीं शताब्दी के प्रारंभ में) द्वारा राजमहल की पहाड़ियों के विषय में उजागर किए गए कोई तीन तथ्य लिखिए।

उत्तर—बुकानन के मत के अनुसार—(1) राजमहल का पहाड़ी प्रदेश एक ऐसा खतरनाक प्रदेश था, जहाँ बहुत कम यात्री जाने का साहस कर पाते थे। (2) बाहरी लोगों के प्रति वहाँ के निवासियों का व्यवहार शत्रुतापूर्ण था। (3) वहाँ के लोग कंपनी के अधिकारियों के प्रति आशंकित थे और उनसे बातचीत करने को तैयार नहीं थे।

प्रश्न 11. अंग्रेजी सरकार ने बम्बई-दक्कन में कौन-सी भू-राजस्व प्रणाली लागू की ? यह किस दृष्टि से बंगाल के स्थायी (इस्तमरारी) बंदोबस्त से अलग थी ?

उत्तर—अंग्रेजी सरकार द्वारा बंबई-दक्कन में लागू की गई राजस्व प्रणाली को 'रैयतवाड़ी' कहा जाता है। बंगाल के स्थायी बंदोबस्त के विपरीत, इस प्रणाली में राजस्व की राशि जमींदार को बजाय सीधे रैयत के साथ निश्चित की जाती थी।

प्रश्न 12. ब्रिटेन में कपास आपूर्ति संघ तथा मैनचेस्टर में कपास कंपनी की स्थापना कब हुई ? इनका उद्देश्य क्या था ?

उत्तर—ब्रिटेन में कपास आपूर्ति संघ की स्थापना सन् 1857 में हुई। सन् 1859 में मैनचेस्टर कॉटन कंपनी बनी। इनका उद्देश्य दुनिया के हर कोने में कपास के उत्पादन को प्रोत्साहित करना था ताकि उनकी कंपनी का विकास हो सके।

प्रश्न 13. बटाईदार (बरगादार) कौन थे ?

उत्तर—बटाईदार एक प्रकार के किसान थे जो जोतदारों की जमीन पर खेती करते थे, वे स्वयं अपने हल लाते थे, खेत जोतते थे और फसल उगाते थे। फसल के बाद वे उपज का आधा भाग जोतदारों को दे देते थे।

प्रश्न 14. रैयत (किसान) नए जमींदार की बजाए अपने पुराने जमींदार के प्रति ही वफादार बने रहते थे। क्यों ? कोई दो कारण लिखिए।

उत्तर—कारण—(1) रैयत स्वयं को पुराने जमींदार से जुड़ा हुआ महसूस करते थे और उसी को अपना अन्नदाता मानते थे। (2) जमींदारी की बिक्री से उनके स्वाभिमान व गौरव को आघात लगता था।

प्रश्न 15. बम्बई-दक्कन में 1820 के दशक में लागू की गई राजस्व प्रणाली (रैयतवाड़ी) के कोई दो दोष संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—राजस्व प्रणाली के दोष—(1) राजस्व की माँग इतनी अधिक थी कि बहुत से स्थानों पर किसान अपने गाँव छोड़कर नए क्षेत्रों में चले गए। (2) घटिया जमीन और कम वर्षा वाले प्रदेशों में समस्या और भी विकट थी। जब वर्षा नहीं होती थी और फसल खराब हो जाती थी तो किसानों के लिए राजस्व चुका पाना असंभव हो जाता था।

प्रश्न 16. रैयतवाड़ी बंदोबस्त से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—भू-राजस्व की वह प्रणाली, जिसमें रैयतों या किसानों तथा सरकार का सीधा संबंध होता था, 'रैयतवाड़ी बंदोबस्त' कहलाता था। इसमें जमींदार या दूसरा कोई मध्यस्थ न था।

प्रश्न 17. दक्कन दंगा रिपोर्ट को इतिहासकारों के लिए महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है ?

उत्तर—दक्कन दंगा रिपोर्ट को इतिहासकार निम्न कारणों से महत्वपूर्ण मानते हैं—

(1) इसमें इतिहासकारों के लिए उन दंगों का अध्ययन करने संबंधी बहुमूल्य जानकारी दी गई है। (2) इसमें भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में राजस्व की दरों, कीमतों एवं ब्याज के संबंध में विस्तृत आँकड़े दिए गए हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. अमेरिकी गृह-युद्ध के दौरान भारत में आई कपास की तेजी के प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

***अथवा,* सन् 1861 में अमेरिका में गृहयुद्ध छिड़ने से भारतीय किसानों पर क्या प्रभाव पड़ा ? व्याख्या कीजिए।**

Scanned with CamScanner

उत्तर—अमेरिकी गृह-युद्ध के दौरान भारत में आई कपास की तेजी के प्रभाव निम्नलिखित हैं—

सन् 1861 में अमेरिकी गृह युद्ध छिड़ने पर ब्रिटेन के कपास क्षेत्र (मंडी के कारखानों) में हाहाकार मच गया। अत: बम्बई के कपास निर्यातकों ने ब्रिटेन की माँग पूरा करने हेतु अधिक से अधिक कपास खरीदने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने शहरी साहूकारों को अधिक-से-अधिक अग्रिम राशियाँ दीं ताकि वे उन ग्रामीण ऋणदाताओं को, जिन्होंने कपास उपलब्ध कराने का वचन दिया था, को ज्यादा धन उधार दे सकें।

[नोट—दीर्घ उत्तरीय प्रश्न क्रमांक 8 भी देखिए।]

प्रश्न 2. दक्कन दंगा आयोग तथा उसकी रिपोर्ट पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—जब विद्रोह दक्कन में फैला तो प्रारंभ में बम्बई की सरकार ने उसे गंभीरता से नहीं लिया परंतु भारत सरकार ने जो सन् 1857 के विद्रोह के बाद से चिंतित थी, बम्बई की सरकार पर दबाव डाला गया कि वह दंगों के कारणों की खोज करने हेतु जाँच आयोग नियुक्त करे। आयोग ने दंगा पीड़ित जिलों में जाँच-पड़ताल करायी, रैयत, वर्गों, साहूकारों और गवाहों के बयान के लिए, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में राजस्व की दरों, कीमतों व ब्याज के विषय में आँकड़े एकत्रित किए और जिला कलेक्टरों द्वारा भेजी गई रिपोर्टों का संकलन किया। इसके आधार पर आयोग ने एक रिपोर्ट तैयार की जो सन् 1878 में ब्रिटिश पार्लियामेंट में पेश की गई।

यह रिपोर्ट जिसे 'दक्कन दंगा रिपोर्ट' कहा जाता है, इतिहासकारों को उन दंगों का अध्ययन करने के लिए आधार सामग्री उपलब्ध कराती है।

प्रश्न 3. डेविड रिकार्डो का भू-स्वामित्व विचार 'बम्बई दक्कन' में किस प्रकार लागू किया गया ? समीक्षा कीजिए।

उत्तर—डेविड रिकार्डो इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध व नामचीन अर्थशास्त्री थे। 'बम्बई दक्कन' में उनका भू-स्वामित्व का विचार रैयतवाड़ी भू-राजस्व प्रणाली के रूप में लागू किया गया। वास्तव में ब्रिटिश अधिकारी नीतियाँ निर्धारित करते समय उन आर्थिक सिद्धांतों से अत्यधिक प्रभावित रहते थे जिनसे वे पहले से परिचित होते थे। उन्होंने अपने महाविद्यालयी शिक्षाकाल में रिकार्डो के विचारों का अध्ययन किया था। अत: महाराष्ट्र में जब इन अधिकारियों ने प्रारंभिक बंदोबस्त की शर्तें लागू करने का कार्य स्वयं के हाथ में लिया तो इन्होंने इन्हीं में से कुछ विचारों को अपने ध्यान में रखा।

रिकार्डो का मानना था कि भू-स्वामी को समय विशेष पर लागू लगान को वसूल करने का अधिकार होना चाहिए। जब भूमि से औसत लगान से अधिक की प्राप्ति होने लगे तो भू-स्वामी को अधिशेष आय होगी जिस पर सरकार को कर लगाने की आवश्यकता भी होगी। यदि कर नहीं लगाया गया तो किरायाजीवी में बदल जाएँगे और उनकी अधिशेष आय का भूमि के सुधार में उत्पादक रीति से निवेश नहीं होगा।

प्रश्न 4. रैयतवाड़ी बंदोबस्त किस प्रकार इस्तमरारी बंदोबस्त व्यवस्था से भिन्न था ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—इस्तमरारी (स्थायी) बंदोबस्त में ठेकेदार भूमि के स्वामी होते थे। वे कंपनी को एक निश्चित कर देते थे। वे अपनी भूमि किसानों में विभाजित कर देते थे और उनसे इच्छानुसार कर वसूल करते थे। भूमि के स्थायी बंदोबस्त का सबसे अधिक लाभ बड़े जमींदारों को हुआ। परंतु इससे किसानों की दशा बहुत खराब हो गई।

इसके विपरीत रैयतवाड़ी बंदोबस्त में सरकार उन किसानों से कर वसूल करती थी जो अपने हाथों से कृषि करते थे। अत: सरकार तथा कृषकों के बीच जितने भी मध्यस्थ थे, उन्हें उनके पद से हटा दिया गया। यह प्रबंध स्थायी प्रबंध की अपेक्षा अधिक बेहतर था। इसमें कृषकों के अधिकार बढ़ गए और सरकारी आय में भारी वृद्धि हुई। रैयतवाड़ी बंदोबस्त को स्थायी बंदोबस्त के कुप्रभावों से बचाने हेतु लागू किया गया।

प्रश्न 5. भारत में अंग्रेजी राज्य के समय किसानों की ऋणग्रस्तता के क्या कारण थे ?

उत्तर—भारत में अंग्रेजी राज्य के समय किसानों की ऋणग्रस्तता के निम्नलिखित कारण थे—

(1) किसानों का लगान (भूमि कर) निश्चित था। कई बार किसान अपनी उपज से लगान चुका नहीं पाते थे। अत: उन्हें लगान चुकाने हेतु महाजन से ऋण लेना पड़ता था। (2) महाजन इस ऋण पर बहुत अधिक ब्याज लेते थे। किसानों की आय बहुत कम थी। अत: जो किसान एक बार ऋण ले लेता, वह हमेशा के लिए ऋणग्रस्त हो जाता था। (3) किसानों को विवाह और जन्म-मृत्यु के अवसर पर ऋण लेना पड़ता था। (4) किसान अपनी

Scanned with CamScanner

उपज में से कुछ भी बचाकर रख नहीं पाते थे। इसलिए सूखा पड़ने व बाढ़ आने पर किसानों को ऋण का सहारा लेना पड़ता था। अत: अंग्रेजी राज्य के समय लगभग 80% किसान ऋणग्रस्त थे।

प्रश्न 6. "पाँचवीं रिपोर्ट में दिए गए तर्कों और साक्ष्यों को बिना किसी आलोचना के स्वीकार नहीं किया जा सकता है।" तर्क दीजिए।

उत्तर—(1) पाँचवीं रिपोर्ट एक प्रचार समिति के द्वारा तैयार की गई थी। यह रिपोर्ट भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन स्वरूप पर इंग्लैण्ड की संसद में गंभीर वाद-विवाद का आधार बना। (2) ग्रामीण बंगाल में 18वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में घटित घटना के विषय में हमारी धारणा लगभग 150 वर्षों तक पाँचवीं रिपोर्ट के आधार पर ही निर्भर रही। (3) यद्यपि पाँचवीं रिपोर्ट के साक्ष्य अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं तथापि इसका सावधानीपूर्ण आलोचनात्मक अवलोकन अपरिहार्य है। हमें इस रिपोर्ट के उद्देश्य को भी विस्तार से समझना होगा। (4) आधुनिक शोधों से ज्ञात होता है कि पाँचवीं रिपोर्ट की विषयवस्तु तर्कों तथा साक्ष्यों को बिना किसी आलोचना तथा गंभीर अध्ययन के स्वीकार नहीं किया जा सकता। इस रिपोर्ट में भारत में जमींदारी सत्ता के पतन को बढ़ाकर वर्णित किया गया है। वास्तव में पाँचवीं रिपोर्ट के लेखक कंपनी के कुप्रशासन की आलोचना हेतु कटिबद्ध थे।

प्रश्न 7. जमींदारी की भू-संपदा की नीलामी व्यवस्था के क्या दोष थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जमींदारी की भू-संपदा की नीलामी व्यवस्था के निम्नलिखित दोष थे—

(1) भू-संपदा की नीलामी में बोली लगाने के लिए अनेक खरीददार होते थे और संपदाएँ सबसे ऊँची बोली लगाने वाले को बेच दी जाती थी—बोली बिना सोचे-समझे लगायी जाती थी। (2) भू-संपदा की नीलामी के अनेक खरीददार राजा के अपने ही नौकर या एजेंट होते थे व राजा की तरफ से जमीनों को खरीदा जाता था। (3) नीलामी में 95% से अधिक बिक्री फर्जी होती थी। फर्जी बोलियाँ लगाई जाती थीं। (4) राजा (जमींदार) को जमीनें खुले तौर पर बेच दी जाती थीं और उनकी जमींदारी का नियंत्रण भी उन्हीं के हाथों में रहता था।

प्रश्न 8. बुकानन की भारत यात्रा के वास्तविक उद्देश्य क्या थे ?

उत्तर—बुकानन की भारत यात्रा का उद्देश्य भारत में ईस्ट इण्डिया कंपनी के अधिकार क्षेत्र के भू-दृश्यों का अध्ययन करना था ताकि आर्थिक विकास की संभावनाओं की तलाश की जा सकें। इसके अतिरिक्त वह कंपनी के लिए अन्य महत्वपूर्ण सूचनाएँ भी एकत्रित करना चाहता था। उसे यह स्पष्ट निर्देश दिया गया था कि उसे क्या देखना, खोजना और लिखना है। बंगाल सरकार के अनुरोध पर उन्होंने ऐसी भूमि का विस्तृत सर्वेक्षण किया और अपनी रिपोर्ट तैयार की। इसके आधार पर बहुत बड़े क्षेत्र के वनों को साफ करके स्थायी कृषि का विस्तार किया गया जिससे कंपनी के भू-राजस्व में अत्यधिक वृद्धि हुई।

प्रश्न 9. ईस्ट इण्डिया कंपनी को अपनी नई राजस्व नीति से क्या-क्या उम्मीदें थीं ? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अपनी नई राजस्व नीति से निम्नलिखित उम्मीदें थीं—

(1) अधिकारियों को ये उम्मीद थी कि इस प्रक्रिया से छोटे किसानों (योमेन) और धनी भू-स्वामियों का एक ऐसा वर्ग उत्पन्न हो जाएगा जिसके पास कृषि में सुधार करने हेतु पूँजी और उद्यम दोनों होंगे। (2) इस्तमरारी बंदोबस्त लागू किए जाने से वे सभी समस्याएँ हल हो जाएँगी जो बंगाल के विजय के समय से ही उनके समक्ष उपस्थित हो रही थी। (3) उद्यमकर्ता भी अपने पूँजी-निवेश से एक निश्चित लाभ कमाने की उम्मीद रख सकेंगे। (4) अधिकारी ऐसा सोचते थे कि खेती, व्यापार और राज्य के राजस्व सब विकसित किए जा सकेंगे। (5) उन्हें यह उम्मीद भी थी कि ब्रिटिश शासन से पालन-पोषण और प्रोत्साहन पाकर यह वर्ग कंपनी के प्रति वफादार बना रहेगा।

प्रश्न 10. पाँचवीं रिपोर्ट के उद्देश्य क्या थे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—पाँचवीं रिपोर्ट के उद्देश्य—कंपनी ने जब से (सन् 1765) बंगाल की बागडोर संभाली थी तभी से इंग्लैण्ड में उसके क्रियाकलापों पर सूक्ष्मता से नजर रखी जाने लगी थी। ब्रिटेन में बहुत से ऐसे वर्ग थे जो भारत तथा चीन के साथ व्यापार में ईस्ट इण्डिया कंपनी के एकाधिकार के खिलाफ थे। ये चाहते थे कि उस शाही फरमान को रद्द किया जाए जिसके अनुसार कंपनी को यह अधिकार दिया गया था। भारत के साथ व्यापार

Scanned with CamScanner

करने के इच्छुक निजी व्यापारियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। ब्रिटेन के उद्योगपति भी ब्रिटिश माल के लिए भारत का बाजार खुलवाने के लिए उत्सुक थे। कई राजनीतिक समूहों का यह कहना था कि बंगाल विजय का लाभ सिर्फ ईस्ट इंडिया कंपनी को ही मिल रहा है, सम्पूर्ण ब्रिटिश राष्ट्र को नहीं। कंपनी के कुशासन और अव्यवस्थित प्रशासन के विषय में प्राप्त सूचना पर ब्रिटेन में वाद-विवाद होने लगा।

अतः ब्रिटिश संसद ने भारत में कंपनी के शासन को नियंत्रित करने के लिए 18वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में अनेक अधिनियम पारित किए। कंपनी को बाध्य किया गया कि वह भारत के प्रशासन के विषय में नियमित रूप से अपनी रिपोर्ट ब्रिटिश संसद को भेजे। कंपनी के कार्यों की जाँच करने हेतु अनेक समितियाँ नियुक्त की गईं। पाँचवीं रिपोर्ट भी ऐसी ही एक प्रवर समिति द्वारा तैयार की गई थी। यह रिपोर्ट भारत में ईस्ट इण्डिया कंपनी के शासन के स्वरूप पर ब्रिटिश संसद में गंभीर वाद-विवाद का आधार बनी।

प्रश्न 11. पाँचवीं रिपोर्ट इंग्लैण्ड में गंभीर वाद-विवाद का आधार क्यों बनी ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— पाँचवीं रिपोर्ट इंग्लैण्ड में निम्नलिखित कारणों से वाद-विवाद का आधार बनी—

पाँचवीं रिपोर्ट भारत में ईस्ट इण्डिया कंपनी के प्रशासन व क्रियाकलापों के विषय में तैयार की गई थी। यह रिपोर्ट 1,002 पृष्ठों की थी और इसमें 800 से अधिक पृष्ठ परिशिष्टों के थे जिसमें जमींदारों और रैयतों की अर्जियाँ भिन्न-भिन्न जिलों के कलेक्टरों की रिपोर्ट पर लिखित टिप्पणियाँ शामिल की गई थीं। यह रिपोर्ट ब्रिटिश संसद में सन् 1813 में पेश की गई थी।

[नोट—लघु उत्तरीय प्रश्न क्रमांक 10 भी देखिए।]

प्रश्न 12. दक्कन में साहूकारों तथा अनाजों के व्यापारियों के विरुद्ध किसानों के विद्रोह पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर— 19 वीं शताब्दी के दौरान, भारत के विभिन्न प्रांतों के किसानों ने साहूकारों तथा अनाज व्यापारियों के विरुद्ध अनेक विद्रोह किए। ऐसा ही एक विद्रोह सन् 1875 में दक्कन में हुआ।

दक्कन का यह आंदोलन पूना जिले के एक बड़े गाँव सूपा से प्रारंभ हुआ। सूपा एक विपणन केन्द्र (मंडी) था जहाँ बहुत से व्यापारी व साहूकार रहते थे। 12 मई सन् 1885 को आस-पास के क्षेत्रों के ग्रामीण रैयत (किसान) एकत्रित हुए। उन्होंने साहूकारों से उनके बही-खातों और ऋणबंधों की माँग की और उन पर हमला कर दिया। उन्होंने उनके बही-खाते जला दिए, अनाज की दुकानें लूट ली गईं और साहूकारों के घर जला दिए गए।

पूना से यह विद्रोह अहमदनगर में फैल गया। अगले दो महीनों में इस विद्रोह ने यहाँ भीषण रूप ले लिया व 6,500 वर्ग किलोमीटर का प्रदेश अपनी चपेट में ले लिया। 30 से अधिक गाँव इससे प्रभावित हुए। यहाँ साहूकारों पर हमला किया गया, उनके बही-खाते जला दिए गए। किसानों के हमले से डरकर साहूकार गाँव छोड़कर भाग गए। अधिकतर साहूकार अपनी संपत्ति वहीं छोड़ कर चले गए। इस विद्रोह को देखकर ब्रिटिश अधिकारियों की आँखों के समक्ष सन् 1857 का विद्रोह उभरने लगा।

इस विद्रोह पर काबू पाने के लिए विद्रोही किसानों के गाँवों में पुलिस थाने स्थापित किए गए। सेनाएँ बुलाई गयी। 95 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर उन्हें दंडित किया गया। देहात को काबू करने में कई महीने लग गए।

प्रश्न 13. बंगाल से बाहर अंग्रेजी सरकार द्वारा इस्तमरारी बंदोबस्त की बजाय नई राजस्व प्रणालियाँ क्यों लागू की गईं ?

उत्तर— बंगाल से बाहर अंग्रेजी सरकार द्वारा इस्तमरारी बंदोबस्त की बजाय नई राजस्व प्रणालियाँ निम्नलिखित कारणों से लागू की गईं—

(1) 1810 ई. के बाद खेती की कीमतों में बढ़ोत्तरी हुई। इससे उपज के मूल्य में वृद्धि हुई फलस्वरूप बंगाल के जमींदारों की आय में विस्तार हुआ। चूँकि राजस्व की माँग इस्तमरारी बंदोबस्त के अंतर्गत निर्धारित की गई थी, इसलिए औपनिवेशिक सरकार इस बढ़ी आय में से हिस्सा नहीं माँग सकती थी। अतः सरकार को अपने वित्तीय संसाधनों में वृद्धि करने के लिए भू-राजस्व की वृद्धि के तरीकों पर विचार करना पड़ा। (2) 19 वीं शताब्दी में औपनिवेशिक शासन में शामिल किए गए प्रदेशों में नए राजस्व बंदोबस्त लागू किए गए। (3) ब्रिटिश

Scanned with CamScanner

...में सरकारी स्रोतों का उपयोग करते समय लेखक को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है—

(1) सरकारी स्रोत वास्तविक स्थिति का निष्पक्ष वर्णन नहीं करते। अत: उनके द्वारा प्रस्तुत विवरणों को ...सत्य नहीं माना जा सकता। (2) सरकारी स्रोत विभिन्न घटनाओं के संबंध में किसी-न-किसी रूप में ...दृष्टिकोण एवं अभिप्रयोग के पक्षधर होते हैं। वे विभिन्न घटनाओं का विवरण सरकारी दृष्टिकोण से ही ...करते हैं। (3) सरकारी स्रोतों की सहानुभूति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सरकार के प्रति ही होती है। ...किसी-न-किसी रूप में पीड़ितों के साथ व स्थान पर सरकार के ही हितों के समर्थक होते हैं। उदाहरण—...दंगा आयोग की नियुक्ति विशेष रूप से यह पता लगाने के लिए की गई थी कि सरकारी राजस्व की माँग ...विद्रोह के प्रारंभ में क्या योगदान था अथवा क्या किसान राजस्व की ऊँची दर के कारण विद्रोह के लिए उतारू ...थे। आयोग ने संपूर्ण जाँच-पड़ताल करने के बाद जो रिपोर्ट प्रस्तुत की उसमें विद्रोह का प्रमुख कारण ...अथवा साहूकारों को बताया गया। रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से यह कहा गया कि सरकारी माँग किसानों ...अथवा क्रोध का कारण बिल्कुल नहीं थी। (4) आयोग इस प्रकार की टिप्पणी करते हुए यह भूल ...कि आखिर किसान साहूकारों की शरण में जाते क्यों थे। वास्तव में, सरकार द्वारा निर्धारित भू-राजस्व की ...अधिक थी और वसूली के तरीके इतने कठोर थे कि किसान को विवशतापूर्वक साहूकार की शरण में ...ही पड़ता था। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह था कि औपनिवेशिक सरकार जनता में व्याप्त असंतोष अथवा ...के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानने के लिए तैयार नहीं थी।

अत: किसान इतिहास लेखन में सरकारी स्रोतों का उपयोग करते हुए कुछ बातों का विशेष रूप से ध्यान ...जाना चाहिए। उदाहरण—

(1) सरकारी रिपोर्टों का अध्ययन अत्यधिक सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। (2) सरकारी रिपोर्टों के ...साक्ष्य का मिलान समाचार-पत्रों, गैर-सरकारी विवरणों, वैधिक अभिलेखों आदि में उपलब्ध साक्ष्यों से ...के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

अध्याय 7

औपनिवेशिक शहर—नगरीकरण, नगर-योजना, स्थापत्य

...निष्ठ प्रश्न

प्र.1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. मद्रास में ब्रिटिश आबादी के रूप में जाना जाता था—
   (a) फोर्ट (b) फोर्ट विलियम (c) फोर्ट सेंट जॉर्ज (d) इनमें से कोई नहीं।
2. मद्रास, कलकत्ता तथा बम्बई मूलत: गाँव थे—
   (a) बुनाई के (b) मत्स्य ग्रहण के (c) (a) एवं (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं।
3. अखिल भारतीय जनगणना का पहला प्रयास किया गया था—
   (a) सन् 1872 में (b) सन् 1882 में (c) सन् 1892 में (d) सन् 1852 में ।
4. बम्बई का टॉउन हाल बनाया गया—
   (a) सन् 1865 में (b) सन् 1866 में (c) सन् 1844 में (d) सन् 1833 में।
5. इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के एजेंट मद्रास में आकर बसे—
   (a) सन् 1650 में (b) सन् 1639 में (c) सन् 1661 में (d) सन् 1670 में।
6. वायसराय जॉन लॉरेंस ने अधिकृत रूप से अपनी काउंसिल शिमला स्थानांतरित की—
   (a) सन् 1840 को (b) सन् 1850 को (c) सन् 1864 को (d) सन् 1870 को।

Scanned with CamScanner

4. सत्य/असत्य लिखिए—

1. लाल, बाल, पाल अंग्रेजों के विरोध में उदारवादी विचारधारा के समर्थक थे।
2. सन् 1914-18 में प्रथम विश्वयुद्ध के समय अंग्रेजों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया था।
3. महात्मा गाँधी को सन् 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया।
4. गाँधीजी ने तृतीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
5. ब्रिटेन की लेबर पार्टी भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में थी।
6. भारत छोड़ो आंदोलन अगस्त, 1942 में प्रारंभ हुआ।

उत्तर—1. असत्य, 2. सत्य, 3. सत्य, 4. असत्य, 5. सत्य, 6. सत्य।

5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. जलियाँवाला बाग हत्याकांड कब हुआ ?
2. गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन कब वापस लिया ?
3. कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन (सन् 1929) के अध्यक्ष कौन थे ?
4. गाँधी-इरविन समझौता कब हुआ ?
5. 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' का आह्वान कब किया गया ?
6. लॉर्ड माउंटबेटन को भारत का वायसराय नियुक्त कब किया गया ?
7. रजवाड़ों में राष्ट्रवादी सिद्धान्त को बढ़ावा देने के लिए क्या स्थापना की गई ?
8. किस स्थान में पहला गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया ?
9. असहयोग आन्दोलन किस सन् में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाया गया ?
10. किस सन् के अंत में दूसरा गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ ?
11. पहला गोलमेज सम्मेलन किस सन् में आयोजित किया गया ?
12. किस सन् में इंग्लैण्ड की सरकार ने एक कमीशन नियुक्त किया ?
13. फरवरी 1947 ई. में किसको वायसराय नियुक्त किया गया ?
14. एक व्यापक जन-आन्दोलन क्या था ?
15. हिन्द स्वराज पुस्तक किसने लिखी थी ?
16. सीमांत गाँधी किसे कहा जाता है ?
17. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड का जिम्मेदार कौन था ?
18. पश्चिमी सीमान्त प्रांत में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का प्रसार किसने किया ?
19. भारत छोड़ो आन्दोलन कब प्रारंभ हुआ ?
20. पूना समझौता कब हुआ था ?
21. किस दिन भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय असेंबली में बम फेंका ?
22. कांग्रेस के किस अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' की घोषणा की गई ?
23. गाँधी जी ने भारत में सत्याग्रह का सबसे पहला प्रयोग कब और कहाँ किया ?
24. खिलाफत आंदोलन की शुरुआत कब हुई ?
25. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड कब हुआ था ?

उत्तर—1. अप्रैल 1919, 2. फरवरी 1922, 3. जवाहरलाल नेहरू, 4. सन् 1931, 5. मुस्लिम लीग ने, 6. सन् 1947, 7. प्रजामंडलों की, 8. लंदन, 9. सन् 1920, 10. सन् 1931, 11. नवम्बर, 1930, 12. 1927 ई., 13. लॉर्ड माउंटबेटन, 14. भारत छोड़ो आन्दोलन, 15. गाँधी जी ने, 16. खान अब्दुल गफ्फार खाँ, 17. जनरल डायर, 18. खान अब्दुल गफ्फार खाँ, 19. सन् 1942 में, 20. 25 सितम्बर, 1932 को, 21. 8 अप्रैल, 1929 को, 22. कलकत्ता अधिवेशन, 23. 1917 ई. में चम्पारण (बिहार) में, 24. 1 अगस्त, 1920 को, 25. 13 अप्रैल, 1919 को।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महात्मा गाँधी की तुलना अब्राहम लिंकन से क्यों की जाती है ?

उत्तर—महात्मा गाँधी की तुलना अब्राहम लिंकन से निम्न कारणों से की जाती है—

(1) अमेरिका की 'टाइम' पत्रिका ने गाँधी के बलिदान की तुलना अब्राहम लिंकन के बलिदान से की है।

Scanned with CamScanner

(2) पत्रिका में कहा गया कि एक धर्मांध अमेरिकी ने लिंकन को मार दिया था क्योंकि उन्हें रंग या नस्ल से हटकर मानव मात्र की समानता में विश्वास था और दूसरी ओर एक धर्मांध हिन्दू ने गाँधी जी की लीला समाप्त कर दी, क्योंकि वे भाई-चारे का प्रचार कर रहे थे।

प्रश्न 2. 'प्रत्यक्ष कार्यवाही' दिवस क्या था ?

उत्तर—प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस का आह्वान जिन्ना ने पाकिस्तान की स्थापना के लिए लीग की माँग के समर्थन में किया। इसके लिए 16 अगस्त, 1946 का दिन निश्चित किया गया था। उस दिन कलकत्ता में खूनी संघर्ष शुरू हो गया। यह हिंसा कलकत्ता से प्रारंभ होकर ग्रामीण बंगाल, बिहार और संयुक्त प्रांत व पंजाब तक फैल गई। कुछ स्थानों पर मुसलमानों को तो कुछ अन्य स्थानों पर हिन्दुओं को निशाना बनाया गया।

प्रश्न 3. उदारवादियों तथा गर्म-दलीय नेताओं की नीति में कोई एक अंतर लिखिए।

उत्तर—उदारवादी सुधारों के लिए क्रमिक तथा लगातार प्रयास करते रहने के पक्ष में थे। इसके विपरीत गर्म-दलीय नेता औपनिवेशिक शासन के प्रति लड़ाकू नीति के समर्थक थे।

प्रश्न 4. दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के पश्चात् गाँधी जी ने किन-किन स्थानों पर सत्याग्रह आन्दोलन चलाया और कब-कब चलाया ?

उत्तर—(1) सन् 1916 में बिहार के चंपारण जिले में। (2) सन् 1917 में गुजरात के खेड़ा जिले में। (3) सन् 1918 में अहमदाबाद (गुजरात) में।

प्रश्न 5. महात्मा गाँधी भारत में ब्रिटिश सरकार के प्रति असहयोग की नीति क्यों अपनाना चाहते थे ?

उत्तर—महात्मा गाँधी का मानना था कि भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से स्थापित हुआ और इसी सहयोग के कारण टिका हुआ था। इसलिए वह असहयोग की नीति अपनाकर ब्रिटिश शासन को समाप्त करना चाहते थे जिससे स्वराज की स्थापना हो सके।

प्रश्न 6. सन् 1924 में जेल से रिहा होकर गाँधी जी ने क्या किया ?

उत्तर—महात्मा गाँधी को सन् 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया था। फरवरी, 1924 में वे जेल से रिहा हो गए। अब उन्होंने अपना ध्यान घर में बुने खादी के कपड़ों को बढ़ावा देने तथा छूआछूत को समाप्त करने में लगाया। उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों के मध्य सौहार्द उत्पन्न करने का प्रयास भी किया।

प्रश्न 7. सन् 1917 में चम्पारण के काश्तकारों को सुरक्षा दिलाने हेतु गाँधी जी ने क्या किया ? उल्लेख कीजिए।

उत्तर—सन् 1917 में चम्पारण के किसानों व काश्तकारों को सुरक्षा दिलाने के लिए गाँधी जी ने अनशन किया। उन्होंने उन्हें अपनी पसंद की फसल उगाने की स्वतंत्रता दिलाई।

प्रश्न 8. 'पूर्ण स्वराज' को औपचारिक रूप से कब और कहाँ स्वीकार किया गया ?

उत्तर—'पूर्ण स्वराज' की माँग को दिसम्बर, 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में स्वीकार किया गया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता पं. जवाहर लाल नेहरू ने की।

प्रश्न 9. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड क्या था ?

उत्तर—रौलेट सत्याग्रह के दौरान एक अंग्रेज ब्रिगेडियर ने अमृतसर के जलियाँवाला बाग में हो रही एक सभा पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। इस हत्याकाण्ड में 400 से भी अधिक लोग मारे गए।

प्रश्न 10. गाँधी जी ने साबरमती आश्रम किस उद्देश्य से प्रारंभ किया ?

उत्तर—गाँधी जी द्वारा इस आश्रम को स्थापित करने (1916 ई.) का उद्देश्य अपने अनुयायियों को सत्य-अहिंसा का मार्ग दर्शाना तथा सत्य अहिंसा के अनुसार व्यवहार करना सिखाना था। उन्होंने यहाँ संघर्ष की अपनी नयी विधि का प्रयोग करना भी प्रारंभ कर दिया।

प्रश्न 11. खिलाफत आन्दोलन क्या था ?

उत्तर—खिलाफत आन्दोलन मुसलमानों द्वारा चलाया जा रहा था जो यह माँग कर रहे थे कि पहले के ऑटोमन साम्राज्य के सभी इस्लामी पवित्र स्थानों पर तुर्की के सुल्तान अथवा खलीफा का नियंत्रण बना रहे।

प्रश्न 12. खिलाफत आन्दोलन को गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन का अंग क्यों बनाया ?

उत्तर—गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन के विस्तार और मजबूती के लिए इसे असहयोग आन्दोलन का अंग बनाया। उन्हें यह आशा थी कि असहयोग को खिलाफत के साथ मिलाने से भारत के प्रमुख दो धार्मिक समुदाय-हिन्दू और मुसलमान आपस में मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 13. गाँधी जी ने सन् 1922 को असहयोग आन्दोलन वापस क्यों लिया ?

उत्तर—सन् 1922 में चौरी-चौरा नामक स्थान पर कुछ आन्दोलनकारियों ने एक पुलिस चौकी को आग ा दिया। इस हिंसक घटना में थानेदार के साथ कुछ सिपाही जिंदा जल गए। इस घटना से दुःखी होकर गाँधी ने असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया।

प्रश्न 14. सविनय अवज्ञा आन्दोलन को विफल करने सरकार ने क्या कदम उठाए ?

उत्तर—सविनय अवज्ञा आन्दोलन को विफल करने सरकार ने निम्नलिखित कदम उठाए—

(1) सरकार ने कांग्रेस के सभी बड़े-बड़े नेताओं (सरदार पटेल, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सुभाष चंद्र बोस ादि) को जेल में डाल दिया। (2) कांग्रेस को गैर-कानूनी संस्था घोषित कर दिया गया।

प्रश्न 15. सन् 1939 में प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमण्डलों ने त्यागपत्र क्यों दे दिया ?

उत्तर—1939 ई. में द्वितीय महायुद्ध आरंभ हो गया। इंग्लैण्ड इसमें शामिल था। भारत के वायसराय लिंलिथगो ने भारतवासियों से पूछे बिना भारत को इस युद्ध में शामिल कर दिया। इस बात से नाराज होकर ांस मंत्रिमण्डल ने त्याग-पत्र दे दिया।

प्रश्न 16. क्रिप्स मिशन भारत क्यों आया ?

उत्तर—द्वितीय विश्व युद्ध में जापान निरंतर भारत की ओर बढ़ रहा था। भारत में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन चल रहा था। इसलिए स्थिति को अपने पक्ष में करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने सर स्टेफर्ड क्रिप्स को ारत (मार्च 1942 में) भेजा।

प्रश्न 17. प्रजामंडल आन्दोलन से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—भारतीय रियासतों (565) में जनता ने आजादी व अन्य सुविधाओं के प्रश्न (भूमि कर की कमी, ुरा मजदूरी) को लेकर आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन को प्रजामंडल आन्दोलन का नाम दिया गया है।

प्रश्न 18. भारत छोड़ो आन्दोलन के महत्व पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—ब्रिटिश सरकार ने भारत को स्वतंत्रता देने से इंकार कर दिया था। अतः 8 अगस्त, 1942 को ांग्रेस ने मुंबई में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास कर दिया।

प्रश्न 19. सन् 1929 में कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन किन दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण था ?

उत्तर—सन् 1929 में कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन निम्न दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण था—

(1) जवाहरलाल नेहरू का अध्यक्ष के रूप में चुनाव जो युवा पीढ़ी के नेतृत्व का प्रतीक था।

(2) 'पूर्ण स्वराज' अथवा पूर्ण स्वतंत्रता की उद्घोषणा।

प्रश्न 20. दक्षिण अफ्रीका ने गाँधी जी को 'महात्मा' बनाया। इसके पक्ष में दो तर्क दीजिए।

उत्तर—दक्षिण अफ्रीका ने गाँधी जी को महात्मा बनाया इसके पक्ष में दो तर्क निम्न हैं—

(1) गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में ही पहली बार अहिंसात्मक विरोध के अपने विशेष तरीके का प्रयोग किया। इसे 'सत्याग्रह' का नाम दिया जाता है। (2) यहीं पर उन्होंने विभिन्न धर्मों के बीच सद्भावना बढ़ाने का प्रयास किया तथा उच्चजातीय भारतीयों को निम्न जातियों और महिलाओं के प्रति भेद-भाव के व्यवहार के लिए चेतावनी दी।

प्रश्न 21. नमक यात्रा के दौरान गाँधी जी ने एक गाँव के ऊँची जाति के लोगों से स्वराज पाने के संदर्भ में क्या कहा ?

उत्तर—गाँधी जी ने कहा था कि स्वराज पाने के लिए ऊँची जाति के लोगों को अछूतों की सेवा करनी होगी। केवल नमक कर व अन्य कर समाप्त होने पर स्वराज नहीं आएगा उन्हें उन गलतियों के लिए प्रायश्चित करना होगा जो उन्होंने अछूतों के साथ किए हैं।

प्रश्न 22. सत्याग्रह सभा की स्थापना क्यों की गई थी ?

उत्तर—रॉलेट एक्ट के विरुद्ध गाँधी जी ने सत्याग्रह अभियान संगठित किया और रॉलेट एक्ट की यह कहकर आलोचना की कि यह अनुचित, स्वतंत्रता के सिद्धान्तों का विरोधी व व्यक्ति के मूल अधिकारों की हत्या करने वाला है। अभियान को संगठित करने के लिए एक सत्याग्रह सभा स्थापित की गई जिसके अध्यक्ष स्वयं गाँधी जी थे।

प्रश्न 23. महात्मा गाँधी ने आत्म-शुद्धि अनशन की घोषणा क्यों की ?

उत्तर—8 मई, 1933 को महात्मा गाँधी ने हरिजन कल्याण कार्यक्रमों के संबंध में अत्यधिक सतर्कता और जागरूकता हेतु अपनी तथा अपने सहयोगियों की शुद्धि हेतु 21 दिनों तक आत्म-शुद्धि अनशन की घोषणा की।

प्रश्न 24. 'वेवेल योजना' क्या थी ?

उत्तर—'वेवेल योजना' की मुख्य बात यह थी कि केन्द्र में एक नयी कार्यकारी परिषद् का गठन किया जाएगा, जिसमें वायसराय तथा कमांडर-इन-चीफ को छोड़कर शेष सभी सदस्य भारतीय होंगे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 25. स्वराज दल का गठन कब और क्यों हुआ ?

उत्तर—सी. आर. दास और मोतीलाल नेहरू ने दिसम्बर, 1922 ई. में स्वराज दल की स्थापना की। गाँधी जी ने जब चौरी-चौरा कांड के बाद असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया, तो इससे नाराज होकर चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने ऐसा किया।

प्रश्न 26. इंडियन नेशनल कांग्रेस ने प्रथम राष्ट्रीय योजना समिति कब और क्यों बनाई ?

उत्तर—1938 ई. में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने प्रथम राष्ट्रीय योजना समिति बनाई। इसका उद्देश्य देश में आर्थिक योजना को लागू करना था जिससे धन का विकेन्द्रीकरण किया जा सके तथा बड़े उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र में लाया जा सके।

प्रश्न 27. बारदोली में हुई कांग्रेस की कार्यसमिति में पारित प्रस्ताव का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—बारदोली में हुई कांग्रेस की कार्यसमिति में पारित प्रस्ताव में मजदूरों और किसानों के आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन का अंग माना गया तथा उनके आर्थिक व सामाजिक उत्थान के उद्देश्य को समझा गया।

प्रश्न 28. भारतीय राजनीति पर जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—इस हत्याकांड में जो अनेक निहत्थे भारतीय मारे गए उससे भारतीयों को अंग्रेजी शासन पर एकदम विश्वास न रहा। 1919 ई. के परचात् भारतीय राजनीति ने और उग्र रूप धारण कर लिया और क्रांतिकारी युद्ध का आरंभ हुआ। लोगों के मन में प्रतिशोध की भावना जाग उठी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. चम्पारण, अहमदाबाद तथा खेड़ा में गाँधी जी के अभियानों का क्या महत्व था ?

उत्तर—वर्ष 1917 का अधिकांश समय महात्मा गाँधी को बिहार के चंपारण जिले में किसानों हेतु काश्तकारी की सुरक्षा के साथ-साथ अपनी पसंद की फसल उपजाने की स्वतंत्रता दिलाने में बीत गया। अगले वर्ष गाँधी जी गुजरात के अपने गृह राज्य में दो अभियानों में संलग्न रहे। सबसे पहले उन्होंने अहमदाबाद के एक श्रम विवाद में हस्तक्षेप कर कपड़े की मिलों में काम करने वाले श्रमिकों के लिए काम करने की बेहतर स्थितियों की माँग की। इसके बाद उन्होंने खेड़ा में फसल चौपट होने पर राज्य से किसानों का लगान माफ करने की माँग की। चम्पारण, अहमदाबाद तथा खेड़ा के अभियानों ने गाँधी जी को एक ऐसे राष्ट्रवादी नेता की छवि प्रदान की जिसके मन में गरीबों के प्रति गहरी सहानुभूति थी।

प्रश्न 2. नमक सत्याग्रह (सविनय अवज्ञा आन्दोलन) तथा असहयोग आन्दोलन में क्या समानताएँ थीं ? कोई पाँच समानताएँ लिखिए।

उत्तर—नमक सत्याग्रह तथा असहयोग आन्दोलन में पाँच समानताएँ इस प्रकार हैं—

(1) देश के विशाल भाग में किसानों ने दमनकारी औपनिवेशिक वन कानूनों का उल्लंघन किया जिसके कारण वे और उनके मवेशी उन जंगलों में नहीं जा सकते थे जहाँ किसी समय वे बिना रोक-टोक घूमते थे। (2) वकीलों ने ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार किया। (3) कुछ कस्बों में फैक्ट्री कामगार हड़ताल पर चले गए। (4) विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षा संस्थानों में पढ़ने से इंकार कर दिया। सन् 1920-22 की तरह इस बार भी गाँधी जी के आह्वान ने सभी भारतीय वर्गों को औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध अपना असंतोष व्यक्त करने हेतु प्रेरित किया। (5) इसके जवाब में सरकार असंतुष्टों को गिरफ्तार करने लगी। नमक सत्याग्रह के दौरान लगभग 60,000 लोगों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार होने वालों में गाँधी जी भी थे।

प्रश्न 3. साइमन कमीशन भारत में क्यों आया ? भारत में इसका विरोध क्यों हुआ ?

उत्तर— 1927 ई. में इंग्लैण्ड की सरकार ने एक कमीशन नियुक्त किया। इसके अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे। इसलिए इस कमीशन को साइमन कमीशन कहा जाता है। यह कमीशन 1928 ई. में भारत पहुँचा। इस कमीशन का उद्देश्य 1919 ई. के सुधारों के परिणामों की जाँच करना था। इस कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य नहीं था। अत: भारत में इसका जगह-जगह पर विरोध किया गया। यह कमीशन जहाँ भी गया वहाँ इसका स्वागत काले झंडे दिखा कर किया गया। अनेक स्थानों पर 'साइमन कमीशन वापस जाओ' के नारे लगाए गए। जनता के इस शांत प्रदर्शन करने को सरकार ने बहुत ही कठोरतापूर्वक दबा दिया। लाहौर में इस कमीशन का विरोध करने के कारण लाला लाजपत राय पर लाठियों से वार किया गया जिससे वे शहीद हो गए। देश के सभी राजनैतिक दलों ने सरकार की इस नीति की बहुत कड़ी निंदा की।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. असहयोग आन्दोलन की ओर ले जाने वाली घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—असहयोग आन्दोलन (सन् 1920–22) निम्नलिखित कारणों व घटनाओं से चलाया गया—

(1) भारतीयों ने प्रथम महायुद्ध में अंग्रेजों को पूरा सहयोग दिया था। परंतु महायुद्ध की समाप्ति पर अंग्रेजों ने भारतीय जनता का बहुत शोषण किया। (2) प्रथम महायुद्ध के दौरान भारत में प्लेग आदि महामारियाँ फूट पड़ी। परंतु अंग्रेजी सरकार ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। (3) गांधी जी ने प्रथम महायुद्ध में अंग्रेजों की सहायता करने का प्रचार इस आशा से किया था कि वे भारत को स्वराज प्रदान करेंगे। परंतु युद्ध की समाप्ति पर ब्रिटिश सरकार ने गांधी जी की आशाओं पर पानी फेर दिया। (4) 1919 ई. में ब्रिटिश सरकार ने रॉलेट एक्ट पास कर दिया। जिसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाए बंदी बनाया जा सकता था। इस काले कानून के कारण जनता में नाराजगी फैल गयी। (5) इसी बीच गाँधी जी को पंजाब में जाने से रोक दिया गया। इसके अतिरिक्त कांग्रेस के अनेक बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। (6) रॉलेट एक्ट के विरुद्ध प्रदर्शन के लिए अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक विशाल जनसभा हुई। अंग्रेजों ने अचानक एकत्रित भीड़ पर गोलियाँ चलायीं जिससे सैकड़ों लोग मारे गए। (7) सितंबर 1920 ई. में कांग्रेस ने अपना अधिवेशन कलकत्ता में बुलाया। इस अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा गया जिसे बहुमत से पास कर दिया गया।

प्रश्न 5. गाँधी जी के रचनात्मक कार्यों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर—महात्मा गाँधी सिर्फ राजनीतिक स्वंतत्रता के ही पक्षधर नहीं थे बल्कि वे आर्थिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति के भी पक्षधर थे। इस भावना को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ग्राम उद्योग संघ, तालीमी संघ और गौ-रक्षा संघ बनाए। उन्होंने समाज में शोषण को समाप्त करने तथा सामाजिक समानता स्थापित करने हेतु आर्थिक क्षेत्र के विकेन्द्रीकरण की वकालत की। खादी उनके आर्थिक कार्यक्रम का प्रतीक थी। उन्होंने सभी प्रकार के सामाजिक असमानताओं, जैसे-धर्म-समुदाय व जाति के भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। अस्पृश्यता को वे भारतीय समाज की सबसे घृणित बुराई मानते थे। गाँधी जी ने 'अछूतों' को 'हरिजन' की संज्ञा दी। गाँधी जी ने महिलाओं के सुधार हेतु भी अथक प्रयास किए।

प्रश्न 6. सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रमुख कार्यक्रमों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—सविनय अवज्ञा आन्दोलन के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम निर्धारित किए गए थे—

(1) विदेशी कपड़ों की होली जलाना। (2) सेना तथा पुलिस में भर्ती न होना। (3) नमक कानून तथा अन्य कानूनों का उल्लंघन करना। (4) शराब की दुकानों पर महिलाओं द्वारा धरना देना। (5) भू-राजस्व व लगान जैसे करों का भुगतान नहीं करना। (6) अदालतों, विधानमंडलों, सरकारी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का बहिष्कार करना।

प्रश्न 7. असहयोग आन्दोलन क्या था ? विभिन्न सामाजिक वर्गों ने आन्दोलन में किन विभिन्न तरीकों से भाग लिया ?

उत्तर—भारतीयों द्वारा अंग्रेजी सरकार का सहयोग बंद कर देना असहयोग था। लोगों ने सरकारी शिक्षा संस्थाओं, अदालतों और विधानमण्डलों का बहिष्कार किया, विदेशी वस्त्रों का भी त्याग किया, सरकार से प्राप्त उपाधियाँ और सम्मान वापस कर दिए। स्त्रियों ने भी असहयोग आन्दोलन में बढ़कर भाग लिया और अपने गहनों का खुलकर दान किया। असहयोग आन्दोलन एक जन आन्दोलन था तथा इसमें भारत की जनता ने बढ़-चढ़कर तथा अपने-अपने तरीकों से भाग लिया।

प्रश्न 8. गाँधी-इरविन समझौते की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—मार्च, 1931 को सम्पन्न हुए गाँधी-इरविन समझौते की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) कांग्रेस की ओर से गाँधी जी सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित करने हेतु सहमत हो गए। (2) सरकार सविनय अवज्ञा आन्दोलन के संबंध में लागू किए गए अध्यादेशों के वापस लेने के लिए सहमत हो गई। (3) सरकार शराब एवं अफीम की दुकानों पर शांतिपूर्ण धरने की अनुमति देने के लिए राजी हो गई। (4) सरकार आन्दोलन के संबंध में गिरफ्तार किए गए आन्दोलनकारियों को छोड़ने तथा आन्दोलन के कारण जब्त की गई सम्पत्तियाँ वापस करने के लिए सहमत हो गई। (5) सरकार समुद्र तट की कुछ दूरी के अंदर रहने वाले लोगों को निःशुल्क समुद्री नमक लेने या बनाने की अनुमति देने हेतु भी सहमत हो गई।

प्रश्न 9. सविनय अवज्ञा आन्दोलन क्यों प्रारंभ किया गया था ?

उत्तर—सविनय अवज्ञा आन्दोलन का आरंभ अथवा सिविल नाफरमानी 1930 ई. में गाँधी जी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ। यह आन्दोलन दो चरणों में चला और 1933 ई. के अंत तक चलता रहा। इसके कारणों का वर्णन

Scanned with CamScanner

निम्नलिखित है—(1) 1928 ई. में 'साइमन कमीशन' भारत आया। इस कमीशन ने भारतीयों के विरोध के बावजूद भी अपनी रिपोर्ट प्रकाशित कर दी। इससे भारतीयों में असंतोष फैल गया। (2) सरकार ने नेहरू रिपोर्ट की शर्तों को स्वीकार नहीं किया। (3) बारदोली के किसान आन्दोलन की सफलता ने गाँधी जी को सरकार के विरुद्ध आंदोलन चलाये जाने के लिए प्रेरित किया। (4) गाँधी जी ने सरकार के समक्ष कुछ शर्तें रखी, परंतु वायसराय ने इन शर्तों को स्वीकार न किया। इन परिस्थितियों में गाँधी जी ने सरकार के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ कर दिया।

प्रश्न 10. सविनय अवज्ञा आन्दोलन के महत्व को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—महत्व—सविनय अवज्ञा आन्दोलन अथवा सिविल नाफरमानी वास्तव में ही उस समय तक का सबसे बड़ा जन-संघर्ष था। इस आन्दोलन में देश के सभी भागों तथा सभी वर्गों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। लोगों ने बड़ी संख्या में जेल-यात्रा की परंतु सरकार के आगे घुटने टेकने से इंकार कर दिया। यद्यपि 1934 ई. में यह आन्दोलन समाप्त हो गया तो भी यह स्वतंत्रता सेनानियों का तब तक मार्गदर्शन करता रहा जब तक कि देश स्वतंत्र नहीं हो गया।

प्रश्न 11. साइमन कमीशन के क्या परिणाम निकले ? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—साइमन कमीशन के परिणाम निम्नलिखित हैं—(1) भारतीय यह समझ गए थे कि अंग्रेज उनके हितों के साथ खेल रहे थे। उनके मन में चोर है, तभी तो उन्होंने किसी भारतीय सदस्य को आयोग में स्थान नहीं दिया था। (2) इससे अंग्रेजों की कुटिल प्रवृत्तियाँ उभर कर सामने आ रही थीं। (3) हिन्दू और मुसलमान एकत्रित होकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े। (4) स्त्रियों ने भी पहली बार इस आन्दोलन में भाग लिया, जिससे भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में एक नया मोड़ आया। (5) शिक्षा के प्रसार के लिए अधिक-से-अधिक राष्ट्रीय विद्यालय खोलने का प्रयास किया गया। (6) इससे लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं का संचार शीघ्रता से होने लगा। (7) विदेशी माल के बहिष्कार के फलस्वरूप भारतीय उद्योगों को प्रोत्साहन मिला।

प्रश्न 12. असहयोग आन्दोलन में अंग्रेजी सरकार का प्रतिरोध करने के लिए क्या-क्या तरीके अपनाए ?

उत्तर—असहयोग आन्दोलन का एक निश्चित कार्यक्रम था। इसके अनुसार अंग्रेजी सरकार का प्रतिरोध करने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए गए—

(1) वकीलों ने अदालतों में जाने से इंकार कर दिया। (2) विद्यार्थियों ने सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों व कॉलेजों में जाना बंद कर दिया। (3) किसानों, श्रमिकों तथा अन्य वर्गों ने इसको अपने तरीके से व्याख्या की और औपनिवेशिक शासन के प्रति 'असहयोग' के लिए उन्होंने प्राप्त निर्देशों का पालन करने की अपेक्षा अपने हितों से मेल खाते तरीकों का प्रयोग करते हुए कार्रवाई की। (4) अनेक नगरों व कस्बों में श्रमिक-वर्ग हड़ताल पर चले गये। सरकारी आँकड़ों के अनुसार 1921 ई. में 396 हड़तालें हुई जिसमें 6 लाख श्रमिक शामिल हुए और इससे 70 लाख कार्यदिवसों की क्षति हुई। (5) गाँवों में भी आंदोलन के प्रति लोगों में जोश था, उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जन-जातियों ने वन्य-कानूनों की अवहेलना प्रारंभ कर दी। (6) अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाए। कुमाऊँ के किसानों ने औपनिवेशिक अफसरों का सामान ढोने (उठाने) से मना कर दिया।

प्रश्न 13. प्रथम विश्व युद्ध के दौरान क्रांतिकारी आन्दोलन का स्वरूप क्या रहा ?

उत्तर—तत्काल और पूर्ण स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत क्रांतिकारियों के लिए प्रथम विश्व युद्ध का होना स्वर्णिम अवसर प्रतीत हुआ। सन् 1915-19 में बंगाल में राजनीतिक डकैतियाँ व हत्याएँ चरम सीमा पर पहुँच गई। अधिकांश क्रांतिकारी गुट, बाघा जतिन के नाम से प्रसिद्ध जतीन्द्र नाथ मुखर्जी के नेतृत्व में एकजुट हो गए। 9 सितम्बर, 1915 को बालासोर (उड़ीसा) में पुलिस द्वारा घेर लिए जाने पर भी जतिन ने अंत समय तक वीरतापूर्वक मुकाबला किया।

इस काल के दूसरे महान क्रांतिकारी रास बिहारी बोस थे जो बंगाल व पंजाब के क्रांतिकारियों के बीच की एक कड़ी थे। कलकत्ता से दिल्ली राजधानी परिवर्तन के अवसर पर जब वायसराय लॉर्ड हार्डिंग दिल्ली में प्रवेश कर रहे थे तब उनके जुलूस पर बम फेंका गया। ब्रिटिश सेना में भारतीय सैनिकों के सशस्त्र विद्रोह की योजना भी इन्हीं की थी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने 'भारतीय स्वतंत्रता लीग' और 'आजाद हिन्द फौज' (आई. एन. ए.) का गठन हुआ।

प्रश्न 14. महात्मा गाँधी ने खुद को आम लोगों जैसा दिखाने के लिए क्या किया ? (NCERT)

उत्तर—महात्मा गाँधी सादा जीवन और उच्च आदर्शों के स्वामी थे। उन्होंने खुद को आम जनता जैसा दिखाने के लिए अग्रलिखित कार्य किए—

Scanned with CamScanner

(1) वह आम लोगों के बीच घुल-मिलकर रहते थे। उनके मन में उनके कष्टों के प्रति हमदर्दी थी। इसलिए वे उनके प्रति सहानुभूति जताते थे। (2) वे साधारण लोगों जैसे वस्त्र पहनते थे। धोती उनकी विशेष पहचान थी। इसके विपरीत अन्य राष्ट्रवादी नेता प्रायः पश्चिमी शैली के वस्त्र पहनते थे। (3) वे प्रतिदिन कुछ समय के लिए चरखा चलाते थे। इस प्रकार उसने आम जनता के श्रम को गौरव प्रदान किया। (4) वे आम लोगों की ही भाषा बोलते थे।

प्रश्न 15. किसान महात्मा गाँधी को किस तरह देखते थे ? **(NCERT)**

उत्तर—किसान महात्मा गाँधी को अपना हितैषी समझते थे, उनका बहुत सम्मान करते थे व उन्हें चमत्कारिक व्यक्तित्व का स्वामी मानते थे। वे गाँधी जी को 'गाँधी बाबा', 'गाँधी महाराज' या 'महात्मा' आदि नामों से पुकारते थे। गाँधी जी वास्तव में भारतीय किसान के उद्धारक के समान थे जो उनको ऊँचे करों व अधिकारियों के दमन से रक्षा कर सकते थे। उनका मानना था कि गाँधीजी उनके जीवन में सम्मान और स्वायत्तता वापस लेने वाले व्यक्ति हैं। गरीब किसानों के बीच गाँधी जी की अपील को उनकी साधारण जीवन-शैली तथा उनके द्वारा धोती तथा चरखे के प्रयोग से बहुत बल मिला। जाति से महात्मा गाँधी एक व्यापारी थे जबकि पेशे से वे एक वकील थे। परंतु अपनी सरल जीवन-शैली और अपने हाथों से काम करने के प्रति लगन के कारण वे गरीब किसानों से बहुत अधिक सहानुभूति रखते थे। दूसरी ओर गरीब किसान उनकी 'महात्मा' के समान पूजा करते थे।

प्रश्न 16. नमक कानून स्वतंत्रता संघर्ष का महत्वपूर्ण मुद्दा क्यों बन गया था ? **(NCERT)**

उत्तर—नमक एक बहुमूल्य राष्ट्रीय संपदा थी जिस पर औपनिवेशिक सरकार ने अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया था। गाँधी जी के अनुसार यह एकाधिकार चौतरफा अभिशाप था। प्रत्येक भारतीय अपने घर में नमक का प्रयोग करते थे, परन्तु उन्हें घरेलू उपयोग के लिए नमक बनाने से रोका गया और उन्हें दुकानों से ऊँचे दाम पर नमक खरीदने हेतु बाध्य किया गया। अतः नमक कानून के खिलाफ जनता में बहुत असंतोष था। गाँधी जी भी नमक कानून को घृणित कानून मानते थे। इस प्रकार नमक कानून स्वतंत्रता संघर्ष का एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(1) नमक कानून ब्रिटिश भारत के सर्वाधिक घृणित कानूनों में से एक था। इसके अनुसार नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य का एकाधिकार स्थापित था। (2) नमक पर राज्य का एकाधिकार अत्यधिक अलोकप्रिय तथा असंतोषपूर्ण था। जनसामान्य में इस कानून के प्रति असंतोष व्याप्त था। (3) नमक उत्पादन पर सरकार के एकाधिकार ने लोगों को एक महत्वपूर्ण किन्तु सरलतापूर्वक उपलब्ध ग्रामीण-उद्योग से वंचित कर दिया था।

प्रश्न 17. राष्ट्रीय आंदोलन के अध्ययन के लिए अखबार महत्वपूर्ण स्रोत क्यों हैं ? **(NCERT)**

उत्तर—राष्ट्रीय आन्दोलन के अध्ययन के स्रोतों में अखबार का महत्वपूर्ण स्थान है। इनसे हमें राष्ट्रीय आन्दोलन के अध्ययन में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है। राष्ट्रीय आन्दोलन के अध्ययन हेतु अखबार सबसे महत्वपूर्ण स्रोत निम्न कारणों से है—

(1) समाचार पत्रों अथवा अखबारों से राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति ब्रिटिश सरकार के दृष्टिकोण का पता चलता है। (2) अंग्रेजी एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं में छपने वाले समकालीन समाचार-पत्रों में राष्ट्रीय आन्दोलन से संबंधित सभी घटनाओं का विवरण मिलता है। (3) समाचार पत्रों से राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। (4) अखबारों से यह ज्ञात होता है कि जनसामान्य की राष्ट्रीय आन्दोलन तथा गाँधी जी के विषय में क्या धारणा थी। (5) अखबारों द्वारा महात्मा गाँधी की गतिविधियों पर नजर रखा जाता था क्योंकि गाँधी जी से संबंधित समाचारों को विस्तृत रूप से प्रकाशित किया जाता था। अतः समाचार पत्रों से विशेष रूप से महात्मा गाँधी तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के विषय में महत्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं।

प्रश्न 18. चरखे को राष्ट्रवाद का प्रतीक क्यों चुना गया ? **(NCERT)**

उत्तर—चरखे को राष्ट्रवाद का प्रतीक इसलिए चुना गया क्योंकि यह मानव श्रम व उसके महत्व का प्रतीक था। गाँधी जी का मानना था कि आधुनिक युग में मशीनों ने व्यक्तियों को गुलाम बनाकर श्रमिकों के हाथों से काम और रोजगार छीन लिया। इससे आम व्यक्ति निष्क्रिय बनते जा रहे हैं। उन्होंने मशीनों की आलोचना की एवं चरखे को ऐसे मानव समाज के प्रतीक के रूप में देखा जिसमें मशीनों और प्रौद्योगिकी को बहुत महत्व नहीं दिया। गाँधी जी के अनुसार भारत एक गरीब देश है। यह चरखा गरीबों को पूरक आय प्रदान करेगा जिससे वे स्वावलंबी बनेंगे, उन्हें बेरोजगारी एवं गरीबी से मुक्ति दिलाने में चरखा उन्हें स्वावलंबी बनाकर सहायता करेगा। गाँधी जी यह भी मानते थे कि मशीनों से श्रम बचाकर लोगों को मौत के मुँह में धकेलने या उन्हें बेरोजगार करके सड़क पर फेंकने के समान है। चरखा धन के केन्द्रीयकरण को रोकने में भी मददगार है।

Scanned with CamScanner